श्री राजेन्द्रप्रवचन-कार्यालय-सिरीज़ ३४



श्रीअमृत—स्तवनावली ।

प्रातःस्मरणीय—जगत्पूज्य—प्रभु श्रीमद्—विजयराजेन्द्र—
सूरीश्वरजी महाराज के शिष्य—

गायनसुधारस—मुनिश्रीअमृतविजयजी—रचित ।



प्रकाशक—

श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय—श्वेताम्बरजैन श्री संघ—मारवाड़



श्री वीरनिर्वाण सं २४६६ } द्वितीयावृत्ति { विक्रम सं १९९६

श्रीराजेन्द्रसूरि सं ३३ } १००० { सन् १९३९ ईस्वी

(मूल्य—पठन—पाठन)

अभिनन्दनपत्र-



गायनसुधारस-मुनिराजश्रीअमृतविजयजी महाराज तथा मुनि श्रीचतुरविजयजी को हार्दिक धन्यवाद। आपने प्रस्तुत श्रीअमृतस्तवनावली में अति मधुर रसिक गायन, औपदेशिकपद, सज्झाय, स्तवन, चैत्यवन्दन, स्तुति एवं गुंहलियें स्वयं रचकर और संग्रहकर गायनाभिलाषुक जनता पर उपकार कर उनके हृदय-कमल को प्रफुल्लित किया है। परमात्मा तथा गुरुदेव के गुणों को गाते हुए इस पुस्तक से हम लोगों की हार्दिक भावना जागृत होगी। इसके लिये आपको हम शतशः धन्यवाद देते हैं। हमेशा आप ऐसे ही साहित्य विकास में तल्लीन रह कर अपने जीवन को सफल बनाते रहें, यही परमात्मा से प्रार्थना है, किमधिकम्।

आपका शुभचिन्तक—

गुरां सिरेमल-सायलावाला

अमृतस्तवनावली के कर्त्ता-

गायनसुधारस-मुनिश्री अमृतविजयजी महाराज ।



जन्म स० १९३७ मागसर सुदि सराणा (मारवाड़)

दीक्षा स० १९५९ आषाढ़ सुदि ५ सियाणा (मारवाड़)

આનંદ પ્રેસ-ભાવનગર

प्रस्तावना।

इस कराल-कलिकाल में देव-गुरु की भक्ति कल्पवृक्ष के समान फल प्रदाता है। जो लोग घड़ी या दो घड़ी भी तन मन से देव-गुरु के कीर्त्तन करने में दत्त चित्त रहते हैं, वे इस अनादि-निधन संसार सागर से जल्दी पार होकर अतुल सुख-समृद्धि के भोक्ता बनते हैं। शास्त्रकार महर्षियो ने आत्मसुधार के लिये इन्द्रिय-निग्रहादि अनेक योग बतलाये हैं, परन्तु उनमें गुणोत्कीर्तन रूप भक्ति-योग सर्वोत्कृष्ट है। इससे मानसिक वृत्तियाँ जितनी जल्दी रुकती है उतनी दूसरे किसी योग या उपाय से नहीं रुक सकती। अतएव संसार-तितीर्षु महानुभावो को लभ्य-समय में से कुछ समय निकाल कर देव-गुरु के गुणोत्कीर्तन का यथाशक्ति आश्रय लेना चाहिये, जो मोक्ष-प्राप्ति का मुख्य साधन है।

प्रस्तुत 'अमृत-स्तवनावली' पुस्तक का संकलन और प्रकाशन उसी गुणोत्कीर्तन के पोषणार्थ किया गया है। इसमें प्रथम संग्रह-कर्त्ता का कविता (सवैया) मे जीवन-परिचय, फिर क्रमश चैत्यवन्दन संग्रह, स्तुति-संग्रह, चोवीस जिनस्तुति,

सवैया, गायनसुधारस-मुनिश्रीअमृतविजयजी-रचित स्तवन संग्रह, सज्झाय-संग्रह, और गुंहलि-संग्रह संयोजित किये गये हैं, जो गायनाभिलाषुक, देवगुरुभक्तिप्रेमपरायण लोगों के लिये बड़े उपयोगी और सुशिक्षणीय है।

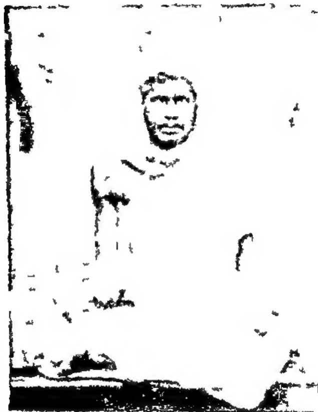
पाठको ! गया समय फिर आता नहीं, काल कराल की गति विचित्र है। कालचक्र हमेशा शिर पे घूम रहा है, न मालूम किस वक्त झपट लेगा, विषय लोलुपता संसार मे परिभ्रमण करने वाली है। ऐसी हालत मे " **नर देही पाई है तो करले तूं धर्म को, जिनराज मिला है तो तज दे तूं शर्म को** " इस सिद्धान्त को लक्ष्य मे रख कर देवगुरु के गुणोत्कीर्त्तन में कटिबद्ध रहो, जिससे मनुष्य जन्म की सफलता होकर शीघ्र बेडा पार लगे। अस्तु, अगर प्रस्तुत पुस्तक को आप लोग आद्योपान्त पढ़ कर भक्ति-लाभ प्राप्त करेंगे, तो संग्रहकर्त्ता का परिश्रम सफल होगा।

इस पुस्तक का आद्योपान्त मेटर और इसके प्रूफों का सुधार देने की कृपा पूज्य-जैनाचार्य-गुरुदेव श्रीमद् भट्टारक श्री श्री १००८ श्रीविजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने की है। अतएव अन्त मे उनका आभार मान कर विश्राम लिया जाता है।

विक्रम-संवत् १९९६ }
कार्त्तिक सुदि ५ }

मुनि श्री चतुरविजय।
मु० आकोली (मारवाड़)

अपूज मनि शिष्य-मूर्ति श्री [illegible]।



जन्म सं० [illegible], दीक्षा सं० [illegible], स्वर्गवास सं० [illegible]

पांगला पूगी आहोर

मुनिश्रीअमृतविजयजी का जीवन-परिचय।



दोहा—

सरसति पय प्रणमी करी, धरु निज गुरु का ध्यान।
गौतम गणधर भक्ति से, पाऊ निर्मल ज्ञान ॥ १ ॥

सवैया—

यादव वंश उजागर सागर, ज्यां घर नेक हुए अवतारी।
तीर्थपति गिरनार विभूषण, संयम ध्यान धर्यो सुखकारी ॥
केवलनान लई शुध पन्थपे, गये निर्वाण गिरि गिरनारी।
ताहि कुलोत्तम उत्तर पक्ष मे, यदुवंश को भूप हितकारी ॥२॥
जेशलमेर यदुभाटी राज्य मे, आप के पूर्वज थे अमरानी।
कारण भेद से छोड़ धरा वही, मरूधरा राज्य मे मनमानी ॥
आय वसे यदि आपके पूर्वज, वलवन्ता वहादुर निशानी।
काज करे सहु साज शूरा पण, वार सदा उनही की वखानी॥३॥

गाम सराणे शोभता, चावा भूप सरूप ।
ओठे रहे अचलींगजी, चाले चोखे चूंप ॥ ४ ॥

हिम्मत विन कीम्मत नहीं, हिम्मत मरदां हाथ ।
सदा रहे अचलींगजी, भूप सरूप संगात ॥५॥

योवनवय जाणी करी, अचलसिंह का आप ।
कर सनमान माता करे, उत्सव गीत आलाप ॥६॥

व्याह कियो अचलेस उदारिक, कामिनी विसनादे कुलवन्ति ।
शील सौभाग्य विशाल समुज्ज्वल, सुन्दर रूप अति गुणवन्ति ।
भोगत सुख संसार उनि संग, निशदिन प्रेम प्रीति सुशान्ति ।
पुत्र हुए दोय पैदा अत्युत्तम, एक सुता सुविनीत सोहन्ति ॥७॥

ऊपर एक लियो अवतार ज्युं, भागवली आय पुण्य प्रतापी ।
मास नवे जन्म्यो सुत जा दिन, उच्छव रंगसुं अंगण व्यापी ॥
अब्द गुणीसय सेंतीश मृगशिर, उज्ज्वल पंचमी नाम ज थापी ।
अंगण आनन्द खेलत देखत, आप हुवे अदरींग प्रतापी ॥८॥

वालपणे करी वाललीला अति, खेलत मातपिता उछरंगे ।
इन्दु वधे द्वितीया जिम उज्ज्वल, रूपकला रतिवन्त सुचंगे ॥
प्रेम रक्खे नित विद्या के पाठ में, ध्यान अपूरव ताहिमें लंगे ।
आप हुवे वर्ष ग्यारह में तिसे, अभंग वैराग लग्यो है अंगे ॥९॥

ध्यान रखे सत्संगत में नित, भक्ति करे गुणवन्त सुसारी ।
वन्दत साधु सुयोग्य मुनिवर, सेव करे जिनकी चित धारी ॥

रंग लग्यो घट भीतर म शुध, देव निरजन ध्यान अपारी ।
योग लहे तजी भोग जिके नर, अदरींग उन्हीं की बलिहारी॥१०

गृह कारज करता थका, दिलमें दया अपार ।
करसण आरम्भ काम मे, चले न चित्त लगार ॥ ११ ॥

सत्सगत का योगसे, पावे चेतन ज्ञान ।
ज्ञानथकी सनि मपजे, अन्तर आतम ध्यान ॥ १२ ॥

बीस वरस बीत्या पछी, लाग्यो रग रसाल ।
तन धन माया कारमी, झूठो जगत जजाल ॥ १३ ॥

भाव अनित्य ससारतणो भय, कपित परम वैराग ही अगे ।
मान खरो भवसिंधु मे डूबत, छोड ससार चले पग नगे ॥
मात पिता सुत दारा मिलि सब, स्वार्थ सिद्धिमें बहुत सुचगे ।
साथ चले पाप पुन्य दोय मिल, और कमाई कछु नहीं सगे ॥१४॥

आय खडी सहु बाथ भरे काई, साथ चले नहीं कोडी रु पाई।
खेल जिम्यो नटनागर सो काई, तारणहार प्रभु जग माई ॥
नाच नच्यो लख चोरासी योनि म, मानव जन्म लह्यो सुखदाई ।
चेतन नीन्द प्रमाद सभी तज, ध्यान जिनेश्वर का नित ध्याई॥१५॥

भव अरटी ममता थका, पायो नहीं सुख चैन ।
भोगे अशाता वेदनी, ज्ञानी वदे यु वेन ॥ १६ ॥

मात पिता कहे व्याह की, करवा इच्छा धार ।
नहीं इच्छा अदरींग की, मुख से कह नकार ॥ १७ ॥

मात पिता परिवार को, घर धन्धा को तोड़ ।
देशाटन करवा भणी, अदरींग चाल्या छोड़ ॥ १८ ॥

कारित देश विदेश विशेष ही, मरुधर गुर्जर मालव थाए ।
साल गुणी उगुणसठ अन्दर, शहेर सियाणा में अदरींग आए ॥

राजत सूरिराजेन्द्र आचारज, देखत दरश हिए हुलसाए ।
वंन्दत प्रेम अति अंगसें यदि, सुणे गुरू बेन सदा सुख पाए ॥१९॥

ज्ञान कहें गुरुबाण लग्या तन, पौरुष अंग वैराग को छाई ।
मात पिता अरु बान्धव साथ ही, काया झूंठी माया मोह बढ़ाई ॥
आथज साथ न कोई चले कहुँ, हाट हवेली जाली झरोखाई ।
तारक नाम विचार भवि कछु, मुक्ति की राह चले सुखदाई ॥२०॥

सुणी गुरूमुख उपदेशतें, भीनो आतम रंग ।
जाणी अनित्य संसारने, लेवा संयम चंग ॥ २१ ॥

संघ सियाणा आपका, जाणी उत्सुक भाव ।
भल दीक्षा महोत्सव करे, आनन्द भाव उछाव ॥ २२ ॥

कोड़ महोच्छव थाट करे घण, वाजीत्र माद धौंकार बजाई ।
कोयल कण्ठ मनोहर तो मिल, खूब सुहागण मंगल गाई ॥
सोवन भूषण अंग सुहावत, सजे शृंगार अनुपम छाई ।
साथ चले वरघोड़े सहु संघ, नृत्य संगीत वो हर्ष बढ़ाई ॥ २३ ॥

बोतेर वर्षे थानेरा मे वत्सर, अमृतमुनीसर आप पधारे ।
साथ चतुरविजय सुशिष्य ही, संघ सहु करे भक्ति वधारे ॥
साल छियत्तर पुर भेंसवाडे, उच्छव ठाठ सुरग अपारे ।
चातुरमास किये अति चातुर, श्रीमालपुरी अठोत्तर धारे ॥३४॥

आइ उमेद चले फिर मालव, रह अगुण्याशी मे राजगढे ॥
ध्यान लगे अतही तप जप रु, पूज प्रभावन मे रंग चढे ॥
अब्द असी उगणी कर अमृत, टाँडा नयर चउमास चढे ।
श्रावक श्राविका भक्तितणे वस, ध्यानाग्र अत्युत्तम ज्ञान रढे॥३५॥

थिरता करी चौमास की, एक्याशी रिंगणोद ।
भावे श्रावक श्राविका, अगे अधिक प्रमोद ॥ ३६ ॥
तप जप खूब प्रभावना, उच्छव थाय अनेक ।
वत्सल पूजन भक्तिम, रखी भाव की टेक ॥ ३७॥

कुडलिया—

साल ब्याशी चोमास मे, वरत्या आनन्द पूर ।
सुख पाम्या सारे सज्जन, दुख सहु टलिया दूर ॥
दुख टलिया सहु दूर, पूर सुख नूर प्रगटे ।
मुनि मुख सुणी उपदेश, ध्वाक्ष मिथ्यात्व विघटे ॥

१–स १९७३ आहोर, स १९७४ सियाणा, स १९७५ भीनमाल और स १९९० सिद्धाचल—ये चार चोमासे व्याख्यान-वाचस्पति—आचार्य श्रीमद्यतीन्द्रसूरिजी महाराज के साथ किये।

कारित कार्य अनेक सुधार के, दई उपदेश भवि सुखकारे।
आनन्द सौख्य विशाल मृगेन्द्र रु,खुसाल विजय दो नाम उचारे॥
दीक्ष दई निज शिष्य करे फिर, शासन सोभ में सुरंग वधारे ।
और करे शिष्य आप के पास में, चतुरविजय मुनि संग प्यारे॥२९

पास वसे रामसीण के चांदणो, ज्ञात राठौर वरदा घर आए।
मात कहे राजीवाई के कुंखसे, जन्म लिया वालुलाल कहाए ॥
अब्द गुणौत्तर वसंत पंचमि, वर्धित रूप कला मन चाए।
मालव कूकशी एंशी के संवत, अमृतमुनिने दीक्ष दिलाए ॥३०॥

पाठित प्रेम चतुर विचक्षण, मुनि चतुरविजय वहु चाए।
दायक भूपेन्द्रसूरि वडि दिक्ख, उद्धव ठाठ सुरंग मचाए ॥
अमृत आण अखण्ड धरे पुनः, सेव सदा दिल प्रेम वढ़ाए।
कारित भूपेन्द्रसूरि निदेश ले, चातुर चातुर चौमासा जाए॥३१॥

संवत गुणीशय छासठ सालमे, मालव देश में आप विराजे।
चातुरमास शहर टांडा विच, संघ साधर्मि की भक्ति सुछाजे।
आवत संघ वन्दे मुनिअमृत, पूजन खूब प्रभावना काजे।
मंगल गावत गुंहली श्राविका, धर्म उद्योत किया महाराजे ॥३२

अब्द गुणीशय एकोत्तर में ही, मरुधर सांडेराव चौमासे।
उत्सव ठाठ अनुपम कारित, तप जप धर्मोद्यत है जासो॥
पूज भणावत वंटे प्रभावना, पोसह पडिकम्मे व्रत खासो।
वत्सल आदिक भक्ति मने शुद्ध, गोष्टि करी गुणी ज्ञान विलाशो॥३३

धरते आनन्द पूर, उर विलसित सुखवासा ।
राजगढ महाराज, चौराशी किया चौमासा ॥ ४४ ॥

चोमासा उतरे थके, मुनिवर कीध विहार ।
युक्ते तीरथ यातरा, करते मनि उपकार ॥ ४५ ॥

मगशी पारस नायका, नयर उजेणी धाम ।
यही गाँम वन्दे वली, पारस तीरथ ठाम ॥ ४६ ॥

अनुक्रमें आव्या विचरता, वडी कडोद मुकाम ।
संघ अरज सुणी मुनि करे, चारु मास मुकाम ॥ ४७ ॥

धर्म मण्डल के धोरी, कुमति की संग छोरी,
सुमता से प्रीति जोरी, ध्याये अविनासी है ।
संयम सलील धरें, तप बार भेद करें,
कडोद निवासी वरे, साल पिचियासी है ॥
आराधित जिनदेव, करे उपदेश मेव,
भक्तिमान गुरुदेव, सेवम उलासी है ।
संघ चित चाह कर, आनन्द उच्छव भर,
मिथ्यात्व पुंज को हर, जिनमत प्यासी है ॥ ४८ ॥

काती पूनम के पछी, वलि विचरे मुनि जेह ।
दर्शपिपासु आतमा, वन्दे भवियण तेह ॥ ४९ ॥

फरशित फरमना योग से, देश नयर पुर गाम ।
मोहनखेडे यातरा, गुरु देव का धाम ॥ ५० ॥

अलिराजपुर शहर, पाम्या सहु मंगल माल।
अमृतमुनि आनन्द–बहुतर चौमास की नाल॥ ३८ ॥

पृथ्वीतल पावन करे, विचरंता मुनिराज।
बाग संघकी विनति, सुणी अमृत महाराज ॥ ३९ ॥

मालव बागमें त्रियाशी संवत, रंग चोमासा का खूब लगाए।
मंगल मौक्तिक वाजित्र नादसुं, हाथ सुहागण चुक्ति वधाए॥
वीर वृष्टि करी मृष्टि भविजन, उत्कृष्ट मार्ग बहुत ओपाए।
शासन जैन प्रभावतणो यश, कीर्ति दिशो दिश आनन्द छाए॥४०

विचरे मालव में मुनि, उपदेशे भलिभॉत।
धर्मकृत्य दिपावता, चतुरविजय संगात ॥ ४१ ॥

करजोडी विनती करे, संघ राजगढ़ खास।
आप अठे पधारजो, अमृतमुनि चौमास ॥ ४२ ॥

संघ अरज चित धारने, कर करुणा मुनिराज।
क्षेत्र फरसना योग से, पधार्यां महाराज ॥ ४३ ॥

कुंडलिया—

चौमासा चोराशिये, किया अमृतमुनिराज।
सुकृत तप जप ओच्छवे, सुधरे मंगल काज॥
सुधरे मंगल काज, सुणि उपदेश सुरंगे ।
आराधे जिन धर्म, भविक जन भाव उमंगे ॥

शहर कूकशी स्थान, बडा गुलजार है ।
मन्दिर मेरु समान, देव दरबार है ॥
सोहे त्रिभुवन देव, सेव सुखकार है ।
पौषध शाल विशाल, चौहटा बजार है ॥ ५८ ॥

सघवदे विनती मुनि अमृत, आप हमारी ही अर्ज स्वीकारे ।
साल अठ्यासी का चातुरमास मे, वासर आप यहाँ ही गुजारे ॥
प्यास लगी श्रुतबोध मनिजन, उपदेशामृत पान कराए ।
पूजन ठाठ प्रभावना ओच्छव,सघ अत्युत्तम हर्ष भराए ॥५९॥

बहुत भक्ति प्रभावसु, सुणी गुरु मुख उपदेश ।
छायो आनद मगल, अमृत सुख सुविशेष ॥ ६० ॥

पूरण चातुरमास से, चाल्या मुनि सुखकार ।
अनिक जीव प्रतिबोधता, अवनीतल अणगार ॥ ६१ ॥

मरत नव्यासी गुणी, सघकी विनति सुणी,
जिनदेव थुणी, आनन्द अपारा है ।
अमृतविजयमुनि, चतुरविजय गुनी,
चातुरमास की धुनी उपदेश धारा है ॥
वीर वाणी सुखकारी, भक्ति मन मे ही भारी,
थानिका मगल गारी, सङ्घ नित प्यारा है ॥
मंगल उदयकारी, वन्दे नित नर नारी,
महाव्रत धारी चारी, वन्द सुखकारा है ॥ ६२ ॥

श्रावक श्राविका साधमें, वन्दे श्री गुरुदेव ।
भावे उग्रज भावना, द्रव्य भाव की सेव ॥ ५१ ॥

वन्दत सूरिराजेन्द्र शुभोदय, भाग्य बड़े गुरुराज हमारे ।
पाप कुकर्म कटे सहु भर्म जो, प्रात समे जन नाम उच्चारे ॥
आधि रु व्याधि उपाधि मिटे, सुख संपत देवो नाम सुधारे ।
ताहि गुरुदेव ध्याउं नितमेव, चाहुं चित सेव वारम्वारे ॥ ५२ ॥

अवनीतल विचरत मुनी, भविजनके हितकार ।
चाले शुद्ध आचार में, वन्दे नित नर नार ॥ ५३ ॥

पाटनगर पधारिया, अमृतविजय महाराज ।
चतुरमुनि चौमास में, सुधरे सुकृत काज ॥ ५४ ॥

श्रावक श्राविका भावसे, अनुभव प्रेम रसाल ।
उगणीसे छयासी समे, वरत्या मंगलमाल ॥ ५५ ॥

(चन्द्रा)

सत्याशी की साल, चौमासो आवियां ।
टाँडा नयर मझार, मुनि मन भावियां ॥
सुणी भवि सद्बोध, सहु मन चावने ।
तपजप करीने ध्यान, हर्ष मन लावने ॥ ५६ ॥

चौमासा बीता सुखें, विचरे साधु विहार ।
अन्य स्थल मास आठ में, उपदेशे नर नार ॥५७॥

मात मरुदेवा नन्दन भेटत, पूरव सचित पाप हरे है ।
आनन्द सुखाम रह चिहु मास,अग उल्लास विलास धरे है ॥६९॥
मालव मरुधर गुर्जर देशे, तीर्थ किये कई यात्र जु भारी ।
भेट शत्रुञ्जय गिरी गिरनार, आबु पच तीरथी कर प्यारी ॥
ओगणिससा तीर्थपति भोयणी, तारगे अजित आप जुहारी ।
पारसनाथ सरेसरा वन्दित, नाथ धुलेव जाऊ बलिहारी ॥७०॥

पारस आहोर कोरटा आदि ज्यु, दुर्ग जालधर भेट जिनालय ।
और वन्दे पच तीरथी जाय के, वरकाणा नाडोल नाडुलाय ॥
राणकपुर ऋषभेश निहाल, घाणेराव महावीर मुछालय ।
सेमली पारसनाथ नमि वलि, भीलड़ी पारस देखी देवालय ॥७१॥

भल भेट्या पुर माडवे, महावीर महाराज ।
थिरपुर भोरोल भक्तिसे, भव्य पुर सुरव साज ॥ ७२ ॥

अमीझरा अणहिलपुर, पाटण प्रभुको देरा ।
अमृतमुनि आनन्द से, तीरथ सत्या लेरा ॥ ७३ ॥

सूरि भूपेन्द्र सगात मे, आया पुर आहोर ।
आकोली सघ आयने, अरज कर करजोर ॥ ७४ ॥

सूरि भूपेन्द्र निदेश से, अमृतविनयने एम ।
चोमासे आवो तुमे, नगर आकोली नेम ॥ ७५ ॥

चौमासा उतरे थके, विचरे मालव देश ।
देता पिपासु भविकने, मधुर धुनी उपदेश ॥ ६३ ॥

आठ मास फिरता रहे, जिनवर आज्ञाधार ।
चार मास थिरता करे, एह छे मुनि आचार ॥ ६४ ॥

गाम ठाम पुर विचरता, संघ करी अरदाश ।
कुकशी नगरे आविया, साधु चातुरमास ॥ ६५ ॥

वही गुरु आण जाण, सर्व सौख्य प्राणी माण,
आतम उज्ज्वल खाण, ध्यायना में ध्यावता ।
श्रावक सुगुणवान, त्रयतत्त्व धारी मान,
निर्ग्रन्थ पन्थ वखाण भावना सुभावता ॥
ज्ञान ध्यान अंगे आन, संयम में पेलवान,
पाले शुद्धि जिन आण, गुणी गुण गावता ।
पूजा भक्ति करे नित. पाले शुद्ध गुरु प्रीत,
भविजीव जाणी हित, शुद्ध उपदेशता ॥ ६६ ॥

ओगणीसे नेउआतणी, वरखा वीती जाण ।
मृगशिर वदि पडवादिने, विचरे मुनि शुभ ठाण ॥६७॥

मालव देशसें वीचर्या, आया अमदावाद ।
देव युगादी वन्दवा, मन उपनो आल्हाद ॥ ६८ ॥

तीर्थाधिराज शत्रुञ्जयतीरथ, वन्दन काज उमंग भरे हैं ।
आप चले मुनि अमृत संगमें, चतुरविजय चौमाश करे हैं ।

प्रभुश्रीमद्-विजयराजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

श्रीअमृत--स्तवनावली.

चैत्यवन्दन-सग्रह ।

(१) श्रीआदिनाथ-चैत्यवन्दन-

प्रथम जिनेश्वर हुं नमुं, युगलिक धर्म निवार ।
नाभिराय मरुदेवीना, नन्दन जे जयकार ॥ १ ॥

आयु लख चोराशीनुं, पञ्चशत धनुषी काय ।
गणो युगल सुहामणी, उपके ईग फदाय ॥ २ ॥

वृषभ लञ्छन जिनवरो, धनुष पंच शत देह ।
विनीता नगरी के विषे, अमृत कहे गुणगेह ॥ ३ ॥

(२)

देव दयानिधि देखिया, आदीश्वर अवतार ।
मरुदेवी माताव्रणो, नन्दन जे सुखकार ॥ १ ॥

मुनिराज अमृतविजय, लही सूरि आण तैयारी करी ।
वन्दित आगरा पास जिनेश्वर, सुविधि जिणंद सिवाणे फरी ॥
आवत मुहूरत आकोली में, मुनिराज महा सुख सात भरी ।
आगमन सुणी सहु संघ वधे, प्रेम महोदय हरष धरी ॥ ७६ ॥
संघ सहु मिल भक्ति करे बहु, अमृत आवत रंग वधाई ।
ढोल मृदंग कंशाल बजे घण, साथ श्राविकाएं मंगल गाई ॥
थाल सुपुष्पकी माल लई संग, स्वस्तिक मुक्तिक पूर वधाई ।
भाग्य खुले इस नग्र आकोली के, जैन जैनेतर वन्दत आई ॥७७॥
प्रथम प्रभु आदीश्वर वन्दत, मात मरुदेवीनन्द निहाली ।
जाय फिर उपदेश दिया मुनि, मंगल काज करे मन भाली ॥
पूजन उत्सव ठाठ प्रभावना, बंटी संघ सभी जन आली ।
चातुरमास लिया सुखवास, उद्धार करे सुख संजम पाली ॥७८॥

रचे पुस्तक स्तवनावली, 'अमृत' नाम धराय ।
भविजन भक्ति राग में, गुण जिनवर के गाय ॥ ७९ ॥

मुक्ति पन्थ की राह चले मुनि, चाह उत्साह लगी मुनि के मनमें ।
धारत है शुभ ध्यान निरंतर, वधे सनमान रखे तनमें ॥
मेरु सम धीर वाह शूरवीर, हुवे जैसे हीर बड़ पनमें ।
सुन्दर वाच कथे सहु साच, होय हर्ष उल्लास गुणी जनमें ॥८०॥

शशि पन्नग पन्नग त्रय, दीपावली भृगुवार ।
सुन्दर वासित सायला, कथ्या अमृत गुण सार ॥८१॥

(४) श्रीअजितनाथजिन-चैत्यवन्दने-

अजित जिन अरि जीतिया, लञ्छन गजवर जव ।
विजया माता जनमिया, पितु जितशत्रु अभग ॥ १ ॥

साढा चारसो धनुष तनु, सुवरण सरखी काय ।
आयु लाख बहुतर तनु, त्रिभुवनपति केशाय ॥ २ ॥

अणसण कर मुक्ते गया, समेतशिखर पर खास ।
अमृतमुनि प्रभुको भजे, दीनो मुक्ति निवास ॥ ३ ॥

(५)

तरणा तारक तूही, दूजा जिन जयकार ।
अविचल ऋद्धि आपता, जिनशासन शिणगार ॥ १ ॥

तुझ मुद्रा दर्शित लहे, सवि सुख भक्त उदार ।
जन्म जरा छेदन करी, पामे ते भव पार ॥ २ ॥

अमृत आनन्द अतिघणे, भेट्या श्री जिनभाण ।
सदा सूरिराजेन्द्रजी, दीनो पद निर्वाण ॥ ३ ॥

(६) श्रीसम्भवनाथजिन-चैत्यवन्दनम्-

निर्मल केवल ज्ञानथी, ममता मे लयलीन ।
आगम भाखे देवता, चौद लोक सुख चीन ॥ १ ॥

युगला धर्म निवारके, शुद्ध दई उपदेश ।
प्रथम धर्म करता विभू, स्वयंभू सिद्ध महेश ॥ २ ॥

तूं ब्रह्मा विष्णु तूंही, तूंही जग तारणहार ।
तूंही कर्ता त्रैलोक्य में, वन्दू बारम्बार ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीँ पद अक्षर धरो, ऊपर माया बीज ।
ऋषभनाम ध्याता थकां, मिले अजपा बीज ॥ ४ ॥

हृदय कमल थापन करी, जपे शुद्ध योगेन्द्र ।
आपे सूरिराजेन्द्रजी, अमृत लहे सुख केन्द्र ॥ ५ ॥

(३) सिद्धाचलजिन–चैत्यवन्दनम्

विमल गिरवर सिद्धनो, कहिये शुभ तर ठाम ।
सिद्ध अनन्ता शिववर्या, एह सिद्धां के ठाम ॥ १ ॥

पूर्व नवाणुं प्रथम जिन, फरसी ए गिरीनाथ ।
पुंडरीक मुक्तें गया, पांच कोडि मुनि साथ ॥ २ ॥

सिद्धाचल भेट्या नहीं, पूज्या नहीं आदिनाथ ।
मनुष्य भव पामी करी, ते गयो खाली हाथ ॥ ३ ॥

ए तीरथ है शाश्वतो, महिमा अपरं पार ।
भाव धरीने जे चढ़े, तेने तारणहार ॥ ४ ॥

सूरिराजेन्द्र को वन्दताँ, दुःख टले सब दूर ।
अमृत कहे सेवा थकी, पामे सुख भरपूर ॥ ५ ॥

(९) श्रीविमलनाथजिन-चैत्यवन्दनम्-

वन्दो विमलजिणंदने, अड रिपु बल हरनार—
कर्म कष्ट दूरे हरी, पाम्या ऋद्धि अपार ॥ १ ॥

आलम्बन मुझ अतिघणो, तुझ दर्शन महाराज ।
भव अटवी भमता थका, पायो दर्शन आज ॥ २ ॥

तारक तू प्रभु जगत मे, भक्त उद्धारक इष्ट ।
वन्दो सूरिराजेन्द्रजी, अमृत नयणे दिट्ठ ॥ ३ ॥

(१०) श्रीशान्तिनाथजिन-चैत्यवन्दनम्-

प्रणमु शान्तिजिणंदने, सोलमा जिनवर स्वाम ।
विश्वसेन कुल दिनमणी, शिव पदनो आराम ॥ १ ॥

गजपुर नयरनो राजियो, छ खण्ड भोक्ता जेह ।
हरी व्यथा इह लोक मे, गर्भ छते गुण गेह ॥ २ ॥

सेव्या सहु सपत मिले, आपे सुख महा भाग ।
सूरिविजयराजेन्द्रने, अमृत नमे पय लाग ॥ ३ ॥

(११)-श्रीमल्लिनाथजिन-चैत्यवन्दनम्—

मल्लिजिनेश्वर साहेबा, जगजीवन आधार ।
प्रमुदित उलसित अगम, दर्शित वदन श्रीकार ॥ १ ॥

सम्यग् ध्याने परिणती, समकित गुण सहलानि ।
उत्सुक मन आपे लही, शिव रमणी सुखखानि ॥ २ ॥

सेना वल्लभ जग धणी, मूर्ति छे मनुहार ।
दरशन अमृत उर धरी, संभवजिन सुखकार ॥ ३ ॥

७ श्रीचन्द्रप्रभुजिन-चैत्यवन्दनम्-

सांकरणे चन्दा प्रभू, भेट्या जिनवर आय ।
पूरव संचित आपणा, सहु दुःख दूरे जाय ॥ १ ॥

कर्म विनाशी साहेबा, अविनासी अविकार ।
सुर नर किन्नर पूजतां, पामे सुख निरधार ॥ २ ॥

सेवा सुरतरु कलियुगे, वांछित फल दातार ।
अमृत सुन्दर दीजिये, अनुपम सुख उर धार ॥ ३ ॥

(८) श्रीशीतलाजिन-चैत्यवन्दनम्-

शीतल जिन सेवुं सदा, शीतल करण स्वभाव ।
शीतल गुण पावन करे, अन्तर आतम भाव ॥ १ ॥

दृढ़रथ कुल दीपक समो, उज्ज्वल इन्दु प्रमाण ।
सकल ज्योति शोभित प्रभू, ज्युं पारस पाषाण ॥ २ ॥

सुर नर किन्नर सेवतां, पामे वंछित कोड़ ।
सूरिविजयराजेन्द्रजी, कहे अमृत कर जोड़ ॥ ३ ॥

नेम राजुल दोनु जणा, मुक्ति गया गिरनार ।
अमृत कहे राजेन्द्रजी, जगजीवन आधार ॥ ३ ॥

(१४) श्रीपार्श्वनाथजिन-चैत्यवन्दने—

पास जिनेसर जगतिलो, नील वरण जसु काय ।
अश्वसेन कुल दिनकरू, वामाराणी माय ॥ १ ॥

सुन्दर मुद्रा सायले, निशदिन प्रणमु पाय ।
कमठमान-निहडणो, परिजन सेवे पाय ॥ २ ॥

गुण निधि उज्ज्वल तू भयों, निरुपम नाथ निहाल ।
महेर निजर कर दीजिये, अमृत मगल माल ॥ ३ ॥

(१५)

सेवो पारसनाथने, सुख सपत्ति दातार ।
अश्वसेन वामा तणो, कुमर छे मनोहार ॥ १ ॥

नील वरण तनु शोभतो, नव हाथनी देह ।
अहिलछन सो वर्षनु, आयुष भोगवी तेह ॥ २ ॥

वाणारसी में जनमिया, तारक त्रिभुवन देव ।
सानिधकारी है प्रभु, अमृत कहे नित्य मेव ॥ ३ ॥

(१६) श्रीमहावीरजिन-चैत्यवन्दने—

भाडवपुरमे भेटिया, सिद्धारथ कुलचन्द ।
त्रिशला कूखे अवतर्या, शिव रमणी सुखकन्द ॥ १ ॥

जन वच्छल प्रभु भेटतां, पहुँचे मननी कोड़ ।
हरि हरादिक देवता, नावे ताहरी जोड़ ॥ २ ॥

अविचल पद वरवा भणी, तुझ मुद्रा मणि कान्ति ।
चन्द्र समुज्ज्वल दर्शती, शुद्ध स्वभाव सुशान्ति ॥ ३ ॥

पतित उदधि भव माहिने, तारक देव तूं राज ।
अमृत ने राजेन्द्रजी, भोयणीपति महाराज ॥ ४ ॥

(१२)-श्रीमुनिसुव्रतजिन-चैत्यवन्दनम्-

वन्दू जिनवर वीसमां, श्री मुनिसुव्रत स्वाम ।
शासन शुभ वरतावियो, जग जीवन आरामि ॥ १ ॥

द्विविध धर्म उपदेशथी, भविजन के निस्तार ।
राग द्वेष महोटा अरि, करमन के दुख टार ॥ २ ॥

तुझ दरिशन की मुज मने, लग रहि आशा पूर ।
ध्यातां सुरिराजेन्द्रजी अमृतने सुख भरपूर ॥ ३ ॥

(१३)-श्रीनेमनाथजिन-चैत्यवन्दनम्—

नेमनाथ बावीसमां, श्यामवरण शरीर ।
शंख लंछन दश धनुषनुं, देहमान वड़वीर ॥ १ ॥

समुद्रविजय कुल दिनमणी, शिवादेवी मात ।
सहस्र वर्षनुं आउखुं, भोगवी सुख ने शात ॥ २ ॥

गुण एकावन ज्ञानना, सडसठ दरिशण जाण ।
सित्तर गुण चरित्रना, तपना बार प्रमाण ॥ ३ ॥

ए नवपद के ध्यानसे, सुख सम्पत्ति पाय ।
जे पूजे भवि भावसु, आतम निरमल थाय ॥ ४ ॥

पूज्या मयणासुन्दरी, तिम श्रीपाले राय ।
ऋद्धि सिद्धि सुख भोगवी, उपना स्वर्गे जाय ॥ ५ ॥

श्री नवपद वदन करी, सेवो सूरिराजेन्द्र ।
तन मन वच स्थिर तो करी, अमृत लहे सुखकेन्द्र ॥ ६ ॥

(१९) लक्ष्मणीतीर्थमण्डन-चैत्यवन्दन—

लक्ष्मणी तीरथ साहिबा, आदि पद्म जिनवीर ।
ऋद्धि सिद्धि सुखदायका, मेटे भव-भय पीर ॥ १ ॥

भव सन्तापे सन्तप्यो, शरणे आयो नाथ ।
तारक तुम जिनवर खरा, तारो मुझ भव-पाथ ॥ २ ॥

तुम सम तारु न देखिया, विश्वपति महाराज ।
तार तार हम पापीको, विरुद विचारी राज ॥ ३ ॥

सूरीश्वरराजेन्द्रजी, सेवक जन साधार ।
यतीन्द्रपति जिनराजजी, दीजो पद श्रीकार ॥ ४ ॥

मानव भव सफलो करी, दीधुं वरसी दान ।
बारे वरस तपस्या करी, लीधुं केवल ज्ञान ॥ २ ॥

मुक्ति गया पावापुरी, अमावसरी रात ।
गौतम केवल पामिया, ग्रह ऊगे परभात ॥ ३ ॥

शासन वरते जेहनुं, वरस इक्कीस हजार ।
सूरिविजयराजेन्द्रजी, अमृतविजय जयकार ॥ ४ ॥

(१७)

वीरप्रभु चोवीसमा, क्षत्रियवंशे होय ।
त्रिशला माता जनमिया, तात सिद्धारथ जोय ॥ १ ॥

सात हाथनी देहडी, सुवर्ण वर्णी काय ।
सिंह लंछन तनु शोभतुं, बहोंतर वर्षनुं आय ॥ २ ॥

पावापुरी में सिद्ध थया, वीरप्रभुजी राय ।
सूरिराजेन्द्रकी सेवना, अमृतमुनि नित्य चाय ॥ ३ ॥

(१८) श्रीनवपदचैत्यवंदन—

बार गुण अरिहंतना, आठ सिद्धना धार ।
छत्रीश गुण सूरितणा, ज्ञान तणा भंडार ॥ १ ॥

उपाध्याय गुण पचवीस है, साधुगुण सत्तावीस ।
श्याम वरण तनु शोभतो, जिनशासन के ईश ॥ २ ॥

ऋषभादिक जिनवर, वन्दु जिन चोवीस,
   सहु कर्म खपावी, आप थया जगदीश ।
समर्या सहु सकट, टाले विघन किलेश,
   भवियण सहु युक्ते, ध्यावे भाव विशेष ॥ २ ॥

सहु गणधर सुणे, भाखे इम उपदेश,
   तप विधि से करता, तूटे कर्म विशेष ।
जिन तपगच्छ नायक, राजे भूपेन्द्रसूरीश,
   इम अमृतविजय कहे, नितप्रति नामु शीष ॥ ३ ॥

(४) श्री नेमिनाथजिनस्तुति'—

प्रभु नेमिजिनेश्वर, वन्दन करु त्रण काल ।
   शिवादेवीना जाया, यादव कुल उजमाल ॥
बालीसमा जिनवर, शीयल सोभागी ग्वाल ।
   राजुलपति सेव्या, पामे मगल माल ॥ १ ॥

प्रथम पद धरवा, चढिया गढ गिरनार ।
   केवलपद पामी, तारी राजुल नार ॥
सहु कर्म खपावी, पाम्या शिवपुर सार ।
   वेह जिनवर नमता, पामे भवजल पार ॥ २ ॥

जिन आगम सारे, धारे व्रत पच्चखाण ।
   विधि जिनवर पूजी, देवो सुपात्रे दाण ॥

श्री जिनेन्द्रस्तुति–संग्रह ।

(१) आदिजिन–स्तुतिः—

प्रभु आदि जिनेश्वर तुं अलवेसर,
जगदीश्वर जयकारी जी ।
चोसठ सुरपति सुरनरगण मिली,
सेव करे चित धारी जी ॥
मात मरुदेवीजी के नन्दन,
नाभिकुंवर बलिहारी जी ।
युगला धर्म निवारक जग में,
वन्दूं वार हजारी जी ॥ १ ॥

प्रथम धरापति प्रथम प्रभूजी,
आप हुवा अवतारी जी ।
केवल धर वर अष्टापदगिरि,
पाम्या मुक्ति सवारी जी ॥
वन्दुं जिन चौवीस जिनेश्वर,
भाव धरी सुखकारी जी ।
दर्शन दायक लायक भक्तें,
वन्दो नित नर नारी जी ॥ २ ॥

दई मन्त्र नवकार प्रभुजी,
आप धरणेन्द्र बनाया जी।
नागकुमारे प्रिया पद्मावती,
रंग रमे सुख पाया जी॥
जिन आगम रस इणि परे भाख्यो,
कल्पसूत्र जिनराया जी।
सूरिराजेन्द्रनी साची श्रद्धा,
अमृत हर्ष सवाया जी ॥ ३ ॥

(६) श्रीवीरप्रभुजिन-स्तुति —

भयहर भवि वीरजिन नमो,
सकल कर्मदल दलन करु।
धर्मराज लहो सुख शाश्वत,
सुमतिनार रमो सहजे सदा ॥ १ ॥

शिवगति लहिरो लह तीर्थपा,
सुर सवे सेव में वरतता।
नमत पाप हरे घर संपदा,
मम मने वसजो तुम मंमदा ॥ २ ॥

जिनभक्ति करतां, धनचन्द्र सूरि गुरुदेव ।
मुनि अमृत वांछित, पूर सदा स्वयमेव ॥ ३ ॥

(९) श्री पार्श्वनाथजिनस्तुति—

महीमण्डण प्रभु पास जिनेसर,
सेवो भविक सुखदाया जी ।
अहिलंछन ओपे अति सुंदर,
नीलवरण तसु काया जी ॥
मात वामादेवी हुलराया,
जन्म वाराणसी पाया जी ॥
अश्वसेन कुल तेज झगामग,
तेवीसमा जिनराया जी ॥ १ ॥

कमठासुर तपस्या तापंतो,
पंच अग्नि की ज्वाला जी ।
मुंज कन्दोरो लाल कशोटो,
गल महोटी रुंडमाला जी ।
आप पधारे गंगा तट प्रभु,
काष्ट चिराय निराला जी ।
नाग निकालो प्रभु अध जलतो,
श्याम वरण सुकुमाला जी ॥ २ ॥

श्रीमहावीर जिनेसर, फरसी कार्तिक मास।
पहुँता निर्वाणे, जन्म जरा करी नास॥

करी देव दीवाली, पूरी मननी आस।
नन्दो चोवीशी, जिनवर मन उलास ॥ २ ॥

गौतम लही केवल, दीवाली दिन जाण।
जिण सूत्रे भाख्यो, साचो ए अहिनाण॥

कुण तव विना लह, गया समयनो ठाण।
राजेन्द्रसूरीश्वर, भाखे सत्य वखाण ॥ ३ ॥

(९) श्रीपर्यूषणपर्वस्तुतिः—

वीरजिनेसर गोयम आगे,
परव पर्यूषण दाखेजी।

त्रिविध मन शुद्ध जिनवर पूजी,
आश्रव क्रोध न राखे जी॥

तप जप संयम सवर धारी
विकथा चार निवारी जी।

वीरप्रभुनी स्तवना करीने,
वरिये शिववधु नारी जी॥ १ ॥

जिनमतं हृदि है मुझ शंकरं,
सकल संघ चतुर्विध संवरं ।
नमति तं व्रत सूरिराजेन्द्र हि,
वर पदार्थयुतं शुभ में मही ॥ ३ ॥

(७) श्रीलक्ष्मणीतीर्थमंडनजिन-स्तुतिः—

लखमणी तीरथ मंडन जिनवर,
आदि पद्म महावीर जी ।
नमि मल्लि श्रीऋषभ ऋषभदेवा,
संभव अजित रणधीर जी ॥
अभिनंदन जिनचन्द्र विराजे,
नमो अनन्त वीर मन थीर जी ।
जिनप्रतिमा जिनसूत्रनी साखे,
यतीन्द्र भेटे भव पीरजी ॥ १ ॥

(८) श्रीदीवालीपर्व-स्तुतिः—

दिन सफल दीवाली, दीठो देव दयाल ।
श्री कूकसी नयरे, पाप गयां पायाल ॥
श्रीशान्तिजिनेसर, भेट्यां भव भय टाल ।
सहु संपति पामी, मंगल झाक-झमाल ॥ १ ॥

सेवत चौसठ सुरपति भावे,
नरसुर वृन्द करे तुझ वन्दन ॥

कष्ट सुदुष्ट अरि करि सागर,
चोर पिशाच रु भूत निकन्दन ।

सुन्दर तू प्रभु दे सुमति मति,
शान्ति करो ज्यु गगना चन्दन ॥ १ ॥

देव दूजा प्रभु अजितजिनेश,
दिनेश घरा पर है उपकारी ।
अष्ट अरि सहु जीत करी नित,
प्रीत करी शिवसुन्दरी प्यारी ॥
अमृतमय उपदेश को धारे,
तारे जगत मे बहु नर नारी ।
सुन्दर ताहि प्रणाम करु नित,
चित्त त्रिलोक सेतु सुखकारी ॥ २ ॥

सम्भवदेव करु तुझ सेव मे,
टेव लगी नितमेव ही आकर ।
काम रु क्रोध रु मोह रु लोभ मे,
क्षोभ की पीड सही दुख सागर ॥

लघु कल्पसूत्र जागरण कीजे,
नन्दी ओच्छव करीये जी ।
बड़ा कल्पनो छठ करीने,
वीर चरित्रने सुणिये जी ॥
एकम जन्म महोत्सव सावो,
बीज निरवाण विचारो जी ।
त्रीज दिने तेवीस तीर्थंकर,
अन्तर सुणो चित धारो जी ॥ २ ॥

संवत्सरीनो अट्ठम करीने,
बारेसो सूत्र सुणो रंगे जी ।
चैत्य-प्रवाड़ी जिनवर वंदी,
दान संवत्सरी चंगे जी ॥
सर्व जीव खामो शुभ चित्ते,
पड़िकमणो करो भावे जी ।
सूरिराजेन्द्रनी साखे भवियण,
सघला दोष मिटावे जी ॥ ३ ॥

श्रीचतुर्विंशतिजिनसवैया—

आदि-जिणिंद दिणिंद तुंही जग,
मात मरुदेवीजी का नन्दन ।

सुन्दर सुमतिनाथ निहालत,
नामत शीश हिये हरखाणी ॥ ५ ॥

पद्मप्रभु प्रणमु बहु प्यार से,
पद्म समो गुण पूरण पामी ।
आप हुवे अवतारी क्षोणी पर,
श्रीघनश्याम नमु शिर नामी ॥
तारक विश्व विश्वम्भर नाथ तू,
दायक दान दया गुणधामी ।
सुन्दर सहाय करो प्रभु मपद,
तीर्थपती तुही अन्तरयामी ॥ ६ ॥

सेव सुपास की आस घणी मोय,
जोय घणी शुभ दृष्टि निहाली ।
नर्क निगोद की छाह भम्यो अति,
भाग्य खुले तुझ मूर्ति को भाली ॥
ताप हरो भव पाप का फन्दन,
कर्म निकन्दन कुमती टाली ।
सुन्दर सप्तम देव निरंजन,
नाथ नमु नित चरण पखाली ॥ ७ ॥

हीन उद्धार सुधार धणी तुंही,
युंही पुकार सुनी करुणाकर ।
सुन्दर तारक नाथ तुंही मुझ,
देव नमुं नित्य ध्यान में लाकर ॥ ३ ॥

पाप कटे अभिनन्दन वन्दन,
कर्मनिकन्दन है सुखदाई ।
भीड़के भञ्जन गंजन दुष्ट को,
मिष्ट है नाम भजो मनमाई ॥
सागर दुःख के पार तरे करी,
सेव चौथा जिन कीजो सदाई ।
सुन्दर सन्त सचे महमन्त को,
तन्त गिणी भजो मेरे सुभाई ॥ ४ ॥

दायक सुमति नाम रटो नित,
हित धरी चित्त अन्दर प्राणी ।
पंचम नाथ प्रतापथकी हुवे,
कर्म खपाकर केवलनाणी ॥
योग योगेन्द्र जितेन्द्री भये नित,
तारक मुक्ति की देत निशानी ।

तात त्रिभुवन लोक अलोकमें,
नाम जपे भक्त सौ कोई ॥
देव अनेक विलोक विधूत,
सद्बुद्धि धरु निज चरणे तुझ मोई ।
सुन्दर दास घणी मन आस है,
पद्म विश्राम मुक्ति पद होई ॥ १० ॥

भावकारी श्रेयास भजो भवि,
तजी मन दंभ सहु कुटिलाई ।
राण सुनन्दन त सहु,
कर्मनिकन्दन पार लघाई ॥
अमृत औषध योग मिले तब,
व्याधि हटे सुख सपद पाई ।
ग्यारम तात देवे सुख शात को,
सुन्दर शरण सेव्या सुखदाई ॥ ११ ॥

वासुपूज्य विलास उल्लास घने,
विश्वास धर्यो प्रभु एक तिहारो ।
काल अनन्त चौरासी फर्यों हिवे,
मयों न कान क्यों आप सुधारो ॥

शीतल चन्द्रसमो प्रभु अष्टम,
चन्द्रप्रभु जिन मूर्ति सुन्दर ।
विश्व प्रचार करी जिनशासन,
ध्यान धर्यो पदमासन अन्दर ॥
तार भवि कई पार लहे यदि,
छोड़ संसार सवि भयकन्दर ।
सुन्दर तुं प्रभु शिवपद दानी,
ज्ञानी मिले मुझ मनही मन्दिर ॥ ८ ॥
नाथ नमुं नित सुविधिजिनेश,
दिनेश समुज्ज्वल कान्ति प्रदीपे ।
संयमधार कित्ते उपगार,
किये नर नार सहु वेरि को जीपे ॥
तारण नाव भव दरियाव में,
आण अखण्ड रखी अवनीपे ।
सुन्दर तुं प्रभु सेवक तारण,
पार उतारण है नाथ महीपे ॥ ९ ॥
शीतल शीतल वेन सुहावत,
ध्यावत गावत भाव से जोई ।

सुन्दर महिर करो मोरा स्वामी,
गुणी लोग गुण सुणी यश गावे ॥ १४ ॥

ध्यान धरो नित धर्मजिनेश्वर,
धर्म दिपावण धीरज धारी ।
राग नहीं जिनके अगमे नित,
सग किया सुख होत अपारी ॥
रग किया गहे रीत लहे नीत,
जीत कषाय क कर्म निवारी ।
सुन्दर शिवपद के तुम दानी,
ज्ञानी गुणी जन की बलिहारी ॥ १५ ॥

शान्तिप्रभु जिन शान्ति करी जग,
मरकी महाभय दूर निवार्यो ।
कारक करुणाधार पारेवकी,
रक्षा के कारण निज देह विदार्यो ॥
सोलम तीर्थपति सुण साहेब,
ध्यान अखण्डित ही मे नित धार्यो ।
सुन्दर तारक स्वाम कृपाकर,
आज भवसिन्धु से उगार्यो ॥ १६ ॥

नाथ कृपाल भूपाल धणी तुझ,
तारक नामको विरुद विचारो ।
सुन्दर वारम्वार नमुं चित,
हितकरी निज भृत्य को ही तारो ॥१२॥

तेरम तीर्थपति अति उत्तम,
विमल वाणी वसुधा वरसाई ।
पीवन पीर मिटि भवि जीव की,
तीर भव उदधि पार वहाई ॥
क्षीरसमुद्र का नीर पिये जिम,
प्यास घटे है जिनकी मनमाई ।
सुन्दर स्वामी आधार खरो मुझ,
तार संसार यह विनति गाई ॥ १३ ॥

चौदमा अनन्त जिणिंद दिणिंद,
सुरीन्द मुनीन्द सवि गुण गावे ।
ख्याल खुसाल से अंगन खेलत,
पुत्र कलत्र आदि खूब ही पावे ॥
देखत दीन जलविन मीन ज्युं,
आप विना जीव युंही तरसावे ।

शील रस्यो महासिद्ध जोरावर,
केवल पाय सुगुण गुणवन्ता ॥
बोध कर्यो पट् मित्र बुलाय के,
त्याग समार को सिद्ध भरा सन्ता।
सुन्दर सेवक पाय परे तुझ,
सहाय करो जय जय जशवन्ता ॥ १९ ॥

श्यामवर्ण वीसमा मुनिसुव्रत,
देखत दुनि सहु हरखाए ।
पीर मिटाय हटाय शत्रु कर्म,
सिद्धशिला पर ध्यान लगाए ॥
सयम धीर हुए वडवीर ज्यु,
नीर गगाजल ज्यु यश पाए ।
सुन्दर आश खरो विश्वास मे,
दीजे दिलाम उलाम मे आए ॥ २० ॥

नित्य नमुं नमिनाथ निरजन,
आघ अमूलक तु प्रभु मोरे ।
पाप हटे तुझ नाम से घातिक,
शान्ति गुणोत्तम आतम जोरे ॥

कोड करी नमुं कुन्थुजिनेसर,
तूं अलवेसर अर्ज स्वीकारो ।
डूबत ही भवसिंधु संसार से,
पसार के बांह ग्रही मोय तारो ॥
तात भरोसो है आप तणो अब,
और कहा भणुं वारम्वारो ।
आप विना नहीं सुन्दर के प्रभु,
मोक्षपति मुझ प्राण आधारो ॥ १७ ॥

अन्तरयामी हो अरनाथजी,
तात नहीं तुझ त्रिभुवन तोले ।
चोसठ इन्द्र सहु सुर साथ में,
चामर छत्र शिरोपरि ढोले ॥
बाजत रंग वधाय वधाय के,
मंगल गात ध्वनि जय बोले ।
नाचत हैं सुरराणी अप्सरा ज्युं,
सुन्दर आय रह्यो निज खोले ॥ १८ ॥

पूरण कुंभ समो नृप कुम्भ का,
मल्लिजिनेश्वर महा बलवन्ता ।

सुन्दर लाज सुधार वधारन,
आप दीजे मोय इष्टार्थ सुभत्ता ॥ २३ ॥
शासन नायक वीर चोवीसमा,
धीर धरी जिन खूब अपारे ।
तार जमाली जमाइ आदि कई,
भक्तजन के कई काज सुधारे ॥
ज्योति जगे जसु नाम जिनमत,
वरते वर्ष इक्कीस हजारे ।
सुन्दर सानिध्य आप करो मुझ,
मैं शरणागत तात तुमारे ॥ २४ ॥
सनत वाणु गुणिसय फागुण,
तृतीया चन्द्र दिने शुभकारी ।
भक्ति करी जिन चोवीस भाव से,
गाया मे गुण आनन्द अपारी ॥
मोहमगच्छाधिपति धनचन्द्र,
सूरि चरणाङ्कित मे वलिहारी ।
सुन्दर नाम पसाय नमी जिन,
हर्ष धरी चित गीत उचारी ॥ २५ ॥

स्तवन-संग्रह ।



श्रीसिद्धाचलजिन-स्तवनानि ।

(१)

चालो सखी धनमुनि वन्दन जइये रे, ए राह—

चालो सखी सिद्धाचल गिरि जइये रे,
वंदी जिनवर पावन थइये ॥ टेर ॥

प्रभु आदि जिणिंद अलबेलो रे, उद्धार भरत करी पहेलो रे ।
देख्यां पातिक दूरे ठेलो ॥ चालो सखि० ॥ १ ॥

ज्यांरी कंचन वरणी काया रे, मूल मन्दिर में जिनराया रे।
प्रभु पूरव नवाणुं आया ॥ चालो सखी ॥ २ ॥

नर नारी मिलि गुण गाशे रे, गिरि फरशन भावे जाशे रे।
तेहना पातिक दूर पलाशे ॥ चालो सखी० ॥ ३ ॥

एकवीश नाम नित ध्यावोरे, प्राणी जनम जराने मिटावो रे।
मनवांछित फल तुमे पावो ॥ चालो सखी० ॥ ४ ॥

राम भरतादिक इणी ठामे रे, पाच पाण्डव सिद्धा मुकामे रे।
पुडरीक पचम पद पामे ॥ चालो सखी० ॥ ५ ॥
वारिखिल्ल द्राविड मुनिराया रे, शाम्ब प्रद्युम्न गिरि आया रे।
साधू कइ मुक्ति सिधाया ॥ चालो सखी० ॥ ६ ॥
रह्या शान्ति अजित चोमासे रे, आवे गिरि भाव उल्लासे रे।
भेटया भवना दुखडा जासे ॥ चालो सखी० ॥ ७ ॥
सूरिराजेन्द्र मोहनगारो रे, धनचन्द्र सूरि मोय प्यारो रे।
गिरि अमृत गुण–गानारो ॥ चालो सखी० ॥ ८ ॥

(२)

गरबी–चालो हे साहेली आपे, ए राह–

चालो हे साहेली आपे सिद्धाचल जाशा।
गुण जिनवरजीरा गासा र लोल ॥
करी शुद्ध अगजले पहेरी पीताम्बर।
धूप अखूट धरासाहे लोल ॥ चालो० ॥ १ ॥
निर्मल जल कलश भर झारी।
माहरा प्रभुजीने न्त्रवण करासा ह लोल ॥
केसर चन्दन कुम कुम अगी।
फूलों का हार चढासा ह लोल ॥ चा० ॥ २ ॥

४

बहुविध सतर प्रकार सामग्री ।
प्रेमे पूजा भणामां हे लोल ॥
नव नव नाटिक प्रीतें मधुर स्वर ।
वाजित्र नाद बजासां हे लोल ॥ चा० ॥ ३ ॥
चित्त वैरागे रात्रि जागे ।
खंते खेला नचासां हे लोल ॥
सुगुरु दान सदा संतोषी ।
भक्ति भावना भासां हे लोल ॥ चा० ॥ ४ ॥
यात्रा युगति इणीपरे करने,
पातिक दूर पलांसा हे लोल ॥
सूरिराजेन्द्रगुरु अमृत आणा ।
चतुरमुनि शीष धरासां हे लोल ॥चा०॥५॥

(३)

हां केसरियो कामणगारो०, ए राह-

हां आदीश्वर लागे प्यारो, मन मोहन प्राण आधारो ।
मोरादेवीनो लाड़लो-सिद्धाचलवालो रे ॥ आ० ॥ १ ॥
इण तीर्थ की महिमा भारी, वरणवतां नहीं आवे पारी ।
सिद्ध अनन्त थया इण गिरी-वन्दुं वार हजारी रे॥आ०॥२॥

राम पाडव नव नारद तरिया, नमि विनमि यादव उद्धरिया ।
पशु पापी गिरी ऊपरे-शिखरमणी चरिया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥

प्राये शाश्वतो गिरि शत्रुंजो, मोहनगिरी तोले नहीं दूजो ।
जगतारण आदिनाथने-भविषण तुमे पूजो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥

दूर देशसे यात्रा आयो, दरिसण करके आनन्द पायो ।
भेटे त्रिलोकीनाथने-अति मन हुलसायो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥

प्रभु चरणा म दास तुमारो, मुझ पापी को ततखिण तारो ।
ऐसो विरुद है आपको-अरजी अवधारो रे ॥ आ० ॥ ६ ॥

उगणीसो एकाणुं वरसे, चैत्रीपूनम आनन्द दरसे ।
करी यात्रा बहु प्रेम से-मुझ मनडो हरसे रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

सूरिराजेन्द्र गुरु अमृत पसाये, वाचक श्रीयतीन्द्र सहाये ।
चतुर गिरि गुण गावता-बहु सुखडा पाये रे ॥ आ० ॥ ८ ॥

(४)

पिंगल वीरजी थारी०, ए राह-

आदीश्वर साहिबा थारी, महिमा भारी हो राज ।
नाभिजीरा लाडला थारी, मूरति प्यारी हो राज ॥ टेर ॥

इण सिद्धगिरी आविया जी, रायण रूंख मझार ।
ऋषभजिणंद समोसर्याजी, पूर्व नवाणु वार ॥ आ० ॥ १ ॥

पांच कोड़ी मुनि साथमें जी, पुंडरीक गणधर थाय ।
चैत्रीपूनम सिद्ध थयाजी, अजरामर पद पाय ॥ आ० ॥ २ ॥

पांडव पांच मुगते गयाजी, वीस कोड़ी मुनि साथ ।
पांच कोड़ी मुनि भरतजी, लीधो मोक्षनो पाथ ॥आ०॥३॥

साढ़ी आठ क्रोड़ साथ में जी, शाम्ब-प्रद्युम्न कुमार ।
कर्म खमावी गिरी ऊपरे जी, पहोता मोक्ष मझार ॥आ०॥४॥

सिद्धाचलगिरि भेटतांजी, आतम निरमल थाय ।
क्रोड़ भवांरा पापनेजी, क्षणभर में छूटकाय ॥ आ० ॥ ५ ॥

ए शाश्वतो तीरथ खरोजी, ए सम अवर न कोय ।
भगिनीभोगी तो तर्याजी, कठिन कर्म सब खोय ॥आ० ॥६॥

मुद्रा मोहिनी देखने प्रभु, जाग्यो अनुभव प्रेम ।
अब नहीं छोड़ुं नाथनेजी, मलियो मुसकिल टेम ॥आ०॥७॥

तारक जाणीने आवियोजी, तुम तीरे महाराज ।
मुज सेवकने तारजो प्रभु, दीजो शिवसुख राज ॥आ०॥८॥

उगणीसो एकाणुंमें जी, शुदि तीज श्रावण मास ।
पालीताणे चतुर्मासमें जी, गिरी गुण गाया हुलास ॥आ०॥९॥

गुरु राजेन्द्र भूपेन्द्रनेजी, वाचक यतीन्द्र मुनीन्द ।
सोहमगच्छ में सोहताजी, गुण गावे अमृत थुणिन्द ॥आ०॥१०॥

(५)

श्रीऋषभजिन-स्तवनानि ।

कहो रसिया थाने किण विलमाया, ए राह-

नाभीनंदन दरिसन पाया,
दरिसन से सहु जग मोहाया
काई रे ध्यान धरु रसिया ॥ टेर ॥ १ ॥
आषाढवदि चोथे दिल चाया,
सर्वार्थसिद्ध विमानथी आया ॥ का० ॥ २ ॥
चैत्रवदि अष्टमी मन भाया,
जन्मकल्याणके माता हुलराया ॥ का० ॥ ३ ॥
नयरी अयोध्याने दीपाया,
तात नाभिजी के कुलमे जाया ॥ का० ॥ ४ ॥
माता मरुदेवीने सुहाया,
जगजन देखी बहु हरसाया ॥ का० ॥ ५ ॥
लाख पूरव चोरासी गिनाया,
आयु जाणो जगमे जिनराया ॥ का० ॥ ६ ॥
पाच सो धनुष सुवरणी काया,
बीस लाख कुँवर पदे ठाया ॥ का० ॥ ७ ॥

त्रेशठ लाख राय पदवी छाया,
लाख पूरव दीक्षा मन लाया ॥ कां० ॥ ८ ॥

फागुणवदि एकादशी पाया,
केवल कल्याणकरी तिथि भाया ॥ कां० ॥ ९ ॥

अष्ट कर्म रिपु दूर कराया,
माघ त्रयोदशी मोक्ष सिधाया ॥ कां० ॥ १० ॥

सूरीश्वरराजेन्द्र बताया,
मुनि-अमृतना काज सवाया ॥ कां० ॥ ११ ॥

(६)

रंग रसिया रंगरस बन्यो मन मोहनजी, ए राह—

आदिजिणंदने सेवियेे मनमोहनजी,
दो कर जोड़ी हाथ- मनड़े वसिया रे मन मोहनजी ॥ टेर ॥

जिनपूजा युक्ते करो—म०,
करीने समकित साथ ॥ मन० ॥ १ ॥

द्रव्य भाव दो पूजना—म०,
करे श्रावक शिवके काज ॥ मन० ॥

द्रव्य पूजा श्रावक तणी—म०,
भाव पूजा मुनिराज ॥ मन० ॥ २ ॥

एह विधि अवधारजो–म०,
भविजन ऊतरे पार ॥ मन० ॥
लागी तुमसे प्रीतडी–म०,
चन्दन गन्ध सुठार ॥ मन० ॥ ३ ॥
झगमग ज्योति अनुभवे–म०,
आदीश्वर अरिहन्त ॥ मन० ॥
नाभिनन्दन निरखता–म०,
मुख पूनम राजन्त ॥ मन० ॥ ४ ॥
सनत उगुणी चौसठे–म०,
आसुवदि दशमी रंग ॥ मन० ॥
सूरिराजेन्द्रनी सेवना–म०,
अमृतविजय उछरंग ॥ मन० ॥ ५ ॥

(७)

राजा ले लो खबरिया हमारी रे, ए राह,—

छवि निरखी केसरिया तुम्हारी रे,
अति हरखी है अखिया हमारी रे ॥
छवि निरखी केसरिया तुम्हारी रे ॥ टेर ॥
तीन भुवन उद्योतनकारी, पाप पडल हरनारी ।

भविक भाव वन शोधनकारी,
उपशम रसकी क्यारी ॥ छ० ॥ १ ॥
नाभि नन्दन त्रिजग वन्दन, अविचल महिमा भारी।
समवसरण के बीच विराजे,
अद्भुत लीला तारी ॥ छ० ॥ २ ॥
वार पर्षदा आगल सोहे, देखत मुख मनुहारी।
वाणी दिव्य ध्वनि घन गाजत,
भॉजत श्रमणता सारी ॥ छ० ॥ ३ ॥
काणोदर में कृपालु मुद्रा, दर्शित दुःख हरनारी।
भक्ति युक्ते यात्रा कीनी,
वर्या मंगल शिवनारी ॥ छ० ॥ ४ ॥
सूरिविजयराजेन्द्र गुरुजी, अमृत के उपकारी।
देवगुरु की सेवा करतां,
केई थया भवपारी ॥ छ० ॥ ५ ॥

(८)

केसरिया-स्तवन—

राह—ख्यालरी—

केसरिया थांरो दरिशण कीनो रे पूरण भावसुं।
हो जिनजी थांरो, दरिशन कीनो रे पूरण भावसुं ॥ टेर ॥

घणा कालको विरह प्रभु जी, आज मट्यो महाराज ।
शरणे आयो साहिबा सो काइ,
फलियो मनोरथ आज रे ॥ के० ॥ १ ॥
डूँगर देश मे आप बिराजे, महिमा जगमे भारी ।
सर्व जगत जन यात्रा आवे,
इच्छित फल दातारी रे ॥ के० ॥ २ ॥
चिन्तामणि अरु कल्पवेल मम, सहुना वाछित पूरो ।
पुत्र कलत्र समृद्धि आपो,
दु.ख दोहग सहु चूरो रे ॥ के० ॥ ३ ॥
मारग निकट बडो है विषमो, उलघन करके आयो ।
धुलेवा धणीने भेटने सु काई,
हुओ आज मन चायो रे ॥ के० ॥ ४ ॥
सवत उगुणी गुण्यासी सुकाड, चैत्री पूनम खास ।
सूरिराजेन्द्रजी देखने सो काई,
अमृत पूरी आस रे ॥ के० ॥ ५ ॥

(९)

राह—कव्वाली—

नाभि राजा के कुल मडण, आदीश्वर हो तो ऐसे हो ।
माता मोरादेवी की कूखे,
लिया है जन्म प्रभुजीने ।

इन्द्रादिक सुर करे ओच्छव,
प्रतापी हो तो ऐसे हो ॥ नाभि० ॥ १ ॥

युगलिक धर्म हटाके,
बताई रीति जग जन को।
चलाई राजनीति को,
राजेश्वर हो तो ऐसे हो ॥ नाभि० ॥ २ ॥

राजलीला सभी छोड़ी,
कुटुम्ब का प्रेम सब तोड़ी।
संजम से चित्त को जोड़ी,
मुनीश्वर हो तो ऐसे हो ॥ नाभि० ॥ ३ ॥

मास बारे करी तपस्या,
पाया है ज्ञान अति भारी।
तारे हैं नर अरु नारी,
जिनेश्वर हो तो ऐसे हो ॥ नाभि० ॥ ४ ॥

आठों ही कर्म को जारी,
परम सुख मोक्ष अधिकारी।
वन्दे अमृत सूरिराजेन्द्र,
योगीश्वर हो तो ऐसे हो ॥ नाभि० ॥ ५ ॥

(१०)

अलिराजपुर-जिनेश्वर-स्तवनम् ।

पीया माने खेलण दो गणगोर, ए राह–

जी हो प्रभुजी आदीश्वर अरिहन्त,
अरज माहरी मामलोजी मारा राज ॥ टेर ॥

जी हो प्रभुजी देखो थारो रूप,
माहरो मन लुभाई रह्योजी मारा राज ॥ १ ॥

जी हो प्रभुजी आप हो अतिशयवन्त,
साचो साहिब तु सगेजी मा० ॥ २ ॥

जी हो प्रभुजी झाल्यो तुम केरो हाथ,
अवे नहीं छोटसु जी मा० ॥ ३ ॥

जी हो प्रभुजी साची तुमसे प्रीति,
दया करी निभावजो जी मा० ॥ ४ ॥

जी हो प्रभुजी तारक नाम धराय,
मने जिनजी तारजो जी मा० ॥ ५ ॥

जी हो प्रभुजी आलीरानपुर माय,
प्रथम जिन भेटिया जी मा० ॥ ६ ॥

जी हो प्रभुजी किया चातुरमास,

उगुणीसो ब्यासी साल में जी मा० ॥ ७ ॥

जी हो प्रभुजी सूरिराजेन्द्र पसाय।

अमृतमुनि आनन्द में जी मा० ॥ ८ ॥

(११)

गोड़वाडपंचतीर्थी-स्तवनम् ।

राह ख्यालरी-

आदीश्वर स्वामी आप विराजो, परवत पहाड़ में ॥ टेर ॥

पुण्य प्रबल है आज हमारो, प्रभूजी को दरिशण पायो ।
उलट भाव से स्तवना करके, संघ सहित वधायो रे ॥आ०१॥

प्रथम धरम प्रगटावियो सो कांई, युगला धर्म निवार ।
भविजन को प्रतिबोध दईने, शुद्ध मार्ग बताया सार रे ॥आ०॥२॥

चउमुख प्रतिमा चारो सुन्दर, अध विच मंदिर माय ।
नयने निरखी हियड़े हरखी, लुल लुल लागुं पाय रे ॥आ०॥३॥

पारस वरकाणे भेटीने, नाडोले श्रीनेम ।
पद्मप्रभू को देखने जी कांइ, पूरण लागो प्रेम रे ॥आ०॥४॥

ग्यारे मन्दिर नाडुलाइ में, घाणेराव महावीर ।
सादड़ी शान्तिनाथजी सो कांइ, मेटे भवभय पीर रे ॥आ०॥५

पाचों तीरथ जुहारीने रे, राणपुरे ऋषभेश ।
नितप्रति सेवा करे जी चाह, सुरगण इन्द्र नरेश रे ॥आ०॥६॥

वाली खिमेल साडेराव से, सघ मिल यात्रा आया ।
वाचक मोहन मुनिवर साथे, जिन पूजा ठाठ मचाया रे ॥आ०॥७॥

सूरिराजेन्द्र प्रभु मुझ मिल्या रे, फल्या मनोरथ काज ।
अमृतविजय आमोद म मरे, द्यो दरिशण महाराज रे ॥आ०॥८॥

(१२)

आकोली आदिनाथ-स्तवनम् ।

माता मरुदेवीना नन्द, ए राह—

मै तो निरख्या नयनानन्द, अखिल प्रभाकर आदिजिनेश्वर—
पाया परमानन्द, मै तो निरख्या ॥ टेर ॥

युगला धर्म निवारक जिनजी, वनिता नयरी राय ।
त्रिजग दीपक जननी जाया, मरुदेवा तुझ माय ॥ मै० ॥ १ ॥

चतुष्पष्टि सुर इन्द्र कर नित, ओच्छव अति मनुहार ।
षट् त्रिंश वाद्य नाद्य करे सगीत, थय थयरना थमकार॥मै०॥२॥

शिर पर मुकुट कानो सोहे कुण्डल, हियडे नव
अगी हद नीकी, अनुपम रूप

अर्ध इन्दु सम भाल विराजे, नीलवट टीको धार ।
चक्षु कमल दल पांखडी शोभे, घ्राण दीपकनी धार ॥मैं०॥४॥

सुन्दर काय सुगन्ध मनोहर, प्रथम तीरथपति सार ।
आदि धरम दायक जग दानी, जनता के उपकार ॥ मैं०॥५॥

संजम धार प्रबल निज शक्ति, अब्द न लीनो आहार ।
इक्षुरसें पूरण करी भक्ति, श्री श्रेयांस कुमार ॥ मैं० ॥ ६ ॥

अतुल कष्ट केवल उपजावी, सोंप्यो जननी हाथ ।
चार गति चूरी भव भ्रमणा, चढ़िया शिवपुर साथ ॥मैं० ॥७॥

त्राणुं अब्द आकोली नयरे, भेटया जिन चोमाश ।
संघ सकल मिल भक्ति करतां, पूगी मनरी आश ॥मैं०॥ ८ ॥

तुझ दर्शित कलिमल अघ दूरे, चूरे कर्म प्रवाह ।
आनन्दित पूर अनुभव प्रगटे, नुति हुँ करुँ नित चाह ॥मैं०॥९॥

सोहमगण राजेन्द्रसूरीश्वर, चतुर शिष्य गानार ।
अमृत मुनिवर इणिपरे वन्दे, भवोदधि पार उतार ॥ मैं०॥१०॥

(१३)

राग काफी, जिन्दा तोरी अखियनमें, ए राह–

दरिसन की बलिहारी जिनन्दा,
तोरे दरिसन की बलिहारी ॥ टेक० ॥

केसर चदन मृगमद अगे,
चर्चित अंगियाँ सारी ॥ जि० ॥ १ ॥

ज्योति झगामग अद्भुत सोहत,
पाप तिमिर हरनारी ॥ जि० ॥ २ ॥

तृप्त भए मन प्रभु तुझ देखत,
वर्षित अमृत वारी ॥ जि० ॥ ३ ॥

विघटित निकट अनादिकाल के,
आतम पावन कारी ॥ जि० ॥ ४ ॥

भगे दुर्भाग्य अनल दिन मेरा,
पुन्यदशा हुई जारी ॥ जि० ॥ ५ ॥

नयर आकोली सुन्दर मन्दिर,
ऋषभजिणद मनोहारी ॥ जि० ॥ ६ ॥

उपजत ज्ञानदशा धुन लहेरी,
प्रेम प्रमोद अपारी ॥ जि० ॥ ७ ॥

निमल हर्षे अमृत गुण गाते,
चतुर नम नरनारी ॥ जि० ॥ ८ ॥

(१४)

राग कव्वाली—

ऋषभजिन सेवना तोरी, मेरे मन में समाई है।
अनुभव प्रेम की दोरी, सदा लय में लगाई है ॥ टेर ॥ १ ॥
भारत में नाथ धुलेवे, विराजे नाभि के नन्दन।
अखिल कीर्ति जग माई, दिशो दिश में समाई है ॥ ऋ० ॥ २ ॥
आदिजिन आदि के कर्ता, अतुल भव दुःख के हरता।
कई संसार से तरता, रटन तुझ नाम ध्याई है ॥ ऋ० ॥ ३ ॥
चौराशी लक्ष में धायो, चरण प्रभु आप के आयो।
निहाली हर्ष हुलसायो, दर्श दुरगती हराई है ॥ ऋ० ॥ ४ ॥
परमपद पामवा मुक्ते, अष्टापद ऊपरां युक्ते।
एक शत अष्ट उण वक्ते, करी शिव में चढ़ाई है ॥ ऋ० ॥५॥
आप संसार के त्यागी, गये मुझ छोड़ निरागी।
यदि शुभ भावना जागी, अमृत नित गुण गवाई है ॥ऋ०॥६॥

(१५)

आज भले भेट्या रे, ए राह—

प्रथम तीरथपति सेवनां रे, मुझ मन अति सुखदाय।
भक्ति वत्सल प्रभु भालतां रे, दूजो न आवे दाय ॥

गुलिरा थागी हो, अविनाशी
विरागी–आतमना आधार ॥ टेर ॥ १ ॥

रिपाणी मन माहरो रे, तुमसेती इक तार ।
देव दूजा हिव किम गमे रे?, अन्यसेती उदार ॥ मु० ॥ २ ॥

जिणगु नवला शीलड़ी रे, पचाणी एक रंग ।
मोहिया मान सरोवरे रे, छिल्लर किम सर संग? ॥ मु० ॥ ३ ॥

जिम तरु फूले मालती रे, मधुकर मोहिया वृन्द ।
आक धतुरा फले रे, ते किम पामे आनन्द ? ॥ मु० ॥ ४ ॥

सुन्दर मन्दिर छोड़ने रे, अब बसे तृण धाम ।
अमृत भोजन जिम तजी रे, कुपग लीम बग ? ॥ मु० ॥५॥

मुझ मन लगी लग रही हो, तुम दरिशन रूप सी ।
निधन पायो नापजी रे, आप उदार धर्य ॥ ॥ मु० ॥ ६ ॥

ज्ञानी नाणना रूप धरी रे, चेहरो किरो गेरद ।
पामर दरा किम पावो रे, आ तो पूरण पद ॥ मु ॥ ७ ॥

ज्ञानीश्वर दिर पदम में रे, और नहीं आधार ।
अमृत मुनि चैन्दजी रे, वद वारम्वार ॥ मु० ॥ ८ ॥

(१९)

पूजो श्री पास कुँमार०, ए राह–

वसिया जा शिवपुर मझार,
मझार मोरे प्यारे ॥ व० ॥ टेर ॥

काल अनन्त की गति विछोड़ी,
तोड़ी जरायु तिवार ॥ ति० ॥ व० ॥ १ ॥

कर्म कलंक निकलंकपणे थई,
ममता रु मोह निवार ॥ नि० ॥ व० ॥ २ ॥

रूप अनादि सुसादिपणे लही,
ज्योति स्वरूप उदार ॥ उ० ॥ व० ॥ ३ ॥

लोकालोक प्रगट सवि जेहथी,
तारे कई नर नार ॥ नर० ॥ व० ॥ ४ ॥

सौख्यानन्द विलास सुभोगी,
नाथ तुंही निराकार ॥ नि० व० ॥ ५ ॥

आदि तुंही शिवगामी अनुपम,
अमृत को आप उगार ॥ उ० ॥ व० ॥ ६ ॥

(१७)

धुलेवा ऋषभजिन-स्तवनम् ।

काई रे गुमान करे रसिया०, ए राह–

आदि जिणदा प्रभु अविनाशी,
दरिशण द्यो मुगविरा वासी ॥ दी० ॥
दीनदयाल दया करके ॥ टेर ॥
मात मरुदेवीजी का नन्दा,
नाभिराया कुल पूनम चन्दा ॥ दी० ॥
नाथ धुलेवा नग्र विराजे,
शिर पर छत्र भामण्डल छाजे ॥ दी० ॥
सांवरी सूरत मूरति मन मोहे,
दर्शित दुरित सहु अघ खोहे ॥ दी० ॥ १ ॥
आज अगण अम्ब सुरतरु फलियो,
सकल मनोरथ पूरण मिलियो ॥ दी० ॥
गज असवारी मिले कुण छडी ?,
शीतल वाहन चढे कोण उमडी ? ॥ दी० ॥ २ ॥
मनगमता भोजन लही मेवा,
तिल खल चित लगे कहो केवा ? ॥ दी० ॥

कल्पतरू निज छोडी हाथां,
बावल जाय भरे कुण बाथां ? ॥ दी० ॥ ३ ॥

अवर देव चाहुँ नहीं सेवा,
नाथ धुलेवा देवाधिदेवा ॥ दी० ॥

सांची बांह ग्रही मैं तेरी,
आप हरो प्रभु आपदा मेरी ॥ दी० ॥ ४ ॥

युक्तें भक्ति करुं प्रभु तेरी,
अलग करो अष्ट कर्म है वैरी ॥ दी० ॥

वाट तुम्हारी हूँ वणी धारुं,
आ विनति अवधारी वारुं ॥ दी० ॥ ५ ॥

सांचा देव त्रिभुवन स्वामी,
आप हमारा छो अन्तर्यामी ॥ दी० ॥

अमृत की आ अरज स्वीकारी,
सूरिराजेन्द्र गुरुपद धारी ॥ दी० ॥ ७ ॥

(१८)

पद भैरवी—

नयना सफल भई प्रभु मोरी ॥ न० ॥ टेर ॥

नाभिराया मरुदेवी का नन्दन,
वन्दत सांज सवोरी ॥ न० ॥ १ ॥

रोम रोम आनन्द तनु विकसित,
हर्ष हिये हुलसोरी ॥ न० ॥ २ ॥
कचन वरण कोमल तनु काया,
माया मोह तज्योरी ॥ न० ॥ ३ ॥
अष्टापद ऊपर प्रभु शिवघर,
अनुपम वास वस्योरी ॥ न० ॥ ४ ॥
जगत जीत तुम्हारे दर्शन,
अमृत काज सरोरी ॥ न० ॥ ५ ॥

(१९)

जावो वना सन सव शहेर, सूरत मति जावजो०, ए राह—

दीठा दीठा सन देव, एसा नहीं देखीयाजी,
आदीश्वर अरिहन्त, प्रथम मे पेखियाजी ।
वर्ष दिवस न लीनो आहार,
थया व्रत धार, मुखे नहीं बोलिया जी ।
आव्या श्रेयासने घेर, वडी थई महेर,
करी नहीं देर, प्रभु कीनो पारणोजी ॥ १ ॥
मीठा मीठा अमीय समान, शेलडी रस व्होरियाजी ।
थया थया जय जयकार, वाजा घणा वाजियाजी ॥

हर्षित हुओ सब शहेर, वधाई घेर घेर,
सोनानो दिन ऊगियोजी ।
घडा वडा एक सो आठ, भर्या जंगी माट,
हुवा घणा थाट ॥ प्र० ॥ २ ॥

माता मरुदेवीजीरा नन्द, नाभिराय कुल तिला जी ।
देख्यो जगत दयाल, त्रिभुवन में तीलाजी ॥
युगला धर्म निवार, भवि हितकार,
प्रथम जिनवर कह्या जी
वर्ष दिवसनी भूंख, मांडी प्रभु वृक
पाया घणा सूख ॥ प्र० ॥ ३ ॥

तूं प्रभु आदि अनादि, धुलेवारो तुं धणी जी ।
दीजिये सुबुद्धि अपार, माया मुझने घणी जी ॥
राणी सुनन्दाना कन्त,
भजो भगवन्त, सुखरतन वीनवेजी ।
आखातीज तेवार, सुणो नर नार,
पाया भवनो पार ॥ प्र० ॥ ४ ॥

(२०)

गजल—राजुल पुकारे नेम पिया०, ए राह—

जिनराज तुं शिरताज, आज अर्ज धारी ले ।

फर्ज छे ए आपनी, मुजने तु तारी ले ॥ टेर ॥ १ ॥

अनादि मिथ्या पक्ष मे, प्रत्यक्ष आ फस्यो ।
सुधर्म पन्थ त्यागीने, कुधर्मभा धस्यो ॥ जि० ॥ २ ॥

नाच्यो चोराशी चोगटे, हेरान हुँ थयो ।
ससार जाल छोडके, मे शरण आ ग्रह्यो ॥ जि० ॥ ३ ॥

ऋषमेश तु दिनेश लेश, मोय निहारी ले ।
अत्युग्र मोह फासी से, मुझे उगारी ले ॥ जि ॥ ४ ॥

तारक देव तुझ विना, अन्य को नहीं ।
निहाले ठौर ठौर सन, स्वारथ के सही ॥ जि० ॥ ५ ॥

राजेन्द्रसूरि शासना, म शीर्षपे धरु ।
अमृत आनन्द कुण्ड मे, सुपान मे करु ॥ जि० ॥ ६ ॥

श्री अजितनाथजिन-स्तवनानि ।

(२१)

राग फागहोरी-सावरो सुखदाइ०, ए राह-

धर रे धर रे धर रे, प्रभु नाम हृदय में धर रे ॥ टेर ॥
जिन नाम से पाप हरत है, धवल मगल घर घर रे ।
सकल संपति आन मिले सब,
इच्छित पूरण कर रे कर रे कर रे ॥ प्र० ॥ १ ॥

प्रफुल्लित वदन विशाल मनोहर,
विलोकित लोचन ठर रे।
निरख निरख तोरे चरण पड़त हूँ,
तारक तूंही जिनवररे वर रे वर रे ॥ प्र० २ ॥
फागुण में होरी ऐसी खेलो,
अजितजिनन्द मन्दिर रे।
भाव भक्ति का रंग बना कर,
खेलत नारी अरु नर रे नर रे नर रे ॥ प्र० ३ ॥
समकित श्रद्धा से गुलाल उडाके,
कुमति कुटिल दूर कर रे।
सुमति सखीने साथे ले के,
मिथ्यात्व तम हर रे हर रे हर रे ॥ प्र० ४ ॥
द्रव्य भाव से होरी खेलो,
जिनपूजा दिल भर रे।
सूरिराजेन्द्र जिनेन्द्र के आगे,
मुनिअमृत स्तवना कर रे कर रे कर रे ॥ प्र० ॥५॥

(२२)

मोरा दे मईया वाला लागे छे तोरा जईया०, ए राह–

दयालु देवा! प्यारी लागे छे तोरी सेवा रे ॥ टेर ॥

नर नारी सह हर्ष धरीने, प्रभु को शीश नमावे ।
दरशन से दुख दूरे नासे, परमानन्द सुख पावे रे ॥द०॥१॥

रूप मनोहर उज्ज्वल कान्ति, देख जिया ललचावे ।
पल पल म प्रभु रटन रड म, छिन छिन मे चित आवे रे॥द० २॥

तारक हो त्रिभुवन के स्वामी, सेवक निशदिन ध्यावे ।
आवागमन निवारो जिनजी, मुज पर करुणा लावे रे ॥द० ३॥

जितशत्रु राजा के नन्दन, विजया मात्त हुलरावे ।
अष्ट कर्म अरि नाश करीने, अजितजिनन्द कहावे रे ॥द० ४॥

सवत उगणिसो अस्सी वर्षे, टाडा नगर सुहावे ।
सूरिराजेन्द्र चरणों का चाकर, मुनिअमृत पद पावे रे ॥द० ५॥

(२३)

भीलडीया पासजी, ए राह—

तारगा तातजी प्रभुजी मोहे तारो रे,
पतित भव सिन्धु से मोय पार उतारो रे ॥ टेर ॥

जितशत्रु रायना लाडला प्रभु, विजया राणी माय ।
गज लछन ओपे घणु हो प्रभु, कचन कोमल काय ॥ता०१॥

उन्नत साढा चार छे रे, देह धनुप परिमाण ।
लक्ष बहोत्तर आपनुं रे, आयु पूर्व वखाण ॥ ता० ॥ २ ॥

करुं सम्भवजिन वन्दन,
तिरादोगे तो क्या होगा ? ॥ नज० ॥ ५ ॥

सूरिराजेन्द्र गुरु नाणी, तिनों की मीठी है वाणी ।
अमृतने सांची दिल जाणी,
पिला दोगे तो क्या होगा ? ॥ नज० ॥ ६ ॥

(२५)

आज हजारी ढोलो प्राहुणो०, ए राह—

सम्भव जिनवर साहेबा, आप सुणो अरदास-ज्ञानी मोरा हो।
तुझ दरिशण दीठां थकां
उपनो मन उल्लास ॥ ज्ञा० सं० ॥ १ ॥

रमता तुम हम रंगसुं, दिन में दश दश वार ज्ञा० ।
नेह निहेजो थई रह्या,
वसिया शिव दरबार ॥ ज्ञा० सं० ॥ २ ॥

मुझ मन आस्या अति घणी, देखवा तुम दीदार ज्ञा० ।
चोल मजीठ तणी परे,
अनुपम रंग अपार ॥ ज्ञा० सं० ॥ ३ ॥

जिम चातक घन चित्तमें, मोरा मन जिम मेह ज्ञा० ।
तिम तुमसेती माहरो,
जाग्यो अधिक सनेह ॥ ज्ञा० सं० ॥ ४ ॥

जाणो छो प्रभु जगधणी, चउद लोकनो भाव ज्ञा० ।
मुझ मुखथी केती भणु,
आरित अधिक उपाव ॥ ज्ञा० स० ॥ ५ ॥

जग तारक मिलिया यदि, सफल फलि मन आश ज्ञा० ।
बालक जाणी वाहले,
दीजिये मोय दिलाश ॥ ज्ञा० स० ॥ ६ ॥

अखूट खजानो आपरो, देता अडलक दान ज्ञा० ।
याचक हुँ छु रावलो,
ऊभो सनमुख आन ॥ ज्ञा० स० ॥ ७ ॥

इतरा दिन अलगो रह्यो, छोडूँ नहीं हवे संग ज्ञा० ।
चन्द कुमुद परे मामलो,
दिन दिन दूणो रंग ॥ ज्ञा० स० ॥ ८ ॥

जाणु हु तारसो जगधणी, मनडे निसदीस ज्ञा० ।
काज सरे सेवक तणा,
महर करी जगदीश ॥ ज्ञा० ॥ स० ॥ ९ ॥

मोहम गणधर सुन्दरु, सूरिराजेन्द्र महाराज ज्ञा० ।
धनचन्द्रसूरि मोय दीजिये,
अमृत शिवसुख साज ॥ज्ञा० स० ॥ १० ॥

(२६)

श्री अभिनन्दनजिन-स्तवनम् ।

शासनपति वीर जिणंदा रे०, ए राह-

अभिनन्दन पूजो सुखकारी रे,
जिनदर्शण से भव पारी रे,
एतो अविचल पदवी धारी,
भविकजन ! अभिनन्दन सुखकारी रे ॥ टेर ॥ १ ॥

माता सिद्धार्थाएं जायो रे,
तात संवर कुलमें आयो रे।
मिल सुर नर हर्ष वधायो ॥ भ० । अ० ॥ २ ॥

नयरी कौशल्याने शोभाया रे,
करी ओच्छव आनन्द मनाया रे।
साढ़ी त्रणशो धनुपनी काया ॥ भ० । अ० ॥ ३ ॥

संसारना सुखने त्यागी रे,
शुद्ध चारित्र से लय लागी रे ॥
लही दीक्षा परम वैरागी ॥ भ० । अ० ॥ ४ ॥

पूर्वायु पचाश लाखनो जाणो रे,
कपि लंछन जिनके प्रमाणो रे।
वन्दो तीर्थंकर पद ठाणो ॥ भ० । अ० ॥ ५ ॥

कर्म खपावी केवल वरिया रे,
अतिशयवन्त गुणोना दरिया रे।
घणा जीवोने तारीने तरिया ॥ भ०।अ० ॥ ६ ॥

सूरिराजेन्द्रना गुण गावु रे,
कहे अमृत सदा सुख पावु रे।
मैं तो निशदिन प्रभुजीने ध्यावु ॥ भ०।अ० ॥ ७ ॥

श्रीसुमतिनाथजिन-स्तवन।

(२७)

मेरे मोला बुलालो मदीने मुजे०, ए राह—

भव्य ! सुमतिप्रभु का ध्यान करो,
जिनके नाम से सदा ही आनन्द धरो ॥ टेर ॥

प्रभुके परताप से, पाप पडल भग जायँगे।
आधार मारे जिनराज का, अवर देव को न ध्यायँगे ॥
मेरे आसरो एक तुमारो खरो ॥ भव्य० ॥ १ ॥

अतुल शक्ति के धणी हो, गुण जेहना कुण कह सके ?।
अखट ज्ञान दिवाकरु, थाग उसका कुण ले सके ? ॥
मेरे ज्ञान गुणो का भण्डार भरो ॥ भव्य० ॥ २ ॥

माता मगला देवी नन्दन, पिता मेघरथरायजी।

विनीता नगरी दीपाववा, त्रणसो धनुपनी कायजी ॥
मेरे संचित पाप संताप हरो ॥ भव्य० ॥ ३ ॥

आयु लाख चालीस पूरव, सब कर्मों को खपाय के ।
भक्त गणों का उद्धार करके, पहुंचे मुक्ति में जाय के ॥
ऐसे सुमति प्रभू के पाय परो ॥ भव्य० ॥ ४ ॥

जगत के उद्योत दाता, हो गए सूरिराजेन्द्रजी ।
शुभ आपके परताप से, मुनिअमृत सौख्य केन्द्रजी ॥
मेरे दुर्गुण दिल से दूर करो ॥ भव्य ॥ ५ ॥

(२८)

पास पूरो आस शुभ निजर करो०, ए राह—

प्रभू सुमति जिणंद, मेरी कुमति हरो ।
कुमति हरो मेरी कु० ॥ प्र० ॥ टेर ॥

सुमति लेवाने आयो छुं स्वामी,
दास जाणी कछु दया करो ॥ प्र० ॥ १ ॥

दुर्घट की रचना दूरे हटावी,
सुमति समर्पो सौख्य संपद वरो ॥ प्र० ॥ २ ॥

सुबुद्धि दायक स्वामी कृपालु,
ज्ञानी भरोसो मोय एतो खरो ॥ प्र० ॥ ३ ॥

तात त्रिभुवन नायक निरखी,
अमृत आनन्द मय मंगल वरो॥ प्र० ॥४॥

---

(२९)

श्री पद्मप्रभजिन—स्तवन ।

ख्याल की देशी में—

आज आनन्द बधाई,
प्रभु प्रगट्या रे लख्मणी गाम में ॥ टेर ॥

प्रगट प्रतापी पद्मप्रभुजी,
जाकी महिमा भारी ।
चारों देश में फैली कीरती,
अतिशय अपरम्पारी रे ॥ आ० ॥ १ ॥

सुसीमादेवी के नन्दन कहिये,
श्रीधर तात शिणगार ।
इन्द्र इन्द्राणी ओच्छव करते,
बोले जय जयकारजी ॥ आ० ॥ २ ॥

मनमोहन प्रभु मुखडो तुमारो,
जोता आनन्द थाय ।

६

भक्ति भाव से पूजा करके,
जन्म सफल हो जाय रे ॥ आ० ॥ ३ ॥

तारक जाणी त्रिभु चरणे आयो,
मुझ पापी को तारो।
ऐसा विरुद् है राज आपको,
मुजरो लीजो माहरो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥

देश देश का यात्रु प्रभु का,
दरशन करवा आवे।
विविध प्रकारे अंगियाँ रचीने,
पुन्य भण्डार भरावे रे ॥ आ० ॥ ५ ॥

आलिराजपुर के भाग्य बड़े हैं,
प्रभुजी आय विराजे।
प्रतापसिंह बहादुर के राज्य में,
यश का डंका बाजे रे ॥ आ० ॥ ६ ॥

संवत उगणीसे नेऊ वर्षे,
चैत्री पूनम आया।
पद्मप्रभु का दरशन करके,
अतिही हर्ष मनाया रे ॥ आ० ॥ ७ ॥
सूरिराजेन्द्रनी कृपा थकी रे,

सघ चतुर्विध आयो।
मुनिअमृत प्रभुजी के आगल,
भाव सहित पद गायो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥

---

(३०)

राग कल्याण—

प्रभु तेरो नाम सदा सुखदाई ॥ टेर ॥

नयन कमल दल आखडो अम्बुज,
देखत दिल हरखाई ॥ प्र० ॥ १ ॥

चदन सुकोमल कान्ति सुशोभित,
अनुपम रूप दिखाई ॥ प्र० ॥ २ ॥

समवसरण प्रभु पर्षद आगल,
ज्ञान की जोति जगाई ॥ प्र० ॥ ३ ॥

शिवपद दायक छो जगनायक,
लायक मुक्ति उपाई ॥ प्र० ॥ ४ ॥

सूरीश्वरराजेन्द्र प्रतापी,
अमृत गुण तुझ गाई ॥ प्र० ॥ ५ ॥

---

(३१)

श्री सुपार्श्वजिन-स्तवनम् ।

मेरे मौला बुलालो मदिना मुझे०, ए राह—

प्रभु दरशन दान दिलावो सही,
तोरे चरणों का दास बनावो सही ॥ टेर ॥

दीनदयालु आप जिनजी, दया दीन पर कीजिये ।
अर्ज मै करता हूँ तुमसे, सौख्यता मोय दीजिये ॥
मेरे दिलका तो दर्द मिटावो सही ॥ प्रभु० ॥ १ ॥

दिव्य दीदार देख कर, मेरा मन लोभा रहा ।
अब नहीं छोड़ूँ नाथ तुमको, चित्त लयलीन हो रहा ॥
अब तो प्रेम का प्याला पिलावो सही ॥ प्रभु० ॥ २ ॥

जग उद्धारक नाम तेरा, पतित को पावन करो ।
आये शरण जिनराज तेरे, निज हाथ शिर पर धरो ॥
मुझे मोक्ष का मार्ग दिखावो सही ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

भव भ्रमण बहुत किया है, सुख कहां देखा नहीं ।
मोह के जंजाल फंस कर, प्रतिपालक को पेखा नहीं ॥
अब तो चरण ग्रही को तिरावो सही ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

ब्रह्म ज्ञानी आत्म ध्यानी, हो गये इस काल में ।

राजेन्द्रभानु झलकवे, यतीन्द्र वोही चाल में ॥
मुनिअमृत पान करावो मही ॥ प्रभु ॥ ५ ॥

(३२)

श्री चंद्रप्रभजिन-स्तवनानि ।

मजा देते हैं क्या यार, तेरे बाल०, ए राह-

मिल गये चन्द्रप्रभु महाराज-
तारक नाम धरानेवाले ॥ टेर ॥

प्रभुजी छो दीनदयाल, जरी नेह निजर निहाल ।
हम सदा सेवक हैं बाल, तोरे दर्शन करने वाले ॥१॥

तुम्हारी मोहन मुद्रा प्यारी, देखी अखियां लोभाणी मारी ।
तुम छो सदा सुख दातारी, इच्छा पूरण करनेवाले॥मि०॥२॥

चन्द्रसम शीतल कहावे, एतो भवदुःख ताप मिटावे ।
जो निशदिन जिनको ध्यावे, उसको पार लगाने वाले॥मि० ॥३

जिनजी करुणा के भंडार, घणा जीवारा किया उद्धार ।
अब मुझ किंकरको तार, तारक बिरुद कहानेवाले ॥मि०४॥

किया रींगनोदे चौमास, उगणिसो इक्यासीये खास ।
सद् सघनी पूरी आस, आनन्द रंग वर्षानेवाले ॥मि०।५॥

गुरु सूरिराजेन्द्रजी धारो, है भूपेन्द्रसूरि गच्छ शिणगारो ।
मुनिअमृत के हितकारो, मारग शुद्ध बतानेवाले ॥ मि० ॥६॥

३३

राग कव्वाली—

चन्दा प्रभुजी प्यारे, उपकार के करैया ।
निशदिन तुम्हारा दिल में, ध्यान के धरैया ॥च०। टेर॥
अन्धार कूप मांहि, संसार में गिराहुँ ।
तुझ नामकी रस्सी ले, भवपार हो तरैया ॥ च० १ ॥
मजधार नाव मोरी, भव सिन्धु में परैया ॥
आधार नाथ तेरो, बेड़ा पार तो लगैया ॥ च० २ ॥
पडे हैं लार मोरे, करमन जो लरैया ॥
तुझ नाम नाल गोला, छोड़ा के हरैया ॥ च० ३ ॥
भूत सब प्रेत नासे, चर चोर सहु विनासे ॥
नहीं आवे कोइ पासे, तुझ नाम से हरैया ॥ च० ४ ॥
उद्वेग ध्वांक्षकारी, दरिसन सुशान्ति सारी ॥
अमृते दिल में धारी, गुणी ज्ञान के वरैया ॥ च० ५॥

---

(३४)

वतादे मोय डूगरिया०, ए राह—

चन्दा प्रभुजी से प्रीति लगी,
मन मोहन ध्यान धरु मे धरु रे ॥ टेर ॥
जनम समय सुर मिलि करे सेवा,
आनन्द हर्ष करु में करु रे ॥ च० ॥ २ ॥
चन्द्र वदन तनु शशि मुकुट धर,
कुडल कर्ण भरु में भरु रे ॥ च० ॥ ३ ॥
अशरण शरण है नाथ कृपालु,
लुली लुली पाय परु मे परु रे ॥ च० ॥ ४ ॥
जगजीवन जग नायक बन्धु,
सेव्या दुरित हरु में हरु रे ॥ च० ॥ ५ ॥
दुविध धर्म उपदेशक जिनजी,
अमृत चरण वरु में वरु रे ॥ च० ॥ ६ ॥

---

(३५)

श्री सुविधिनाथजिन-स्तवन।

काली कम्बलीवाले तुमको लाखो सलाम०, ए राह—

तीन भुवन का ईश, तुमको करुं परणाम ॥ टेर ॥

सांचा देव जाणी करुं सेवा,
सब देवों में श्रेष्ठ हो देवा-दीजो मुजे आराम ॥ ती० १ ॥

सुविधि सुबुद्धि आपरे मुझने,
अशुभ कर्म कापो कहे तुजने, आपो श्रेष्ठ मुकाम ॥ ती० २॥

करुणा सागर आप कहावो,
पापी पर करुणा लावो, तारक तुमारो नाम ॥ ती० ३ ॥

भव अटवी में दुख बहु पायो,
प्रभुजी तुमारे चरणे आयो,दीजे अभय सुदाम ॥ ती० ४ ॥

मुद्रा तुमारी अनुपम छाजे,
सुविधि जिनेश सियाणे विराजे, दरशण को है धाम ॥ ५ ॥

सूरिराजेन्द्रजी गुरु हमारो,
मारे शरणो राज तुमारो, पूरो अमृत की हाम ॥ ती० ६ ॥

(३६)

पिया मिलण के काज आज, योगन बन जाउंगी०, ए राह—

" प्रभू-मुक्ति रमणीके काज, आज संयमपद धायोंजी "

तुमे तजी संसार दुगंछा, लागी मोक्ष पन्थकी वांछा ।
और नहीं कोई अंछा रे, कर्मन को वायोंजी ॥ प्र० ॥ १ ॥

लही केवल केवलधारी, बैठे समवसरण मनुहारी ।
कही धर्म वदे उपकारी रे, नर नारी तार्योजी ॥ प्र० ॥ २ ॥

वरिया प्रभु तुमे शिववधु प्यारी, प्रणमे पय नित नर अरु नारी ।
अमृत नित बलिहारी रे, सहु कारज सार्योजी ॥ प्र० ३ ॥

(३७)

श्रीशीतलनाथजिन-स्तवनम् ।

हां रे मारे भरवा गईती तट यमुनारा तीरजो०, ए राह—

हांरे मारे शीतलजिननी सेवा बहु सुखकार जो ।
साची रे चितडाम लागी चाकरी रे लोल ॥
हांरे मारे नयना नन्दन निरखत थाय जो ।
ललना हो लोभाणी तुम गुण पाकरी रे लोल ॥ १ ॥

हांरे मारे ओलग तुमची हियडे अपरपार जो ।
आतुरता आखटली हो म्हो माहरी रे लोल ॥
हांरे मार विश्वप्रभाकर मिथ्या तिमिर हरनार जो ।
उज्ज्वल ज्योति अनुपमरूप मे ताहरी र लोल ॥ २ ॥

हांरे मारे अनिहड लाग्यो मुझ मन रग अथाग जो ।
चन्द कुमुद ज्यु साची जाणो प्रीतडी र लोल ॥
हांरे मार छोडुं नहीं हवे आपतणो सतसग जो ।
चोल मजीठ का रंगके जैसी रीतडी रे लोल ॥ ३ ॥

हांरे मारे देख्या देव अनेरा कोतुक नेक जो ।
रामा संग रमता भखता कई रुद्रने रे लोल ॥
हांरे मारे आक धतूरा भांग आरोगे मेख जो ।
मिथ्या भाषित वाक्य विलोक्या शूद्रने रे लोल ॥ ४ ॥

हांरे मारे जगमें तारक आप विना नहीं ओर जो ।
वल वल तो देखी रे करुणा न लावसो रे लोल ॥
हांरे मारे तो तुझ तारक साचुं जाणो नाम जो ।
घटसे किम करी जनताने मन भावसो रे लोल ॥ ५ ॥

हांरे मारे ओर नहीं कोई शिव मारगना दातार जो ।
सांची हुं सेवा करुं तन मन लागथी रे लोल ॥
हांरे मारे नेह निजर कर दृढरथ रायना नन्द जो ।
पाम्युं दरिसन दुर्लभ महोटा भाग्यथी रे लोल ॥ ६ ॥

हांरे मारे नन्दा नन्दन वन्दन करुं त्रण काल जो ।
भक्तिवच्छल उद्धरजो निज सेवक भणी रे लोल ॥
हांरे मारे सूरिराजेन्द्र अवतारी पंचम काल जो ।
अमृत गुण गाई रे प्रभु महिमा घणी रे लोल ॥ ७ ॥

(३८)

श्री श्रेयांसनाथजिन-स्तवनम् ।

राग सोरठ—

आज में प्रभूजी को दरिसण पायो ॥ टेर ॥
ढूढत ढूढत जग सहु फिरता,
नाथ निरंजन पायो ॥ आ० ॥ १ ॥
काल अनादि को पोते कल्मप,
सो सब दूर गमायो ॥ आ० ॥ २ ॥
जनम सफल भयो आज हमारो,
हर्षे शीष नमायो ॥ आ० ॥ ३ ॥
मगन भयो मेरो मन रग भीनो,
नेह नवल दिखायो ॥ आ० ॥ ४ ॥
अमृत आण अखण्ड प्रभु तेरी,
चरण कमल चित्त लायो ॥ आ० ॥ ५ ॥

(३९)

श्री वासुपूज्यजिन-स्तवनानि ।

राग नागमीरी—

प्रभुजी वासुपूज्य कृपाल रे,
थाहरी मनोहर मूरति मनवासी हो जिणदजी ।
अद्भुत दिव्य दिदार वाला रे,
तेग दर्शनसे चित उल्लासी हो जि० ॥ १ ॥

तुं ही जग तारन जिनराज रे,
करुणा निजर मोपे कीजिये हो जि० ।
तुम हो सुरतरु वेल वाला रे,
सेवकने वांछित दीजिये हो जि० ॥ २ ॥

द्वादशमा महाराज रे,
प्रत्यक्ष परचा पूरणो हो जि० ।
चरण ग्रही को तार वाला रे,
चिंता-दुखने चूरणो हो जि० ॥ ३ ॥

प्रभुजी तु मुज हीवडाहार रे,
सांचो स्वामी तुं खरो हो जि० ।
में तुम चरणों का दास वाला रे,
भवोदधि से उद्धार करो हो जि० ॥ ४ ॥

प्रभुजी ओगणीसे पच्यासिए,
चातुर मास कडोद में हो जि० ।
संघ में आनन्द वरताय वाला रे,
सदा सुख संपति परमोद में हो. जी० ॥ ५ ॥

प्रभुजी सूरीश्वर राजेन्द्रजी,
महि करो मुज ऊपरे हो जिंनदजी ।

अमृतमुनिने तार वाला रे,
प्रभु आगे अरजी उचरे हो जि० ॥ ६ ॥

(४०)

राह कव्वाली—

जिनेश्वर पारसा तेरी, सुरतीयाँ मन लुभाती है ।
अनुपम कान्ति है तेरी, जनों के मन सुहाती है ॥
नयनसे आज मे निरखी, हृदय मे प्रेमसे परखी ।
रसीली शिवबधु सरखी, हमारा चित्त चुराती है ॥१॥
सुरासुर इन्द्र नर कोडी, आवते दर्शको दोडी ।
करत हैं भक्ति कर जोडी, हमारे दिल सुभाती है ॥२॥
मुकुट मस्तक पर झलके, मणिमय हार गले चलके ।
काने कुंडल युगल मलके, हमारे मन लुभाती है ॥३॥
निजयराजेन्द्रसूरि नमते, शिवरमा साथ वो रमते ।
अमृत शुद्ध प्रेम से भजते, आनद मुझ मन लुभाती है ॥४॥

(४१)

मैत्रीरग लागो०, ए राह—

वासुपूज्यनी वंदता रे, लागो अनिहद नेह रे ।
जिनसु रग लागो ॥ टेर ॥

ओलग करवा आपरी रे, मुझ मन उलस्यो जेह रे ॥ जि० ॥१॥
चउ लख असी योनी में रे, फरियो काल अशेष रे । जि० ।
तुझ मुद्रा दीठां थकां रे, जाग्यो पुन्य विशेष रे ॥जि०॥२॥
सुप्रसन्न हो मुझ साहिबा रे, करजो नित जयकार रे ॥ जि० ॥
माहरे सघली वातसुं रे, अविहड़ एक आधार रे ॥जि०॥३॥
ध्यावे ते पावे सही रे, वांछित फल विस्तार रे ॥ जि० ॥
और न ध्यावुं आप विना रे, देव सहु विकार रे ॥जि०॥४॥
लागी माया ताहरी रे, जिम चातक घनगाज रे ॥ जि० ॥
दीठा चंपापतितणो रे, अमृत दरिसन आज रे ॥जि०॥५॥

(४२)

राग माढ–

वासुपूज्य किरतार जिणंद मोय तारो तो सही ॥ टेर ॥

रक्तवर्णमय काय तुम्हारी, सूरत तेज अपार ।
सौख्यानंद सकल सुखदाई, वांछित फल देनार ॥ जि० ॥१॥
दह दिशि द्युति प्रसरी परिघल, चिद्घन नाथ कृपाल ।
चम्पापति सुख संपत्ति अर्पित, मोहन मुक्तामाल ॥ जि० ॥२॥
सौख्यानंद के कन्द मनोहर, पूजित परमोत्कृष्ट ।
मृगमद कुंकुम केसर चन्दन, अर्चित अंग प्रविष्ट ॥जि०॥३॥

छिद्र कुकर्म निकन्दन निरखी, मिष्ट वयण रस पूर ।
सृष्टी सकल जनता उर वृष्टी, दृष्टि दुरगति दूर ॥जि०॥४॥
निज सेवक चरणांकित अमृत, आयो आप हजूर ।
पतित सिन्धु भव पार करो प्रभु, जाणी तात जरूर ॥जि०॥५॥

(४३)

राह माढ—

दयानिधि मिलीया तारणहार, श्री वासुपूज्य किरतार ॥टेर॥
गहन भवदरिया के माही, डूबी रह्यो हु तात ।
हस्त ग्रही शीघ्र तारज्यो स्वामी,
तु जग तारणहार, जरा जिन निजरे वो निहार ॥ द० ॥ १ ॥
कल्पतरु तणी ओपमा रे, वाछित फल देनार ।
चाकर चरणे राखीयो काह,
जाच्यो करुणाधार-प्रभु मुज विनतडी स्वीकार ॥ द० ॥२॥
जय जय जगदाधार रे, विश्व विभूषित संत ।
अष्टकर्म कष्ट नष्ट करीने,
श्रेष्ठ अक्षय पदवंत-भला तुम शिव सुन्दरी भरतार ॥ द० ॥३॥
शिवश्री लीला लहमा रे, अविचल स्थान विराम ।
किंकर कर जोडी कहे रे,
द्यो शिवमय धाम-सदा सुख शान्तिना करनार ॥ द० ॥४॥

सूरिराजेन्द्र मनमोहनो, श्री सौधर्म गणेश ।
सूरिधनचन्द्रपसाय थी रे,
अमृतानंद हमेश-सदा छो मंगलना करनार ॥ द० ॥ ५ ॥

(४४)

श्री विमलनाथस्तवनम् ।

केसरीयो कामणगारो०, ए राह-

विमलजिनंद सेवो सुखदाई, ज्यांकी सेव सदा मनभाई ।
कंपिलपुर कृतवर्म रायघर,स्यामा माई रे दर्श जिनको सुखदाई ॥१॥
माघशुक्ल तृतीया दिन जाया, दिशिकुँवरी मिल मंगल गाया ।
भावे करी सुर साथ सुमेरु नवराई रे ॥ द० ॥ २ ॥
संयम ले केवलपद पाया, विमल वाणी वसुधा वरसाया ।
आप तर्या प्रभु नाथजी, नर नारी तराई रे ॥ द० ॥ ३ ॥
संकट चूरो नाथ हमारो, आयो चरण अरजी अवधारो ।
अमृतविजय कहे साहेबा, भवपार उतराई रे ॥ द० ॥

(४५)

श्री धर्मनाथ-स्तवनम् ।

गरबी—

जिनवर धर्मनाथ जयकार के, धर्मने ध्यावता रे लोल ॥ टेर ॥

जिनवर धर्म थइ महावीर के, भवियण तारतो रे लोल ॥ १ ॥
जिनवर इन्द्र चौसठ करे सेव के, त्रिगडु रची करीरे लोल।
जिनवर त्रण गढ मणिमय सार के, पीठ ऊपर वरी रे लोग ॥ २ ॥
जिनवर मिलि तिहा पर्षद बार के, दइ प्रभु देशना रे लोल।
जिनवर सुणता सहु सुख पाय के, देश विदेशना र लोल ॥३॥
जिनवर छडे वैर विरोध के, समतारस भर्या रे लोल।
जिनवर केइ भवियण सजम धार के, मुक्तिवधू वर्या रे लोल ॥४॥
जिनवर रत्नपुरीना राय के, भानुकुले भला रे लोल।
जिनवर सुव्रत आपनी माय के, नित चढती कला रे लोल ॥५॥
जिनवर दरिसन दीठा उदार के, अनुपम वाहरु रे लोल।
जिनवर ललचाणो लक्ष वार के, मनडु माहरु रे लोल। ॥ ६ ॥
जिनवर मुरति महिमा विशाल के, शम दम गुणे भरी रे लोल।
जिनवर चैत्य गुडे सुखकार के, दुरगती अपहरी रे लोल ॥७॥
जिनवर सूरिभूपेन्द्र सगात के, वदित मन ठरी रे लोल।
जिनवर अमृत सुयस उचार के, आणा तुज वरी रे लोल ॥८॥

(४६)

श्री शान्तिनाथ स्तवनानि।

७

छोटासा बलमा, ए राह–

शान्ति फेलावी चारो देश प्रभु शान्ति जिनने ।
रोग दीया है हटाय प्रभु शान्ति जिनने ॥ टेर ॥ १ ॥

अचिरामाता कूंखे आय, सुर नर जय जय बोले,
तीन भुवन हर्षाय, प्रभु शान्ति जनमें ॥ २ ॥

छप्पन्न कुमारी आय, मंगलिक वधाइ गावे,
करती नाटक रंगरोल, प्रभु शान्ति जनने ॥ ३ ॥

चौसठ इन्द्र मिल आय, जिनजी के पाय नमीने,
मेरुपे जाय न्हवराय, प्रभु शान्तिजिनने ॥ ४ ॥

विश्वसेन घर मांय, प्रभू आप पधारे,
पूजित संघ समुदाय, प्रभु शान्तिजिनने ॥ ५ ॥

दीक्षा ले करत विहार, भविजिन तारणवाले,
कर्म खपाय केवल पाय, प्रभु शान्तिजिनने ॥ ६ ॥

मिला है शिवसुख राज, सूरिराजेन्द्र जिनने,
वंदित नित्य अम्मृत, प्रभुशान्तिजिनने ॥ ७ ॥

(४७)

हिन्दका डंका आलम मे वजवा दिया, ए राह—

शान्ति जिनेश्वर जग स्वामी, करुणा कर मुज अंतरयामी ।

तात त्रिभुवन घन नामी, चरणांकित सेवक शिर नामी ॥ टेर ॥

जग शान्तिप्रचारक तात तुहि, अचिरानीका नंदन आप ज्युंही।
मनमधर केवल सुख पामी ॥ क० ॥ १ ॥

घातिक कर्म घेरा सुनने, चिहु दिश में आय कटु तुझने।
हटवा दो आप हवे स्वामी ॥ क० ॥ २ ॥

किसपे करुणा डारोगे, भवसिन्धुसे पार उतारोगे।
अभिलाषा पूर्णपद नामी ॥ क० ॥ ३ ॥

रटना तुम नाम लगी मनम, जगदीश्वर तारोगे छिनम।
सदेह नहीं इसमें स्वामी ॥ क० ॥ ४ ॥

शान्तिकारक तुझ पाय महि, धारु निश्चय मन भाव यही।
अमृत नित शरणा शिवगामी ॥ क० ॥ ५ ॥

(४८)

माता मरुदेवीनो नंद, ए राह—

श्रीमत् शासन के सिरदार,
अखिल प्रभाकर शान्ति अनुपम, भारतीना भण्डार ॥ टेर ॥

सौम्य ममर्पी स्वय भूरधि मम, अनुभव अमृत धार।
शुभाशज्ज्वल यदुमद विश्रुत, प्रियवर भक्त उदार ॥ श्री० १ ॥

अधमश्रेणी अपनों मुन करो, अब निकृष्ट पन्थाय।

अज्ञान तिमिर हरन तुझ मुद्रा, दर्पित शिवसुखदाय ॥श्री०२॥

अधिवासन प्रालम्ब मनोहर, पूजित इन्द्र नरेन्द्र ।
चर्चित चंदन कुंकुम मृगमद, नाचत अप्सरावृन्द ॥ श्री० ३ ॥

पूरण कर प्रभु प्रभूत ज्ञानमय, ध्यान अखंडित ध्याय ।
सूरीश्वरराजेन्द्र समधिक, अमृत मुनि गुण गाय ॥ श्री० ४ ॥

(४९)

मुने भूकी गयो छे मारो छेलडो रे०, ए राह-

प्रभु शान्तिजिनंद मने तारज्यो, मने तारीने पार उतार
मारा नाथ ॥ शान्ति० ॥ टेर ॥

एक ध्यान धरुं छुं प्रभु ताहरुं रे,
दिल धारुं प्रभुने चित लाय, मारा नाथ ॥ शा० ॥ १ ॥

मुख दीठुं विशाल विभु आपनुं रे,
मारुं मनडुं हर्षित घणुं थाय, मारा नाथ ॥ शा० ॥ २ ॥

प्रभु मोही रह्यो छुं थारा रूपने रे,
जिम चातक चन्द्रने चाय, मारा नाथ ॥ शा० ॥ ३ ॥

कुकसीनगर रलीयामणुं रे,
प्रभु शान्ति जिणद छबी भाय, मारा नाथ ॥ शा० ॥ ४ ॥

सूरिधनचन्द्र हाल हीरो हिन्दनो रे,
मुनि अमृत लागे तम पाय, मारा नाथ ॥ शा० ॥ ५ ॥

(५०)

श्री जगतगुरु, तुज वन्दना करु०, ए राह—

जय शान्ति सुखकरा, अव्याबाध पद धरा,
शान्त दान्त छवि नितान्त, भ्रान्त भयहरा । टेर ।

मारीगद से अति आर्त्त अमित जन, ये पीडित अत्यत ।
चरणोदक से शान्ति प्रसारी, पावन करी जग जंत ॥ज०॥१॥

गर्भस्थित जगजीवन जिननी, कर्यो पूर्ण उपगार ।
रोग सोग दुख दूरे कीधा, वर्त्या जय जयकार ॥ज०॥२॥

अतुलबली प्रभु पचम चक्री, त्रिभुवन तारण भूप ।
तीर्थंकरपद भोगवी प्रीते, पाम्या मोक्ष अनूप ॥ज० ॥३॥

ओगणीसत मित्तर म, माडेराव मझार ।
गुरु आदेसे सघ आग्रह, किया चौमासा सार ॥ ज० ॥४॥

सूरिराज राजेन्द्र गोलमो, नित्य नमाऊं शीश ।
सूरि धनचन्द्र विजय वरतावो, अमृत आशीष ॥ज०॥५॥

(५१)

तोरी छलबल हे न्यारी०, ए राह—

प्रभु शान्ति करनार, त्रैलोक्य में सार।
दीजो दरस सरस, दुःख टारी हो नाथ ॥ टेर ॥
प्रभु धानेरे धिराज, जपे जगत समाज,
सारे वांछित काज, साज कारी हो नाथ ॥ प्र० ॥ १ ॥
जिनमुद्रा मन हरणी, शान्त रसनी झरणी,
शिव पंथ निसरणी, तरणी तारी हो नाथ ॥ प्र० ॥ २ ॥
मुख जोवा लय लागी, मिथ्या तिमिर भागी।
शुद्ध श्रद्धा हिये जागी, लागी थांरी हो नाथ ॥ प्र० ॥ ३ ॥
जिन ध्यान से सिद्धी, आवे अचिंत ऋद्धि ।
प्रगटे नवही निद्धि, वृद्धि सारी हो नाथ ॥ प्र० ॥ ४ ॥
प्रभु शान्ति जिनंद, माता अचिरा का नंद ।
विश्वसेन आनंद, चन्द्र थांरी हो नाथ ॥ प्र० ॥ ५ ॥
अरजी उर धार, मुझ अधम को तार।
ग्रह्यो तारो में लार, पार कारी हो नाथ ॥ प्र० ॥ ६ ॥
प्रीति प्रेमे लगाई, गफुर श्रेय सुख पाई ।
मोहन भक्ति सवाई, गाई तुम्हारी हो नाथ ॥ प्र० ॥ ७ ॥

गुरुराजेन्द्रसूरि, आशा अमृतनी पूरी ।
तेनो जगजस पूरी, भूरी वजारी हो नाथ ॥ प्र० ॥ ८ ॥

(५२)

जी हो माला पेरो जडावरी हो लाल०, ए राह—

जीहो शान्ति प्रभु साचो साहेबो हो राज,
ए तो शिवसुखना दातार हो जिणद,
थारा दरिसन म मन लागीयो हो राज ॥ टेर ॥
तुम दिनकर सम प्रभु दीपता राज,
तुम त्रिभुवन जन आधार हो जिनन्द ॥ था० ॥ १ ॥
तुही दु ख भनन चिन्तामणि हो राज,
तुही भवजल तारण नाव हो जिनन्द ॥ था० ॥ २ ॥
हु तो तारक जाणी आवीयो हो राज,
मे तो जिनजी क दरबार हो जिनन्द ॥ थां० ॥ ३ ॥
प्रभु अधम उद्धारण आप छो हो राज,
अब मुझ पापीने तार हो जिनन्द ॥ थां० ॥ ४ ॥
शान्ति जिनेश्वर भेटीया हो राज,
मे तो मॅमराद नगर मझार हो जिनन्द ॥ थां० ॥ ५ ॥
जीहो रस मुनि नव चन्द्र म हो राज,

किया चातुरमास सुखकार हो जिनन्द ॥ थां० ॥ ६ ॥

मैं तो सूरिराजेन्द्रने ध्यावसां हो राज,
वंदे अमृतमुनि वार हजार हो जिनन्द ॥ थां० ॥ ७ ॥

(५३)

राह—वणझारा

देखी श्याम सुन्दर छवी तारी,
भवि जीवों के हितकारी ॥ टेर ॥

जन्म हस्तिनापुर राजधानी, विश्वसेन नृप आचिरा राणी—
पिता कुल भूषण भारी ॥ भ० ॥ १ ॥

ज्येष्ठ कृष्ण तेरस दिवसे, अश्वनी नक्षत्र—जन्म हर्षेजी—
चालीस धनुष तनु धारी ॥ भ० ॥ २ ॥

प्रिय कंचनवण शरीर, टाली सकल जगजन पीरजी—
सब रोग सोग निवारी ॥ भ० ॥ ३ ॥

मृग लंछन लंछित स्वामी, करुणा वरूणा लय पामीजी—
टुक नेक निजर निहारी ॥ भ० ॥ ४ ॥

शिवरमणी सौख्य मोय दीजो, विनति आही ध्यानमां लीजोजी—
अब आयो शरण तुमारी ॥ भ० ॥ ५ ॥

सुणी राजेन्द्रसूरीश्वर वाणी, तुम तारक त्रिभुवन जाणीजी-
जन्म मरण दुख वारी ॥ म० ॥ ६ ॥
प्रभु सेंवरीया मे विराजे, करी दर्शन यात्रा आजेजी-
मुनि अमृत अनुभव धारी ॥ म० ॥ ७ ॥

(५४)

श्री कुन्थुनाथ-स्तवनम् ।

राह-लावणी

श्रीकुंथु जिनेश्वर प्रेम करीने ध्याउं,
तुम नामे सौख्य प्रधान सपदा पाउं ॥ टेर ॥
तीर्थपति जिनराज सतरमा सोहे,
तुझ मूर्ति मोहनवेल देख मन मोहे ।
जिन शान्ति सुधारस पूर नूर तनु जोहे,
विकसित ज्युं पूनम चन्द्र इन्द्र जग मोह-
तारे कई नर अरु नार शरण मे पाउं ॥ तु० ॥ १ ॥
मस्तक पर सोहे मुकुट कान म कुंडल,
हियडापे निरखत हार चन्द्र सूरज मंडल ।
केसर की अंगीया अतर गुलाल म जाकी,
फूला का शोभे हार गले जिनजी की-
चरणकमल म निशदिन शिष नमाउं ॥ तु० ॥ २ ॥

हरिहरादिक देव सकल धुतारा,
इण भवसायर में बहोत रुलावणवारा।
आप विना नांही और कोई आधारा,
तारो कहे अमृत तात त्रिभुवन प्यारा-
निशदिन सूरिराजेन्द्र ध्यान आप का ध्यावुं ॥ तु० ॥ ३ ॥

(५५)

मल्लिनाथ-स्तवन ।

महाराजा दर्श दो मोय,
दर्श की आशा अति ॥ टेर ॥

परमानंद कुंड तुझ मुद्रा,
निरखित विकसे नेन ॥ दर्श० ॥ १ ॥

परम कृपालु दयालु तुं दानी,
बंधु दीनजन सेन ॥ दर्श० ॥ २ ॥

मन पंकज तन पुलकित पल पल,
चाहुं चरण गुण चेन ॥ दर्श० ॥ ३ ॥

अतुल गुण रत्नाकर राजित,
जग दीपक सुख देन ॥ दर्श० ॥ ४ ॥

भवदव-ताप-संताप संहार के,
वारक सकल कुवेन ॥ दर्श० ॥ ५ ॥

करुणा वत्सल शिवसुख भोगी,
दीजो सहज सुवेन ॥ दर्श० ॥ ६ ॥

हु तुम चरण शरण में आयो,
तारो दयानिधि सेन ॥ दर्श० ॥ ७ ॥

सूरीश्वर राजेन्द्र उपासक,
मुनिअमृत चह एन ॥ दर्श० ॥ ८ ॥

(५६)

सन सटे में लुटा दिया०, ए राह—

जिणदा तोरे दर्श की लगी मोह प्यासा ॥ टेर ॥

लगी मोय प्यासा पूरो मेरी आशा,
तुम से मेरी प्रीति लगी, पानी मे पताशा ॥ जि० ॥ १ ॥

म जानु प्रभु मोसे मिलेगे,
आखिर हमारे दिल मे, यही निस-वासा ॥ जि० ॥ २ ॥

अपने मिलेगे अन्तरयामी,
तो सारे लोक मेरा करेगा तमासा ॥ जि० ॥ ३ ॥

दानी छो जग नायक दाता,
जाणी निज बालक दीजे दिलासा ॥ जि० ॥ ४ ॥

(५९)

रेखता-कव्वाली ।

अरज जिनराज है मेरी, भवों की भेट दो फेरी ॥ टेर ॥

हमारे भव खजाने को, खुटाना चाहिये तुमको ।
कुटिल गति कर्म की फेरी-भवों० ॥ १ ॥

तूंही त्रलोक्य को त्राता; तूंही जगजीव को भ्राता ।
बता दो शिवगति सेरी-भवों० ॥ २ ॥

किया में आप का दर्शन, करो मेरी आत्मा परशन ।
सुनी शक्ति अजब तेरी—भवों० ॥ ३ ॥

अहोनिश भावना भावुं, नमिजिन नाम को ध्यावुं ।
हटावो काठिया वैरी-भवों० ॥ ४ ॥

सूरिराजेन्द्र चरणों में, नमाया शीष अमृतने ।
खड़ा है मत करो देरी—भवो० ॥ ५ ॥

(६०)

श्रीनेमनाथ जिन-स्तवनानि ।

(राग—माढ)

प्रभु मत जावो छोडी लार, मारा आतमना आधार ॥ प्रभु०

समुद्रविजयजी को लाडलो रे, शिवा देवी को नंद ।
जन्म लियो यदुवंश में काई, परमानंदन कंद ॥ प्र० ॥ १ ॥

ब्याहन आए मलिमातसेरे, चतुरङ्गी सेना साथ ।
तोरण से रथ फेरियोजी काई, महिर करो मुझ नाथ ॥ प्र० २ ॥

स्यु अवगुण छे माहरो रे, छाडी अबला नार ।
आठ भवों की प्रीतडीजी काई, तोडी किम किरतार ॥ प्र० ३ ॥

दोनु गिरनार ऊपर रे, पाम्या केवलज्ञान ।
समवसरण देवे रच्यो काई, ध्यायो निरमल ध्यान ॥ प्र० ॥ ४ ॥

सोहमगण म गावतो र, सूरीश्वरराजेन्द्र ।
मुनि अमृत कहे नारमो काइ, मुज मोह महामद वृन्द
॥ प्र० ॥ ५ ॥

(६१)

मङ्गल्ना योगी ये मन माया लगावी०, ए राह—

शिवपुरना भोगी ए मन माया लगावी ॥ टेर ॥

ब्याह रच्यों रे वाला, मनक मजारी ।
यादव संग हरषावी रे ॥ शि० ॥ १ ॥

तोरण आवी वाला, चले रथ फेरी ।
पशु पशु का छुडावी रे ॥ शि० ॥ २ ॥

आठ भवों की वाला, प्रीति तुमारी।
नव में भव छटकावीरे ॥ शि० ॥ ३ ॥

पण नवि छोडुं वाला, संग तुमारो।
मत जावो जालमां फसावी रे॥ शि० ॥ ४ ॥

कुटुम्ब कबीला वाला, सब को ही छोड़ी।
मन में वेराग लावी रे ॥ शि० ॥ ५ ॥

संजम रङ्गावी वाला, प्रीति तो जोड़ी।
वरसीदान वरसावी रे ॥ शि० ॥ ६ ॥

नेम राजुल वाला, संजम लइने।
गिरनारे मोक्ष सिधावी रे ॥ शि० ॥ ७ ॥

सूरिराजेन्द्र वाला, अमृतमुनि को,
आप सिधाये ललचावी रे ॥ शि० ॥ ८ ॥

(६२)

खुने जिगर को पीती हूं०, ए राह—

मैं नेम विना नहीं शोभूंरे, झूंठा है घरवार ॥ टेर ॥

मैं उमेद दिल में धरती, शिणगार सजावट करती।
पीउ मिलणे में मन ठरती रे ॥ झूंठा० ॥ मैं नेम० ॥ १ ॥

पीउ व्याह रच्यो अतिभारी, यादव सब ले ले लारी ।
उमेद परणवा धारी रे ॥ झूठा० ॥ मैं नेम० ॥ २ ॥

तोरण से प्रभु छिटकाई, पशुओ की करुणा लाई ।
माहरी दया नहीं आई रे ॥ झूठा० ॥ मैं नेम० ॥ ३ ॥

निशदिन नेम को जोती, आखड़ा भर भर रोती ।
ना मिले हमारा मोती रे ॥ झूठा० ॥ मैं नेम० ॥ ४ ॥

आठों भव दिल प्रीति जोड़ी, नव में भव आपे तोड़ी ।
हु आवुगी लारा दोड़ी रे ॥ झूठा० ॥ मैं नेम० ॥ ५ ॥

राजुल नेम शिव वरिया, राजेन्द्रसूरि चित धरिया ।
अमृतना कारज सरिया रे ॥ झूठा० ॥ मैं नेम० ॥ ६ ॥

(६२)

श्री पार्श्वनाथजिन-स्तवनानि ।

राग दिण्डा में

दरिशन प्यारा र, द० प्रभु पास को गोडी पुरवारो रे ॥द०॥ टेर॥

अश्वसेन कुल कीर्ति समुज्ज्वल, आप हुये अवतारी र ।
नाथ निरञ्जन नील वरण तनु, जाउ बलिहारी र ॥द०॥१॥

अहि लंछन ओपे अति नीको, टीको नीलवट सोहे रे।
सुवरण अंगियां सोहती, देखी मन मोहे रे॥ दरि० ॥ २ ॥

कृपया पशु पर किये उपगारी, जलतो नाग जीवायो रे।
दिया मंत्र नवकार तभी, धरणेन्द्र बनायो रे॥ दरि० ॥ ३ ॥

सहस्र दिनकर सम तुझ कांति, सहुथी तेज सवायो रे।
दर्शित मुद्रा आपकी, मुझ मन लोभायो रे॥ दरि० ॥ ४ ॥

कलियुग कल्पतरु सम देवा, प्रत्यक्ष आशया पूरे रे।
अष्ट महा भय अलिय विघन, चिंता सहु चूरे रे॥ दरि० ॥५॥

वार अनन्ती भव अटवी में, नट्टुवा नाच नचायो रे।
तारक ततखिण तातजी, शरणे हुँ आयो रे॥ दरि० ॥ ६ ॥

पाटण प्रगट भई यवनां घर, मेघासा ने मिलिया रे।
गवडिपुर रे गून्दरे, मनवंछित फलिया रे॥ दरि० ॥ ७ ॥

गोडी पारस नाम प्रभावे, सौख्य अनर्गल पावे रे।
सूरिविजयराजेन्द्र शिष्य, अमृत गुण गावे रे॥ दरि० ॥८॥

(६३)

प्रभुजी हवे तुमचो आधार०, ए राह—

आश करी प्रभु पास चिन्तामण, मुझ मन अतिही लुभायो।

दरिशन खातिर दूर से दोडी, अब हुं शरणे आयो हो ॥प्र०॥
भवसायरथी तारो–आ अरजी अवधारो हो ॥ प्र० ॥ १ ॥

तारणहार तूही इण युग मे, अवर नहीं आधारो ।
तिणे अरजी करवा निजगरजी, आयो तुज दरबार हो ॥प्र०॥२॥

भारी करमा सेती भराणो, घातिक फोडा घाले ।
दुर्गति कारण दोला फिरिने, ऊभा आप निहाले हो ॥प्र०॥३॥

आठ करम आव्या मुझ आडा, चार दिहु दिशि हर ।
तरे ताण मचावी ततखिण, नर्क निगोद मे घेरे हो ॥प्र०॥४॥

कुमता कामणगारी नारी, तक तकनो रही तोले ।
तस्कर युगल आवी तिण वेला, आडा अवला बोले हो ॥प्र०॥५

पाचु ही जोध झपटो मारी, दुर्गतिमाही डुबावे ।
आयो तुझ चरणे अदाता, जोर जरा नहीं फावे हो ॥ प्र०॥६॥

इणिपरे बाधक माधक तोरो, लेवा आयो स्वामी ।
करुणादास उधारो कृपालु, नाथ सुण्यो घन नामी हो ॥प्र०॥७

ज्युं चातक चाहत घण म, कोकिल कठ चितारी ।
भाग्य शुभोदय भेट्या मे भावे, कर्म व्यथा हरो माहरी हो ॥प्र०॥८

ओलगडी सुणिये प्रभु एती, दायक सुगडा दीजे ।
ग्रिरिगजेन्द्र प्रतापी मघला, अमृत कारज सीझे हो ॥प्र०॥९॥

(६४)

घनघटा भुवन रंग छाया०, ए राह—

हांरे प्रभु तेवीसमां जिनराया, वामाजीरा जाया, सहु सौख्य पाया
हांरे तुमे कमठ हठी मद मार्यों, अहि जलतो आपे उगार्यों ॥
महा मंत्रे सुखी कर डार्यों, धरणेंद्र पद पाया,
आपे दिलाया ॥ हां० ॥ १ ॥

पछी पाम्या परम वैरागी, माया संसार के त्यागी ।
थया तीर्थपति वड़ भागी, केवल प्रभु पाया,
मुक्ति उपाया ॥ हां० ॥ २ ॥

हांरे तोरी मूरति मोहन वेली, आहोर नयरे अलवेली ।
हांरे प्रभु दर्शित अधिक गुण केली, जिणंद जगराया,
अमृत गुण गाया ॥ हां०॥ ३ ॥

(६५)

सियाजी से मिलण मंडोवर०, ए राह—

निरखित प्रभु पास, मेरो मन चाई ॥ टेर ॥

नवल नेह निरखी जिन मुद्रा, नवली प्रीति वनाई ।
नवल कुसुम परिमल कर प्रीते,
ता पर भमर झंकार जगाई ॥ नि० ॥ १ ॥

ज्यु जलमीन घटत जल सरवर, तड़फत है दिनराई।
त्यु मुझ चित हित जिनजी को,
क्षण भर अलग नहीं सुहाई ॥ नि० ॥ २ ॥

चकवी भानु ज्यु दिल चाहत, चातक जलधर माई।
अमृत आनन्द नित उर आनत,
चरण कमल चित लाई ॥ नि० ॥ ३ ॥

(६६)

बालम छोटो है०, ए राह—

अब तो पार उतार आयो शरणां मे ॥ टेर ॥

आयो चरणे आपरे, भवोदधि पार उतार।
विषयारस भूल्यो झूल्यो, आरत ध्यान अपार ॥ आ० ॥ १ ॥

काम क्रोध मद लोभ म, लपटाणो ससार।
मोह माया जजाल म, भमियो चौगमी मझार ॥ आ० ॥ २ ॥

छ काया म विराधिया, जीव अनन्ती वार।
सेव्या कुशील में अति घणा, जीत्या कपाय न चार ॥ आ० ॥ ३ ॥

आयो आतुर थई, देखण तुझ दीदार।
आज शुभोदय ऊगियो, मिलिया पास कुमार ॥ आ० ॥ ४ ॥

भाव घणे करी भेटिया, जिनशासन शिणगार ।
दरशनथी दौलत मिली, सेवकने संभार ॥ आ० ॥ ५ ॥

वामानन्दन वन्दतां, उपनो हर्ष अपार ।
वार वार करुं विनति, मुझ पापीने तार ॥ आ० ॥ ६ ॥

तीर्थपति तेवीसमा, मंत्रा नगर मझार ।
सदा सूरिराजेन्द्रजी, अमृत के आधार ॥ आ० ॥ ७ ॥

(६७)

राग सोरठ—

अब मोय पारस दरिसण प्यारो ॥ टेर ॥

वामादेवी जाया शिव पद पाया,
अज्ञान तिमिर हरनारो ॥ अ० ॥ १ ॥

तुझ दरिशन से दुरगति नासे,
पाम्या कई भव पारो ॥ अ० ॥ २ ॥

काल अनादि की फांसी तोडण,
एक तेरो ही आधारो ॥ अ० ॥ ३ ॥

परमातम अविचल पदगामी,
स्वामी अमृत सुधारो ॥ अ० ॥ ४ ॥

(६८)

राग आशाउरी—

हारे प्रभु पारस प्राण आधारो, मेटे जनम सफल हुओ माहरो ॥ प्र० ॥ टेर ॥

पारस पारस होत प्रसंगे, लोह कंचनमय सारो ।
शुद्धातम प्रगटे घट अन्दर, अनुभव ज्ञान उजारो ॥ प्र० ॥ १ ॥
ज्यु घन चातक चित्त वश्योरी, चंदन कुमुद समारो ।
तिम प्रभुजी से लगी मोरी नयना, नाथ निरञ्जन प्यारो ॥प्र०॥२॥
शम दम भाव प्रकाशक स्वामी, ज्योतिस्वरूप निहारो ।
सूरिराजेन्द्र अमृत कर सागे, भव भ्रमण निस्तारो ॥प्र०॥३॥

(६९)

राग भैरवो—

चालो जिन वन्दन को, प्रभु गोडिचा पारसनाथ ॥ टेर ॥
लाख चौरासी मे भटकत आयो, पायो नरभव आय ॥चा०॥१॥
और देव म बहुत ही ध्याया, काज न चढ़ियो हाथ ॥चा०॥२॥
पाम गोडीचा दर्शन मन की, पुगी रली भर वाथ ॥चा०॥३॥
अष्ट द्रव्य करी पूजन युक्तें, निर्मल करशा गात ॥ चा० ॥४॥
सूरिराजेन्द्रजी अमृत प्यारे, कीजे आप सनाथ ॥ चा० ॥५॥

(७२)

फाग होरी की देशी में—

जास्यां जातरा प्रभु पास जिनेसर की।
जास्यां जातरा ॥ टेर ॥
नर नारी मिलि दरिशन आया,
भाव सहित जिन ध्याया रे ॥ जा० ॥ १ ॥
मनमोहन तुम मूरति सारी।
सहश्राहि शिरछत्र धारी रे ॥ जा० ॥ २ ॥
जिन गुण गावो ने भावना भावो।
नर भवनो लेवो लावो रे ॥ जा० ॥ ३ ॥
अमिझरा पारस चिन्ता चूरे।
आशा सेवकनी पूरे रे ॥ जा० ॥ ४ ॥
राजगढ़ को संघ यात्रा आवे।
जिन मारग दीपावे रे ॥ जा० ॥ ५ ॥
मोहनमुनि मुनिमंडल साथे।
अमृतमुनि दरिसन आवे रे ॥ जा० ॥ ६ ॥
संवत उगणीसे छासठ वरसे।
फागुण वदि दशमी दिवसे रे ॥ जा० ॥ ७ ॥

(७३)

श्री महावीरजिन-स्तवनानि ।

गोरल ईश्वरजी केने तो हमसे बोल्नाजी०, ए राह—

प्रभुनी जईने वसिया शिव सौधममा रे
रह मादी अनन्त सुख मोदमा रे ॥ टेर ॥

तजकर ससार सर्वना मेवा,
प्रियतर अणहारक पद लेवा ॥
श्रेयकर शमरस रग रमवा,
गहवा अलोकिक सुग के मग्नमा रे ॥ प्र० ॥ १ ॥

तेह भाव अभिनव मूर्तिमा रे,
तुज दर्शित नयना हर्षे ॥
मनडु पूर्ण प्रेममा हुलसे,
पल पल रोमाचित अति निरसे ।
तद्रूर भावित गुन भावमा रे ॥ प्र० ॥ २ ॥

श्रीमहावीर वीर विभु शरणमा रे
आयो भवजल दुखथी डरवा,
तेरो परमालंबन धरवा,
शिव मंगलमाला वरवा,
दुक नाजी दया मुझे तारणा रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥

सोहे सोवनगढ़गिरे सेहरो रे,
प्रणमुं त्रिशलानन्दन स्वामी ।
सूरिराजेन्द्र गुणधामी, धनचन्द्रसूरि शिर नामी ।
मुनिअमृत आनंद निधि लेहरमां रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥

(७४)

राग गजल कव्वाली—

अरज है महावीरजी से, महीर करना चाहिये ।
विनवुं मैं जोड़ी कर प्रभु, हृदय धरना चाहिये ॥ टेर ॥
त्रिशला सुत वड़वीर तेरो, दरस में सुख होय मेरो ।
शरणें आयो साहिवा, उपकार करना चाहिये । अर० ॥१॥
तुम समा नहीं देव जगमें, दीठा सहु हट लालची मैं ।
एक ही आधार तेरो, पार करना चाहिये ॥ अर० ॥ २ ॥
जन्म मरण का दुख है भारी, कर्म अरि मुझ लागा लारी ।
दूर कर हम दास ऊपर, दया करना चाहिये ॥ अर० ॥ ३ ॥
राजगढ़ सहु संघ हर्षे, चातुर्मास आनन्द वर्षे ।
सूरिराजेन्द्रजी ! अमृत पर, स्नेह करना चाहिये ॥अर०॥४।

(७५)

गोपीचन्द लड़का०, ए राह—

आनन्द सवायो, ओच्छव अट्ठाई राजगढ़ शहर में ॥ टेर ॥

सुन्दर मूर्ति सुहामणी रे, अतिशय वती भारी ।
दर्शन से सब पातिक जावे, वीर प्रभु उपगारी रे ॥आ० ॥१॥
वर्द्धमान सुरतरु समो सरे, महिमानो नहीं पार ।
चिन्ता चूरण वाञ्छित पूरण, सेवो भवि हितकार र ॥आ०॥ २ ॥
वरघोडा नित्य साज सवारे, पूजा विविध प्रकारी ।
ओच्छव रग वधामणा सरे, भक्ति करे नर नारी रे॥ आ०॥ ३ ॥
ओगनीसे ओगणामीया मे, आसोज पूनम सुहाय ।
सूरिराजेन्द्र गुरु पसाये, मुनि अमृत यश पाय रे॥आ०॥४॥
गुरुदेव की भक्ति मे सरे, रतनलाल लोभायो ।
चम्पालाल रखभचन्द्र भावे, पूजा मे पद गायो र ॥ आ० ॥ ४ ॥

(७६)

रखे जिगर को पीती हुँ, बसगम में तोरे यार०, ए राह—
महावीर कृपा कर मोपे रे, तारो मोरा नाथ॥ टेर॥
तुम दरशण करवा आवुं, चरणो म शीष नमावु ।
मैं निशदिन तुमको ध्यावु रे ॥ तारो० ॥ १ ॥
जोइ अगणित रूप तुमारो, मनडो ललचाणो म्हारो ॥
है खरो आशरो ताहरो र ॥ तारो० ॥ २ ॥
चिंतामणि सुरतरु कहावो, प्रभु मुझ पर करुणा लावो ॥

डूबंताने पार लगावो रे ॥ तारो० ॥ ३ ॥

सुरने हरावी दीधो, चंडकोशिक उगारी लीधो।
महावीर नाम प्रसिद्धो रे ॥ तारो० ॥ ४ ॥

अरजी प्रभुजी सुण लीजो, सेवकने सदा सुख दीजो।
मनवांछित पूरण कीजो रे ॥ तारो० ॥ ५ ॥

सूरिराजेन्द्रजी तारी, मूरति लागे प्यारी।
अमृत के तुं सुखकारी रे ॥ तारो० ॥ ६ ॥

(७७)

छोटी वडी संइयांरे०, ए राह—

प्रभु वीर जिनेश्वर रे, दर्श दिखलावना ॥ टेर ॥

मात त्रिशलाके पूत कहलाओ हां पू०,
नयरी क्षत्रिकुण्ड रे, जनम प्रभु पावना ॥ वीर० ॥ १ ॥

मिले सुर ओच्छव मेरु शिखरपे मेरु०,
चरण अँगूठे रे, मेरु कंपावना ॥ वीर० ॥ २ ॥

संजम धर वर केवल दर्शन के०,
हर्षित सुरवर रे, त्रिगडुं रचावना ॥ वीर ॥ ३ ॥

द्वादश अंगी आप प्ररूपे आ०,
गणधर मिल कर रे, सूत्र गुंथावना ॥ वीर० ॥ ४ ॥

पचम काले शासन चाले शा०,
एकवीश सहस छे रे, जपे दीपावना ॥ वीर० ॥ ५ ॥
पावापुरी प्रभु मोक्ष पधारे मो०,
घरघर मगल रे, दीपक जलावना ॥ वीर० ॥ ६ ॥
पूरो मन आशा लगी मोय प्यासा ल०,
दर्श दिखाकर रे, हर्ष झुलावना ॥ वीर० ॥ ७ ॥
सूरिराजेन्द्र धन भूपेन्द्रराजे भू०,
अमृत मुनिवर रे, गुणी के गुण गावना वीर० ॥ ८ ॥

(७८)

राजन सुणजो रे०, ए राह–

प्रभु तारो गरीब निवाज, महावीर मुंछाला ॥ टेर ॥
राय सिधारथनन्दन नीका, त्रिशलादेवी जाया रे ।
छपन्न दिग्कुमरी हुलराया, मगल गीत गवाय ॥म०॥१॥
मेरु शिखर सुरपति नवरावे, स्नात्र करे जल धार रे ।
चरण अगूठे मेरु कपाव्यो, मोडे सुर मान अपार ॥म०॥२॥
वरसीदान वृष्टि वरसावी, अतुलवली दातार रे ।
सुर नर गण ओच्छव मनावत, लीधो सयम भार ॥ म० ॥३॥
चण्डकोशियो सर्प मल्यो, शूलपाणी लियो तारी रे ।

गुण हीणो गोशालो जलतो, आप लियो उगार ॥ म० ॥४॥
वचन उत्थापक वार्यो जमालि, नर्के जातो निहालि रे ।
किंकर पर करुणा कर गौतम, गणधर पदवी आलि ॥म०। ५॥
कार्तिक मास अमावस रजनी, पहुंचा ते परलोके रे ।
गुण गावे नर नारी सघला, मिल मिल थोके थोक ॥म०॥६॥
घांणेरावपुरि वर उद्याने, मूरति अति मनुहारी रे ।
दर्शित हर्ष अत्युत्तम उलसित, विकसित प्रेम उदार ॥म०॥७॥
मेदपाट नृप मूंछ दिखावी, प्रत्यक्ष परचो दीधो रे ।
घांणेराव महावीर मूंछाला, प्रकट्यो नाम प्रसिद्ध ॥मा०॥८॥
किरपा कर दरिसन में दीठो, चौवीसमा जिनराया रे ।
गुरु विजय राजेन्द्र पसाये, अमृतविजय गुण गाय ॥मा०॥९॥

(७९)

गजल–महोवतना कीजे जमाना बुरा है०, ए राह—

आयो तोरे चरणों में आश करी रे ॥ टेर ॥
सुयश तुमारा सांभली कांने,
तारक विरुद विचार वरी रे ॥आ०॥१॥
भवसिन्धू वीच पडी मोरी नैया,
आप तारेंगे मेरी बांह पकरी रे ॥आ०॥२॥

तू ही है भाग बली बड़भागी,
लागी मोरी लगना चन्द कुमुद परी रे॥आ०॥३॥
तें कई तार्या पार उतार्या,
विग्हन के मार्यो मे आयो फरी रे ॥आ०॥४॥
वीर जिणन्दा हरो भवफन्दा,
अमृत तुझ वन्दा चरण गरी रे ॥आ०॥५॥

(८१)

राह उपर की—

प्रभुजी तोरी वाणी मेरे मन मानी ॥ टेर ॥
प्रभुजी री वाणी अमिय समाणी,
पीवे कोई प्राणी मिले मुक्ति निशानी ॥प्र०॥१॥
वाणी पीवता पातिक नासे,
इम उपदेशे भवि केवलनाणी ॥प्र०॥२॥
पिता केरी शिक्षा पालण करतो,
अभावे करी जिणे सुणी जिनवाणी ॥प्र०॥३॥
श्रेणिक आगे ते सुरियो,
रोहिण चोर बचाइ निन्दगानी ॥प्र०॥४॥

है गुणखाणी सांची जिनवाणी,
जाके प्रभावे लही कइ राजधानी ॥प्र०॥५॥

अमृत अनुभव प्रेम का प्याला,
पिलाते सूरिराज गुरु बड़े ज्ञानी ॥प्र०॥६॥

(८२)

श्री विहरमानजिन-स्तवनम् ।

धन धन क्षेत्र महाविदेहेजी० ए राह—

प्रणमुं श्री जिनवर सदा जी, विहरमान जिन वीस ।
श्रीमंधर आदि सहु जी, तीर्थङ्कर जगदीश ॥
गुणवन्ता जिनजी, विनतड़ी अवधार ।
विचरन्ता प्रभुजी, वन्दु वारंवार ॥ टेर ॥ १ ॥

भवि मनोगत भावना जी, जाणो छो जगदीश ।
तुझ आगे प्रभु शी कहुं जी?, चरण नमावी शीश
॥ गु० वि० ॥ २ ॥

आप तर्या तारक सहु जी, करता भवि उपकार ।
ज्ञान दीपक दाता तुही जी, मुक्ति रमणी दातार
॥ गु० वि० ॥ ३ ॥

राज ऋद्धि आदि वली जी, मांगु नहीं तुम पास ।
दायक मुजने दिजीये जी, आप तीरे मुझ वास
॥ गु० वि० ॥ ४ ॥

आडा डूंगर अति घणा जी, नदीया नाला पूर ।
भरत रह्यो भक्ति करु जी, प्रह ऊगते सूर ।
॥ गु० नि० ॥ ५ ॥

इण भव आवे नहीं सकु जी, तुम दरिसन महाराज ।
सबल माचो को नहीं जी, लेवा शिवगति साज ।
॥ गु० नि० ॥ ६ ॥

सुणजो साहिब वन्दणा जी, वेकर जोडी ताम ।
अमृत सूरिराजेन्द्रना जी, मारो वछित काम
॥ गु० नि० ॥ ७ ॥

(८३)

श्रीनवपदस्तवनम् ।

आवो आवो पासजी मुझ मिलिया रे०, ए राह—

सिद्धचक्र सुखकारी रे, मै तो दरिसणरी बलिहारी रे ।
मै तो वारी जाउ वार हजारी—मजोरी सिद्धचक्र मान तुठा रे ॥
माहरे मोतीडे मेह वूठा ॥ स० सिद्ध ॥ टेर ॥ १ ॥

मे तो गुरु वचने तप कीधो रे, मनवछित फलवर लीधो रे ।
हुओ श्रीपालराय प्रसिद्धो ॥ स० सि० ॥ २ ॥

इण तप सम अवर न कोई रे, कीजो वली तन सुध जोई रे ।
जेहथी मनवछित फल होई ॥ स० सि० ॥ ३ ॥

निरधनने धन आले रे, दुख–दोहग रोगने टाले रे।
अपुत्रिया पुत्र निहाले ॥ स० सि० ॥ ४ ॥
आसु चैत में ओ तप कीजे रे, वली दान सुपात्रे दीजे रे।
शुद्ध विधि करी जाप जपीजे ॥ स० सि० ॥ ५ ॥
एहनी सेवा सदा सुखदाई रे, सूरिराजेन्द्र का ध्यान लगाई रे।
पामे अम्मृत शिवपद जाई ॥ स० सि० ॥ ६ ॥

(८४)

लावणी–री–राह—

सेवना नवपद सुखदाई, करो नित भवियण मन चाई ॥ टेर ॥
प्रथम पद अरिहन्त उपगारी, सदा गुण द्वादश के धारी।
अष्ट गुण सिद्धपदे राजे, दूजे पद प्रणमु शुभ काजे ॥
" आचारज तीजे पदे, गुण छत्तीश भण्डार।
पाठक पद चौथे नमो नित, पचवीस गुण आधार ॥ "
साधुपद पंचम सुखदाई ॥ करो भवि० ॥ १ ॥
सत्तावीस गुणे करी सोहे, विचरंता भवियण मन मोहे।
छट्टे पद दरिशण सुखकारी, भेद सतसठ करो धारी ॥
" गुण एकावन ओपतो, सप्तम पद श्री नाण।
सित्तर गुणसेती नित प्रणमो, आठमें चारित्र खाण ॥ "
नवमे पद तप नमो नित भाई ॥ करो नित० ॥ २ ॥

जपो पद ॐ ह्रीँ एक सारी,वीस पद गुणे नोकरवारी ।
आसु सुदि सातम से धारी, पूनम लग कीजे तप भारी ॥
" नव आयंबिल करी निर्मला, देववन्दन त्रण काल ।
पडिकमणा विधिसु दो करिये, जाप जपे उजमाल ॥ "
ध्यान शुध तन मन से ध्याई ॥ करो नित० ॥ ३ ॥
कर्यो तप मयणा श्रीपाले, आपदा कष्ट दूर टाले ।
लह बहु सपद सुखदाई, पूजना पग पग मे पाई ॥
" वरी आठ कन्या बले, नवमी मयणा जाण ।
नव पद की आराधन करता, पाम्या नवे निधान ॥ "
नव म भव मुक्ति पद पाई ॥ करो नित० ॥ ४ ॥

पूनम दिन प्रेम करो भक्ति, न्हवणवल पूरे निज शक्ति ।
मिठाई मेवा बहु लावे, चढावो अष्ट द्रव्य भावे ॥
" साढा चार वर्षा लगे, ओली तप करो एह ।
उद्यापन करता फल पावे, शिवपुर अमृत एह ॥ "
शरण धनचन्द्रसूरि लाई ॥ करो नित० ॥ ५ ॥

(८५)

श्रीआबूजिन–स्तवनम् ।

पाटण मे पचासरो०, " राह–

आबू शिखर सुहामणो, जिन प्रतिमा जयकार–मारा लाल ।
भवि भावे वन्दन करो, नित उठी नर नार मा० ॥आ०॥१॥

देलवाड़े जिन दीपता, जगदीश्वर जयकार मां० ।
पांचुं ही मन्दिर पेखतां, आनन्द अधिक उदार ॥ आ० ॥ २ ॥

उन्नत मेरु सम अति, मन्दिर महा मनुहार मां० ।
सुमेरुशिखर सोहे भला, ध्वज तोरण झलकार मां० ॥आ०॥३॥

केसर चन्दन मृगमदे, पूजो करी रंगरोल मां० !
अंगी नित चंगी करी, फिरती दोला-दोल मां० ॥ आ०॥४॥

अचलगढ़े जिन ओपता, सुवरण बिम्ब सोहाय मां० ।
भेट्यां भव भय दुःख टले, संपद सघली थाय मां० ॥आ०॥५॥

नकशी नीकी निरखतां, उपजे मन आनंद मां० ।
अर्बुदगिरि ओपम नहीं, जोतां जगदानंद मां० । आ०॥ ६ ॥

यात्रा युगते जे करे, आणी अंग उल्लास मां० ।
सोहमगण धनचन्द्रजी, अमृत गावे विलास मां० ॥ आ० ॥७॥

(८६)

श्रीगौतमस्वामी-स्तवनम् ।

पूनम चांदनी खीली०, ए राह-

वन्दो प्रह उठी प्रेमे करी रे, लब्धिवन्ता श्रीगौतम गणधार-
नमो नेह करी गुरुराजने रे ॥ टेर ॥

" मगध देश में राजग्रही, धण गुब्बर तिहां गाम ॥

निप्र वसुभूति कुले, पृथ्वी माता नाम ॥ "
जनम्या इन्द्रभूति नामे तिहा रे, भणिया भारतीना भण्डार-
॥ न० ॥ १ ॥

" पावापुरी प्रभु वीरजु, समवसरण सुखदाय ।
आवी इन्द्रभूति तिहा, निज संसय छेदाय ॥ "
दई दीक्षा प्रभु श्रीवीरजी रे, थाप्या प्रथम गोतम गणधार-
॥ न० ॥ २ ॥

" जावजीव छठ तप करी, पाम्या लब्धि प्रधान ।
अष्टापद ऊपर चढी, वाद्या श्री जगभान ॥ "
तापस पनरसो प्रतिबोधीने रे, दीधो अखूट लब्धिये करी आहार-
॥ न० ॥ ३ ॥

" दीवाली दिन वीरजी, पाम्या पद निरवाण ।
प्रात समे पाम्या गुरु, गोतम केवलनाण ॥ "
ओच्छव इन्द्रादिक आवे कियो रे, विचर्या केवल वर्ष बार-
॥ न० ॥ ४ ॥

" अनेक जीव तारी तर्या, मोक्ष पन्थ निरवाण ।
गोतम गणधर सेवता, जनम सफल सुविहाण ॥ "
सोहम तपगण सूरि धनचन्द्रजी रे,
अमृत गावे गुण अतिमनुहार, नमो नेह धरी गुरुरायने रे
॥ न० ॥ ५ ॥

(८७)

श्री वहीमंडन-पार्श्वनाथ-स्तवनम् ।

सिरकार थांने किणविधिसुं विलमाय०, ए राह—

सिद्धराज तोरा दरिशणथी लोभायो मोरा स्वाम ।
सिद्धराज हो भव तरिया जिनराज हो भव० ॥ टेर ॥

वहीपारस महिमा वड़ी रे, परतिख सांचो देव ।
सिधराज तोरी सेवा सुर नर सारे मोरा राज ॥ सि० ॥ १ ॥

पारस प्रभु का नामसुंरे, अरि विघन रहे दूर ।
सिद्धराज महारी आवागमन निवारो मोरा राज ॥ सि० ॥ २ ॥

जगमें जस प्रभु आपनो रे, अविचल सुक्ख निवास ।
सिद्धराज मेरा वंछित कारज सारो मोरा राज ॥ सि० ॥ ३ ॥

पारस का परसंगथी रे, लोह कनक हो जाय ।
सिद्धराज वेगे मुझ पापीने तारो मोरा राज ॥ सि० ॥ ४ ॥

चिन्तामणी चित चंदलो रे, दासनी आशा पूर ।
सिद्धराज मेरी आ अरजी उरधारो मोरा राज ॥ सि० ॥ ५ ॥

संघ सकल मंदसोरनोरे, करी यात्रा मनुहार ।
सिद्धराज मुनि यतीन्द्रविजयजी लारां मोरा राज ॥ सि० ॥ ६ ॥

सप्त शत्रु निधि चन्द्रमे रे, मृगशिर शुदिनी त्रीज ।
सिद्धराज भेट्या भव दुःखभजन हारो मोराराज ॥ सि० ॥ ७ ॥
सूरिराजेन्द्रनी आसतार, अमृतमुनि को खास ।
सिद्धराज मारे अतुल आसरो तारो मोरा राज ॥ सि० ॥ ८ ॥
जनकपुरानी मडली रे, गुरु गुण गायन लीन ।
सिद्धराज तोरी भक्ति नित्य करनारो मोरा राज ॥सि० ॥ ९ ॥

(८८)

श्री मोहनखेडामडण-स्तवनम् ।

तमे जो जो न वायदा वितावजो हो पिउ०, ए राह—

तुमे आवजो आवजो आवजो हो,
सब मोहन खेडे वेगा आवजो ॥ टेर ॥
आसोज काती चैत्रे आवजो,
पूनम दिवसे मलो मडावजो ।
तुमे प्रभुनी भक्ति करावजो हो—सब मोह० ॥ १ ॥
ओच्छव करके आनन्द मनावजो,
प्रभुजी के आगल पूजा भणावजो ।
तुमे विध-विध अगिया रचावजो हो—सब मोह० ॥ २ ॥
दरशन कर तुमे भावना भावजो,

नव नवा नाटिक गायन गावजो ।
तुमे पुन्य भंडार भरावजो हो–संघ मोह० ॥ ३ ॥
पहेला प्रभुने भेटवा जावजो,
पार्श्वप्रभुने मनमें ध्यावजो ।
गुरु–मूर्ति देखी सुख पावजो हो–संघ मोह० ॥ ४ ॥
सूरिराजेन्द्र दर्श दिलावजो,
चैत्रीपूनम यात्रा आवजो ।
निअमृतने हरपावजो हो–संघ मोह० ॥ ५ ॥

(८९)

गुरुगुणपद । राग–माच की हजूर–

चालो २ जातरा चालो, मोहन खेडे चालो माहरा राज–
सूरिराजेन्द्र गुरु की जातराजी राज ॥ टेर ॥
आठ दिवस अठाई महोच्छव,
पूजन ठाठ मचायो हो सूरि० ॥ चा० ॥१॥
देश देशांतर पड़हो वजायो,
संघ सकल हरपायो मां० ॥ चा० ॥ २ ॥
ओच्छव राजगढ़े संघ ठायो,
भविजन मनमें भायो मा० ॥ चा० ॥ ३ ॥

इन्द्रध्वजा वरघोडो नित्य को,
शहेर मे आनन्द छायो मा० ॥ चा० ॥ ४ ॥
सूरिराजेन्द्र की भक्ति करते,
मनुष्य जन्म फल पायो मा० ॥ चा० ॥ ५ ॥
विरह आपको सह्यो नहीं जावे,
जल बिन कमल सुकायो मा० ॥चा० ॥ ६ ॥
वेद रसाके इन्दु सप्तमी,
सुदि पोष मन भायो मा० ॥ चा० ॥ ७ ॥
जय जय सूरिराजेन्द्र वधायो,
अमृतविजय गुण गायो मा० ॥ चा०॥८॥



कुटुम्ब कबीलो पोषियो रे, प्राणी सहु खावे ।
स्वारथियो संसार ॥ चे० ॥ आ० ॥
हीरो हार्यो हाथसु रे, प्राणी पिछतावे ।
मूरख जेम कुम्भार ॥ चि० ॥ आ० ॥ मा० ॥ ४ ॥
मारो मारो कर रह्यो रे, प्राणी क्यु गावे ?,
भरिया बहु भंडार ॥ चे० ॥ आ० ॥
साथ न कुछ भी चालसी रे, प्राणी सुण भावे ।
कूच करेला तिण वार ॥ आ० ॥ ५ ॥
गाड़ी भरिया इन्धना, थारे भग लावे ।
नन भगी कपड़ो ओढाय ॥ म० ॥ आ० ॥
सजन बोलावा सामठा रे, सहु मिल आवे ।
थारो जल थल खाख उडाय ॥ चे०॥ आ० ॥मा०॥ ६ ॥
हार्यो हाथ न आवसी, ज्यानी भव जावे ।
लाख चौराशी मझार ॥ चे० ॥ आ० ॥
सुरद्रुम कुसुम उखाडीने रे, प्राणी कुण वावे ?,
आक धतूरा घरबार ॥ चे० ॥ आ० ॥ मा० ॥ ७ ॥
एहवुं जाणी चेतजो रे, प्राणी सुख लावे ।
करो जिनधर्म उदार ॥ चे० ॥ आ० ॥ मा० ॥

त्रिकरण शुद्ध आतमा, ज्ञानी लय लावे ।
पामो ते भवपार ॥ चे० ॥ आ० ॥ मा० ॥ ८ ॥

धनचन्द्रसूरिनी वाणिये. ज्ञानी रस लावे ।
श्रद्धा सांची धार ॥ चे० ॥ आ० ॥

भजन किया भव दुःख टले, ज्ञानी .शिव पावे ।
सुन्दर बेड़ा पार ॥ चि० ॥ आ० ॥ मा० ॥ ९ ॥

(२)

गमाणी मारी ईंडाणी, ए राह—

मारा चेतन चतुर सुजाण, सुणो एक शीखड़ली ।
इण शीखड़ली रे कारणे,
मारा सद्गुरु भाषे वाण ॥ सु० ॥ चे० ॥ टेर ॥

चेतन इण संसार में रे, धर्म चिन्तामणि जान ।
धर्म पन्थ साधन विना कांई, निहचे नरक की खाण
॥ सु० ॥ चे० ॥ १ ॥

काया काची माया झूंठी, मत कर ममता प्यार ।
प्यारी नारी कामणगारी, दुर्गतिनी दातार
॥ सु० ॥ चे० ॥ २ ॥

कोड़ी कोड़ी भेली करके, भरिया अखूट भण्डार ।

रतन जडित आभूषण भारी, साथ न आवे लगार
॥ सु० ॥ चे० ॥ ३ ॥

रात दिवस धन्धा मे रुलियो, धर्म न कियो लिगार ।
यमरा दूत झपटमी पल मे, रोता न गरुण हार
॥ सु० ॥ चे० ॥ ४ ॥

काम क्रोध मद लोभ तजीने, लालच लोभ निवार ।
क्षमा शील तप शुद्धि करता, पामेला भव पार
॥ सु० ॥ चे० ॥ ५ ॥

दान सुपात्र दियो भव पिछले, शालिभद्र गोपाल ।
रमणी बत्तीस बत्तीस कोड़ी, पाम्या ऋद्धि विशाल
॥ सु० ॥ चे० ॥ ६ ॥

खधक रुचिनी खाल उतारी, पील्या पाच से शिष्य ।
अरणिक शीष वींटिया बादर, मार्यो झाझरियो मुनीश
॥ सु० ॥ चे० ॥ ७ ॥

खेर अगारा शिर पर भरिया, बाधी माटी पाल ।
चावण शीप विदार्यो पल मे, एवन्ति सुकुमाल
॥ सु० ॥ चे० ॥ ८ ॥

क्षमा गुणेकरी रवते पाम्या, निरमल केवलनाण ।

शिवसुख पद वरिया सहु युक्ते, पाम्या पद निर्वाण
॥ सु० ॥ चे० ॥ ९ ॥

शील गुणे करी सीता नारी, अग्निकुंड मझार।
झंपा लेत तिरे वा जल में, साख भरे संसार
॥ सु० ॥ चे० ॥ १० ॥

तपस्या ए तारी निज आतम, ततखिण इण संसार।
भावें करि भवजल उद्धरिया, धन धन ते अणगार
॥ सु० ॥ चे० ॥ ११ ॥

शीख सूरिधनचन्द्र गुरु की, धारो सहु नरनार।
सुन्दर कहे भवि शीखड़ली सुं, पामोला भव पार
॥ सु० ॥ चे० ॥ १२ ॥

(३)

वीर कहे रे गौयम सुणो०, ए राह—

सद्गुरु वाणीने सांभलो, सहु भवि चित लाई रे।
काल अनन्ता संसार में, चेतन रुलियो जगमाई रे ॥स०॥१॥

नर्क निगोद की वेदना, खमतां पार न पायो रे।
पृथ्वी पाणी तेउ वली, वायुकाय में सिवायो रे ॥स०॥ २॥

छेदन भेदन वेदना, वनस्पति में उपाई रे।
बि ति चउरिंदी घात में, संकट बहुलो पाई रे ॥ स० ॥ ३ ॥

पूरव पुन्य पसायथी, आरज क्षेत्रे अवतरियो रे।
श्रावक कुल मे आय के, श्रद्धा गुणे करि भरियो रे ॥स०॥४॥

श्रद्धावन्त जे समकिती, जे जिन धरम आराधे रे।
कर्म कष्ट दूरे हरी, आतम कारज साधे रे ॥ स० ॥ ५ ॥

ऋषि एवन्ति श्रेणिक वली, धन्ना शालिभद्र पायो रे ॥
श्रद्धावन्त थइ केवली, निश्चय कर्म खपायो रे ॥ स० ॥ ६ ॥

श्रद्धा रहित जे प्राणिया, रुलिया जग ससारो रे।
लही अशाता इण भवे, पहुचा नरक दुवारो रे ॥ स० ॥ ७ ॥

श्रद्धा सहित जे तप करी, दृढ ध्यान आराधे रे।
लह सुशाता इण लोक मे, सुरगति शिवसुख साधे रे ॥स० ८॥

एहवु जाणीने कीजिये, साची श्रद्धा सुभावे रे।
सुन्दर श्री धनचन्द्रजी, आणा शीष नमावे रे ॥ स० ॥ ९ ॥

(४)

रसोयारी राह—

त्यागो भवियण कलह कुकर्मने ॥ टेर ॥

चेतन तजिये करी मन मवरी, कलह करमनो बन्ध सुज्ञानी।
भवदव ताप सतापे जीवने, खून मचावे धन्ध सुज्ञानी त्या० १

१०

सुखरी करता आश सुज्ञानी, कलह करंता जगमें जीवड़ा।
पामे पूरो त्रास सुज्ञानी, त्यागो भवियण० ॥ २ ॥

प्रीति प्रजाले पूरवलि सहु, नीति न राखे ठाम–सु० ॥
धरम करम शुद्ध बुद्ध न सांभरे, निन्दे लोक तमाम
॥ सु० ॥ त्या० ॥ ३ ॥

भय पामे अति दुर्भग राजरी, दण्डे द्रव्य ले तेह––सु० ।
तन शोषे वली खून पीवे सहु, कृश थाय निज देह
॥ सु० ॥ त्या० ॥ ४ ॥

झूंठो कलह मिथ्यात्व दूरे करो, जेहथी लहो सुखरास–सु० ॥
संवर भावे रे कइ शिवगति लही, पाम्या अमर सुवास
॥ सु० ॥ त्या० ॥ ५ ॥

कलह निवारी बाहुबली लियो, संयम संवर धार–सु० ॥
केवल लही निज आतम ऊजले, पाम्या भवजल पार
॥ सु० ॥ त्या० ॥ ६ ॥

सोहम तपगण सूरि धनचन्द्रजी, भाषे इणि परे वाण–सु० ॥
अमृत कहे भवि सांभली सर्दहे, सतयुग में सहिनाण
॥ सु० ॥ त्या० ॥ ७ ॥

(५)

भूल मन भमरा क्यु भम्यो, ए राह—

सुण चेतन मुझ वातडी, परनारीने त्यागो ।
शीयल सख्णा पालजो, चौथो व्रत महाभागो ॥ १ ॥
प्रीतडली परनारीनी, करता दुर्गति पावे ।
अपयश जगमें अतिघणो, नहुलो दुख आवे ॥ प्री० ॥ २ ॥
कामिणी नहीं आ कूतरी, झूठो स्नेह दीखावे ।
दुर्गतिनी दातार छे, विन मोत मरावे ॥ प्री० ॥ ३ ॥
उत्सुक मन निशदिन रहे, नयणा निंद न आवे ।
अन्नपाणी भावे नहीं, पापे पिंड मरावे ॥ प्री० ॥ ४ ॥
क्षण सेरी वली महिये, भडी भटकावे ।
द्रव्य लूटी ले आपणो, फिर हाथ नहीं आवे ॥ प्री० ॥ ५ ॥
प्रीतडली करता थका, पत लज्या गमावे ।
दुर्भग दुखावे जीवने, निहचे नरक लेजावे ॥ प्री० ॥ ६ ॥
इन्द्र सरिखा अथडाविया, अनरथनी करनारी ।
रावण सरिखा राजवी, हुई बहुत खुवारी ॥ प्री० ॥ ७ ॥
इम जाणी अलगी तजो, पर रामा रंगे ।
धरिराजेन्द्रनी देशना, अमृत नित चंगे ॥ प्री० ॥ ८ ॥

(६)

मेहताजी रे सुमहिमोल०, ए राह—

चेतनजी रे ओ संसार असारो, ज्यामें फोकट ज्युं फसनारो।
नहिं पावो रे, भवि तुमे वारंवारो, मनुष्य जनम अवतारो ॥टेर॥

वहु दुर्लभ से तुमे पाया रे, दृष्टान्त दशे करी आया रे।
सुख पाया रे आरज देश मझारो ॥ ज्या० ॥ १ ॥

मोह मद में मति राचो रे, आ काया जिसो घट काचो रे।
जिम सांचो रे पाको पान खरनारो ॥ ज्या० ॥ २ ॥

झूंठी या जगकेरी माया रे, जैसी वादलकेरी छाया रे।
लोभायारे अल्प सुखे दुख खारो ॥ ज्या० ॥ ३ ॥

सङ्ग आवे नहीं घर गाड़ी रे, प्रेम विलुद्धी लाड़ी रे।
रहे ठाड़ी रे, कहे प्राणपति मुझ प्यारो ॥ ज्या० ॥ ४ ॥

रडती अति कल कलती रे, वा सङ्ग नहीं कोई जलती रे।
वलवलती रे, देख अगन की झारो ॥ ज्या० ॥ ५ ॥

स्वार्थतणी सगाई रे, कर देखी सघले भाई रे।
धन खाई रे, याद नहीं करनारो ॥ ज्या० ६ ॥

कर संबल सुकृत रंगे रे, तोरे वोही चलेंगे सङ्गे रे।
शिर नंगे रे, भोर सही चलनारो ॥ ज्या० ॥ ७ ॥

इम आगममाहे भाखे रे, संसार अथिरता दाखे रे।
सुख पाखे रे, पाशमा नहीं पड़नारो ॥ ज्या० ॥ ८ ॥

सूरिराजेन्द्रसद्गुरु वाणी रे, मुनि अमृत साची जाणी रे।
गुणखाणी रे, पीवे सहु नर नारो ॥ ज्या० ॥ ९ ॥

(७)

ख्याल री देशी में

देखी दुनियारी घटना, रटना रामत में चेतन रम रयो ॥टेर॥
माया मारी मत कर मूरख, थाहरी अश न भेद।
काया थारी कदीयन चेतन, क्यु करता है उमेद रे ॥दु०॥१॥

काया यतन करे थु राखे, साबुन से नवरावे।
सग चले नहीं ताहरे चेतन, फिर पीछे पिस्तावे रे ॥ दु०॥२॥

माता पिता सुत दारा सङ्गे, रङ्गे प्रीती लगावे।
जन जावेंगे नगे अगे, सङ्ग कोई नहीं आवे रे ॥ दु० ॥ ३ ॥

कूड कपट कर झपट लगा कर, पापी पईसो लायो।
खर्च करे अणनाण्यो एक दिन, कुछ भी काम नहीं आयो रे
॥ दु० ॥ ४ ॥

कामणगारी नारी थारी, दिन घोले निसरायो।
फूला हन्दि सेज तिहारी, और भमर लोभायो रे ॥ दु०॥ ५ ॥

अमृत मुनिवर इणिपरे भाषे, सुणजो लोक तमाम।
श्रावकरी करणी में चालो, तजलो ए सहु काम॥ श्रा० ॥१५॥

(९)

जम्बूस्वामी की सज्झाय।

मोरी मातजी०, ए राह—

चेतनजी—ओ संसार छे कारमो,
सांचो धारमो थावर वारमो।
ज्यामें झूंठ न जाण रती एक प्रमाण,
भाषे केवली नाण माहरा मित्रजी॥ १ ॥

चे०—महेल अटारी गाड़ीयां,
वाग वाड़ियां, ठंडी झाड़ियां।
छिनमें जावेला छूट, वहां चाले ना झूंठ,
हाका मचावेला लूंट ॥ मा० ॥ २ ॥

चे०—भाई वाप लाड़ी वहेनड़ी,
हाजर वे खड़ी, मुंह सांकल जड़ी,
वोली सके नहीं वोल, ऊपर यमरा है तोल,
पकड्यो निपट निटोल ॥ मा० ॥ ३ ॥

चे०—चरु तपेलां अति घणा,
घरमें नहीं मणा, सोना चान्दीतणा।

घडिया भूषण अपार, भरिया द्रव्य भण्डार,
साथ चले ना लिगार ॥ मा० ॥ ४ ॥

चे०-आयो एकलो इण जगा,
मिलिया सहु मगा, खासी सहु ठगा ।
स्वारथियो ससार, कोई आवे नहीं लार,
जाता यमरे दरबार ॥ मा० ॥ ५ ॥

चे०-ममता माया छोड दो,
मोह मोड दो, कोह तोड दो ।
कीजे धरम प्रभात, चाले अपने संगात,
साची सहु मानी बात ॥ मा० ॥ ६ ॥

चे०-सत्यशील दोय साखिया,
आगम भाखिया, पडता राखिया ।
तरिया भक्त अनेक, तेथी बले न निपेक,
तरिया भवोदधि शेक ॥ मा० ॥ ७ ॥

चे०-सूरिराजेन्द्र वाणिये,
साची जाणिये, प्रभु को पिछाणिये ।
धरिये निर्मल ध्यान, पामे मुक्ति की खाण,
भाखे मुनि अमृत वाण ॥ मा० ॥ ८ ॥

(१०)

प्रभु पडिमा पूजी ने पोसह करिये रे०, ए राह—

कूड़ा मति राचो रे इण संसार में,
धरम एक सांचो रे इणी संसार में ॥ टेर ॥

पूरव सुकृत पुन्य पसाये मिलियो रे,
मानव भव लाधो रे साधो आतमा ।
निद्रा विकथा छंडी दूर प्रमादो रे,
शिव पन्थ साधो रे, वाधो न वातमां ॥ १ ॥

सुख नहीं पासो रे इण संसार में,
काया घट काचो रे इण संसार में कू० ॥
वादलकेरी छाया माया सारी रे,
विखरंतां वेला रे लागे नहीं घणी ॥
आयु पल पल छीजे जिम अञ्जलिनो पाणी रे,
अमर नहीं छेलां रे, कोइ आगे भणी
॥ सु० का० कू० ध० ॥ २ ॥

हरि हरादिक तीर्थपति सहु देवो रे,
चक्री वल जेवा रे भाल्या कई भला ।
नव निधान रयण चउदे रहिया धरिया रे,

छोडी जगमाया रे चाल्या एकला ॥
सु० का० कू० ध० ॥ ३ ॥

मनसु धाया माया म मतवाला रे,
राखी नहीं काया रे हाडी काचनी ।
फटको लागे फूटत वेला नहीं काइ र,
भाषी जिनराया रे डाडी आ साचनी
॥ सु० का० कू० ध० ॥ ४ ॥

नोबत घुरती निशदिन ज्यारे अगण रे,
नाद पट त्रिश रे करता रागिणि ।
ज्यान डशिया यमरानारी दूति रे,
जरा जग विचर जैसी नागिणी
॥ सु० का० कू० ध० ॥ ५ ॥

मूछ मरोडे चढता जे नित घोडे रे,
संगे चढी जोडे रे यम झपटी गया ।
सुन्दर मन्दिर अन्दर रोती लाडो रे,
जैसी तरु झाडी र लपटी ते गया
॥ सु० का० कु० ध० ॥ ६ ॥

एहवो जाणी चेतन चेतो प्राणी रे,
साची जिन वाणी रे प्राणी चित्त धरे ।

सूरीश्वरराजेन्द्र सदा गुण खाणी रे,
अमृत हित आणी रे नित मङ्गल वरे
॥ सु० का० कु० ध० ॥ ७ ॥

(११)

बाबा सीतारे खोलामें०, ए राह—

समरो उज्ज्वल चित्त नवकार, सदा सुख पावणा रे ॥ टेर ॥
भवि प्रह ऊठी प्रभात, निर्मल करवा धारी गात ।
लेलो जपमाला निज हाथ ॥
ओ तो चउद पूरवनो सार, मन्त्र मुख गावणा रे ॥ सम० ॥ १ ॥

राखी मन वच काया शुद्ध संवरी रे, जपीये एक अक्षरनो जाप ॥
काटे सात सागरनो पाप, आखो जपतां नवपद जाप ॥
कोटी पांच शत सागरनो पाप पलावणा रे ॥ स० ॥ २ ॥

समर्या लक्षमंत्रनो जाप सहु सिद्धि हुवे रे,
एहनो ध्यान हृदयमें ध्यावे ॥
तावे मनवंछित फल पावे, एतो शिवपुर सीधा जावे ॥
फेरा जनम मरण मिट जाय, अचल सुख ठावणा रे ॥ स० ॥३॥

लाधो सुवन्न पुरिष नवकारतणो समरण कियां रे ॥
नामे हुंतो शिवकुमार योगी मिलियो जटाधार ॥

ले गयो मरघट घाट तिवार, अग्नि ऊपर कडाइ चाढ तेल
उकलावणा रे ॥ स० ॥ ४ ॥

लायो मृतक शव एक जाय योगी फिर जगले रे ।
जाकी पूजन करी तिणवार ॥
अरच्यो अत्तर अबीर अपार, योगी करतो मंत्र उचार ॥
हाथा सूततणो दढ तार, कुँवर ले जावणा रे ॥ स० ॥ ५ ॥

ऊभो कुवर ग्रहीने तार दूर जा एकलो रे ।
मृतक हाथा दे तरवार ॥
आवत देख्यो शिवकुमार, समर्यो मन्त्र वहा नवकार ॥
तातण बाध्यो तरु की डाल, कुमर डरावणा रे ॥ स० ॥ ६ ॥

मृतक फेर्यो दूजी वार योगी निघावले र ।
मन म आण्यो क्रोध अपार, पकडी योगी जटाधार ॥
नाख्यो कलता तेल मझार, निपज्यो सिद्ध पुरष ततकाल वचन
सुणावणा रे स० ॥ ७ ॥

सोंप्यो सोवन पोरषो तेह शिवकुवारने रे, भाषे देव इशि मुख वाणी॥
दृढ चित ताहरो मंत्र पिछाणी, साधे शिवपुर की निशाणी ॥
खाजे पीजे खर्चे खूब धर्म दीपावणा रे ॥ स० ॥ ८ ॥

करती मासु द्वेष अपार, घाल्यो घटमाहि फणिधार ।
झाल्यो हाथ गुणी नवकार ॥

बत्रीश सहस्र मुकुट मणि मा०, सेवता पाय महमन्त–
॥ अहो० ॥ न० ॥ २ ॥

चौसठ सहस्र अन्तेउरी मा०, भोगवता सुख भोग–अहो० ॥
सवा क्रोड़ सोहामणा, मा०, सुपुत्रनो संयोग–
॥ अहो० ॥ न० ॥ ३ ॥

चउद रयण बहु संपदा, मा०, निरुपम नवे निधान–अ० ॥
चक्ररतन सुहामणो मा०, आयुधशाले वखान–
॥ अहो० ॥ न० ॥ ४ ॥

गोकुल दूजे अतिघणा मा०, साढ़ा तीनज कोड़ अ० ॥
खेती कारण खेड़ता मा०, एक कोड़ हल जोड़–
॥ अहो० ॥ न० ॥ ५ ॥

सोले सहस्र यक्ष देवता मा०, अङ्गरक्षक ए जाण–अ० ॥
राजे भला रथ जोडता मा०, लक्ष चौराशी निशाण–
॥ अहो० ॥ न० ॥ ६ ॥

एक दिन पहेर्यों अति भलो मा०, अंगे सहु शिणगार अहो० ॥
एक न दीठी अनामिके मा०, मुद्रडी मनुहार–
॥ अहो० ॥ न० ॥ ७ ॥

भाल्यो आरिसाभुवन में मा०, अद्भुत रूप उदार–अ० ॥
इम करतां उतारियो मा०, भूषण सहु शिणगार–
॥ अहो० न० ॥ ८ ॥

वस्त्र क्रिया सहु वेगला मा०, काया देखी कुरूप-अहो० ॥
ए सहु रूप है अवरनो मा०, चित्त में चमक्यो भूप-
॥ अहो० ॥ न० ॥ ९ ॥

रङ्ग वैरागे आतमा मा०, छोड्यो छ खण्डनो राज-अहो० ॥
काया माया कारमी मा०, आवे ते कुण काज—
॥ अहो० ॥ न० ॥ १० ॥

अन्ते तो थया केवली मा०, पहुता शिवपुर वास-अहो० ॥
सूरिविजयराजेन्द्रजी मा०, अमृत गावे उल्लास—
॥ अहो० ॥ न० ॥ ११ ॥

(१४)

बलिहारी बलिहारी०, ए राह—

सुखकारी २ था नव भव की थी नारी ।
तजी रूप रगदारी नेमिसर वाला, छोड चल्या गिरनारी ॥
॥ टेर ॥ १ ॥

तोरे तो कारण वहाला, करती मे आला चाला ।
मुझे मिले पिउ मतवाला, एतो यदुपति के लाला रे ॥ने० ॥२॥
तोरे तो कारण वाला, रचाई मण्डप शाला ।
कई कई रगदारी नई नई कर त्यारी रे ॥ ने० ॥ ३ ॥
११

तोरण आया व्हाला, खाया मुजसेती टाला ।
वा पशुअन सुणी पुकारी, वा रोती राजुलनारी रे ॥ने०॥४॥

अबला उवेखी व्हाला, वाजो नहीं सबला शाणा ।
वा नहीं सुणी अरज हमारी, निठुर हुवा निरधारी रे ॥ने०॥५॥

अबलानी अरजी स्वामी, अवधारो अंतरयामी ।
तुमे नहीं निजर निहारी, मैं छोडूं न लार तुम्हारी ॥ने०॥६॥

संजम लीधो हाथे, जावा पिऊजी साथे ।
वा पहुंती राजुल प्यारी, मुक्ति महेल मझारी रे ॥ ने० ॥७॥

नेमिसर पाया मुक्ति, सज्झाय गाइ युक्ति ।
अमृतमुनिवर धारी, चतुर भणे नर नारी रे ॥ ने० ॥ ८ ॥

(१५)

राग प्रभाती मे—

सोयो तो बहुत दिन, अवधू तो जाग रे ॥ टेर ॥

अशी चार लाख योन समुद्र अथाग रे ।
मानव जनम पायो, बड़ो तेरो भाग रे ॥ सु० ॥ १ ॥

मोहकी गेहलमाज, जाणीने प्रभात सांझ ।
भयो है प्रबोध अब उठ, धर्म लाग रे ॥ सु० ॥ २ ॥

श्रवण आगम जाण, अतिरुचि मन आण ।
दुरलभ ए उगति धरी, हुं वैराग रे ॥ सु० ॥ ३ ॥

श्रीजिनराज वाण, आतमकु हित आण ।
अमृत सरस वाण, एह शिरमाग रे ॥ सु० ॥ ४ ॥

(१६)

जलमलती बलती घणी रे लाल०, ए राह—

पूरव पुन्य सयोगसु रे लाल, पायो नरभव सार रे सुगुणनर ।
आरज क्षेत्र सुहामणो रे लाल, श्रावक कुल शिरदार रे—
॥ सु० ॥ चे० ॥ १ ॥

चेतन चेतो प्राणिया रे लाल, छाडो निन्द प्रमाद रे ॥ सु० ॥
आतम साधन कीजिये रे लाल, मत करजो विषवाद रे—
॥ सु० ॥ चे० ॥ २ ॥

पीपल पाका पानने रे लाल, खरता न लागे वार रे ॥ सु० ॥
जिम मेलो पखीतणो रे लाल, सध्या रग विचार रे—
॥ सु० ॥ चे० ॥ ३ ॥

इन्द्र धनुष जिमि जाणिये रे लाल, जेहवो एह ससार रे सु०
आयु चञ्चल अतिघणो रे लाल, जाता न लागे वार रे—
॥ सु० ॥ चे० ॥ ४ ॥

जिणघर गयवर घूमता रे लाल, हुता छत्रीसे राग रे सु० ।
ते मन्दिर खाली पड्या रे लाल, बैठण लागा काग रे—
॥ सु० ॥ चे० ॥ ५ ॥

जिण घर मणि माणक घणा रे लाल, भरिया द्रव्य भण्डार रे सु० ।
ते मन्दिर मट्टी थया रे लाल, पात्र घड़े कुम्हार रे–
॥ सु० ॥ चे० ॥ ६ ॥

साठ हजार था सामठा रे लाल, चक्री सगर परिवार रे सु० ।
एकण साथ समशाणमें रे लाल, जालिया अगनिकुमार रे–
॥ सु० ॥ चे० ॥ ७ ॥

हरि हर चक्री केशवा रे लाल, बलवन्त योधा खास रे सु० ।
मरी अन्ते मट्टी थया रे लाल, हिरणचरे तिहाँ घास रे–
॥ सु० ॥ चे० ॥ ८ ॥

इम जाणी आदर घणो रे लाल, करिये तप जप सार रे सु० ।
तेहथी भवि तुमे पामशो रे लाल, अनुपम सुख निरधार रे–
॥ सु० ॥ चे० ॥ ९ ॥

मिलियो पुन्य पसायथी रे लाल, सुगुरु देव संयोग रे सु० ।
जो सुख चाहो जीवनो रे लाल, तो तजो संसारना भोग रे–
॥ सु० ॥ चे० ॥ १० ॥

सोहमतपगण सुन्दरु रे लाल, सूरिराजेंद्र सुखकार रे सु० ।
भूपेन्द्रसूरि आणाथकी रे लाल, अमृत भाखे उदार रे–
॥ सु० ॥ चे० ॥ ११ ॥

(१७)

विणजारो धुतारो०, ए राह—

मति हारो नर नारी अवतारो,
चेतन राजा मनुष्य जनम मतिहारो ॥टेर॥

हाथ दिया छे वहाला प्रभूजी पूजण को,
केसर चन्दन घनसारो ॥ चे० ॥ १ ॥

नेत्र दिया छे वाला, प्रभु निरखण को,
जीवदया उपकारो ॥ चे० ॥ २ ॥

मुखड़ो दियो छे वाला, प्रभु गुण गावा,
नित समरो नवकारो ॥ चे० ॥ ३ ॥

पाव दिया छे वाला, तीरथ जावण,
भेटो शत्रुंजो गिरनारो ॥ चे० ॥ ४ ॥

संसार की माया वाला, बादलकेरी छाया,
काया अमर नहीं थारो ॥ चे० ॥ ५ ॥

इम भावे ज्ञानी वाला, अमृत जानी,
शुद्ध पन्थे चलनारो ॥ चे० ॥ ६ ॥

---

(१८)

मेरे मौला बोलालो०, ए राह-

पर निंद्या से पाप लगावो मति,
लगावो मति यामें झूंठ नाहिं रति ॥ टेर ॥

पर निंद्या करतां दुःख पावे, आतम मेल भरावे।
कीड़ीने कुंजर सम दाखे, चवड़े शान गमावे ॥
ऐसी विपता की बातें बणावो मति ॥ पर० ॥ १ ॥

मनसुं खोटी लेश्या धारे, आरति ध्यान उपावे ।
अणदीठी अण सांभली, किस विध बात बणावे ॥
झूठी बातों में बात करावो मति ॥ पर० ॥ २ ॥

झूठी बात करतां जगमें, पत पंचा में जावे ।
सगो कोई विश्वास करे नहीं, पकड़ रावले लावे ॥
पूजा पईसा की आप करावो मति ॥ पर० ॥ ३ ॥

पड़ी जनम की टेव जिको नर, जीवतां नहीं जासी ।
अमृतमुनिवर इणिपरे बोले, आगे गोता खासी ॥
ऐसी रोने की रामत रमावो मति ॥ पर० ॥ ४ ॥

(१९)

सखि पनिया भरन कैसे जाना०, ए राह-

मत बोलो कटुक थे भाई, आखिर को है दुखदाई ॥ टेर ॥

कटुक वचन मधु बोलो, अजीरण आहार सम तोलोजी–
पावो वेदन अति जिलखाई ॥ आखिर० ॥ १ ॥

थें बोलो कटुक मदवाणी, ओरों के दिल नहीं आनीजी–
लडेंगे लोक लुगाई ॥ आखिर० ॥ २ ॥

जाके पास कोई नहीं आवे, वो घर घर गोता खावे–
जाकी जगमे रह न बडाई आखिर० ॥ ३ ॥

जाको राज दंड भुगतावे, सुखरी रोटी नहीं भावेजी–
यह छोडो रीत मन चाई ॥ आखिर० ॥ ४ ॥

मुख अमृत वैन उचारो, माच लगे सहु प्यारोजी–
जाकी लोक गिने चतुराई ॥ आखिर० ॥ ५ ॥

(२०)

गजल–रेखता—

सुनो बहु बात परदेशी, अमर दुनिया मे नहीं रेसी ॥ टेर ॥

चाद सूरज वो है तारे, जायेंगे एक दिन सारे।
धर्म के द्वार की पेशी ॥ अमर० ॥ १ ॥

मिले बहु द्रव्य को पाकर, जावेंगे मान उठाकर।
नगा कर अङ्ग को देशी ॥ अमर० ॥ २ ॥

अङ्गण में घूमते हाथी, चढ़े वहु जोरावर साथी ।
झपाटे झट्टप यम लेशी ॥ अमर० ॥ ३ ॥

हुवे कई चक्री बलदेवा, हरि हर देवना जेवा ।
निशानी ना रही कैसी ॥ अमर० ॥ ४ ॥

रहो प्रभु चरण में प्यारे, जग को दूर कर डारो ।
अमृत कहे यही उपदेशी ॥ अमर० ॥ ५ ॥

(२१)

रेखता गजल—

जगत की छार है बाजी, चले कई छोड़के काजी ॥ टेर ॥

थे कई कोटी अवजाक्षी, जगत भरते सहु साक्षी ।
पड्या यम फन्द में पाजी ॥ चले० ॥ १ ॥

चलाता जोर से गाड़ी, रोती घरमें रही लाड़ी ।
बजाते हांक गया गाजी ॥ चले० ॥ २ ॥

चलाता लाखों की हुंडी, पकड़ कर ले गया हुंडी ।
दुकानां छोड़ कर साजी ॥ चले० ॥ ३ ॥

वड़ा था राज छ खंडी, लोक में बाजती डंडी ।
काया ज्यांरी अग्नि में दाजी ॥ चले० ॥ ४ ॥

महर्धिक राज गद्दीपे, चलाता हुकम अवनीपे ।
बचे नहीं जोर से झाझी ॥ चले० ॥ ५ ॥

भरया सहु भूमिका नागिन, सरया केवी लहु गिन गिन ।
अमृत इसमें ना एतराजी ॥ चले० ॥ ६ ॥

(२२)

मजा देते हे क्या यार०, ए राह—

आयु खूटे सुणलो यार, जिसम लगे ना जोर लगार ॥ टेर ॥

जोर नहीं लागे तिण वरिया, ऊभा देखे आप ।
मयलो कुटुम्ब मिले तिहाँ सामिल, करे घणो सन्ताप ॥आ०॥१॥

मात पिता बन्धव सुत दारा, सगा सहु तमाम ।
हाक धाक होवे तिण वेला, रागदरीगो काम ॥ आ० ॥ २ ॥

यदि कवतो जोगावर ज्ञानी, मनमें होता रानी ।
पाप पोटली शिरपे बाधी, पड्यो जेल मे पाजी ॥ आ० ॥ ३ ॥

कामणगारी नारी धारी, साथ रम पणाधी ।
पुत्रा हन्दि वादि सेज म, ओर करेगा साधी ॥ आ० ॥ ४ ॥

काया माया छोड़ हवेली, जदि थने जाणो परभी ।
स्वार्थ वाले सगा मिलीने, सहोटी फाडे रहमी ॥ आ० ॥ ५ ॥

जोर किगा नहीं रहशी थारी, काया माया लाड़ी।
आयो आयुखो एक दिन यारो, कोई नहीं आवे आड़ी ॥आ०६॥

आयु पल पल जावे जैसे, ज्युं घड़ियाले कांटो।
अञ्जन गाड़ी जेम ऊपड़े, आड़ो नहीं कोई कांटो ॥आ०॥७॥

अमृतमुनिवर इणिपरे कहते, सुणलो सारे भाई।
जीव काया रे झगड़ो लागे, आए आउखे जाई ॥ आ० ॥ ८ ॥

(२३)

राजाजी राणीरो कियो मानो राजाजी०, ए राह—

माने मति छोडो रे जीवाजी-जीवाजी मां० ॥ टेर ॥
आप विना मांने कुण राखे घर में, जंगल में लेजासी रे जी० ॥
आभूषण खोली अडोली कीधी, भसमी वनाशी रे ॥जी०॥१॥

मानो मती रोको रे सुन्दरजी, सुन्दरजी २ मां० ॥ टेर ॥
तोरी तो संगत हुँ वहु रुलियो, लाख चौराशी रे सुं० ॥
कन्दमूल का भक्षण करके, नाही पायो सुख राशी रे-
सुं० मां० ॥ २ ॥

सरस मधुर अति मीठा भोजन, युक्ति से जीमावुं रे सुं० ॥
अमृत जल अरू पान लवंग से, भावना मैं भावुं हो-
॥ सुं० मां० ॥ ३ ॥

हिंसा सबली जीवतणी करी, झूठ बोलाया रे सु० ॥
परधन हरण करी पर–रामा, परिग्रह में लोभाया रे–
सु० मा० ॥ ४ ॥

काम क्रोध मद लोभ माया में, मोह जाला मे फसाया रे सु०॥
धर्म चिन्तामणि रतन समुज्ज्वल, हाथ नहीं आया रे–
॥ सु० ॥ मा० ॥ ५ ॥

प्रीति अनुपम चातक जलधर, रग निछोडी रे जी० ॥
आज किसो इम जानो अकेला, तोडी प्यारे जोडो हो–
॥ सु० मा० ॥ ६ ॥

तोरे तो कारण बहु दुख पाया, कुगति मे रुलाया हो सु० ॥
चार गति मे चेतन यो भव, मुश्किल पाया हो–
॥ सु० मा० ॥ ७

निठुर निगुण मति हो मोरा स्वामी, बहु शिरनामी हो सु०॥
माथो मुडाये सब ही गडरिया, सिद्धि नहीं पामी हो–
॥ सु० मा० ८ ॥

मान सरोवर मीन जो नावत, सोहे खर बभूती हो सु० ॥
बगुला मोन धर घट भीतर, भखे चाच हुती हो–
॥ सु० मा० ९ ॥

चेतन कहत सुण लीजे काया, झठा ललचाया हो सुं० ॥
काल अनादि की रीति यही है, कदरी मोह माया हो-
॥ सुं० मां० १०॥

काया हार गई चेतन से, चेतन सिधाया हो सुं० ॥
अविनाशी पद पाम्यो आतम, अमृत इम गाया हो-
॥ सुं० मां० ॥ ११ ॥

(२४)

नेम-राजुल सज्झाय ।

आज हजारी ढोलो माहूणी०, ए राह-

समुद्रविजय सुत लाडलो, माता शिवादेवीजीरा नन्द ॥
यादव राय हो यादव शिरनो सेहरो, केसरिया पूनमकेरो चन्द-या०
आज म्हाने करूं विनति ॥ टेर ॥ १ ॥

तोरणथी रथ फेरिया, पशूडांरी सुणी पुकार-या०,
अबला छोड़ी एकली, चढ़िया गढ़ गिरनार । या०॥ आ०॥२॥

सखियां मुखथकी सांभली, वलिया नेम कुमार-या०,
टलवलती धरणी ढली, रुदन करे तिणवार ॥ या० ॥आ० ३ ॥

अबला विन अपराध से, तरछोड़ी कहो केम-या०,
पूरव भव में जो किया, आवी वलुंधा एम ॥ या० ॥ आ० ॥४॥

के मैं लवन्ता मोरा मारिया, के फोड़ी सरवर पाल-या०,
वनमें दव दीधा घणा, बोल्या अवरण वाद-या० ।
पखिमाला खोसिया, के कीधा वृदा सवाद ॥ या०॥आ०॥५॥

नवल नहजा माहरा, नव भवरा भरतार-या० ।
निठुर नहेजा थई रह्या, त्यागी अबला नार ॥या०॥आ०॥६॥

हु नहीं छोडु साहेबा, इण भव ताहरो सग-या० ।
चोल मजीठ ज्यु ताहरो, लागो अमली रग ॥या०॥आ०॥७॥

परम वैरागी थई रही, सजम लई सुखकार-या० ।
पिऊ पहला गई पाधरी, शिवपुर नगर मझार॥या०॥आ०॥८॥

केवल धरी शिवपुर गया, तार्या बहु नर नार-या० ।
अमृतमुनि इम गाविया, नयर आकोली सार ॥या०॥आ०॥९

(२५)

एक दिन आवेगा रे बन्दा !, मत करणा अभिमान ॥ टेर ॥

जिण घर नोबत घुरधी रंगे, हुंता नाना विध राग ।
वे मन्दिर खाली सहु दिशे, कुटी उडता काग ॥ एक० ॥ १ ॥

मणि माणक जिण घर मेलणने, मिलतो नहीं हतो भाग ॥
एक दिन एसा आयगा बन्दा, जलती नहीं सराग ॥एक०॥२॥

पहेरण कंचन सेर सदाई, मोतियन मरती भार।
एक दिन एसा आयगा बन्दा, घर घर री पणिहार॥एक०॥३॥

पांच दश पचीसा जीवे, जीवे वरस पचास।
एक दिन एसा आयगा बन्दा, जंगल करे निवास॥एक०॥४॥

मूंछ मरोड़े चढ़ता घोड़े, साथ बहु असवार।
एक दिन एसा आयगा बन्दा, भिक्षा मंगणहार ॥एक०॥५॥

तीन लोक में रावण हुंतो, वीस भुजा धरनार।
एक दिन एसा आयगा बन्दा, मर्या कुत्ते की मार॥एक०॥६॥

हरिश्चन्द्र सत्यवादी हुंतो, भर्यो नीच घर नीर।
मर्यो कृष्ण विन पाणी प्यारे, एक दिन आखिर पीर॥ एक० ॥७

जरा जोर है वड़ी कठिणता, नेकी चलत समान।
एक दिन अमृत धर्म द्वारपे, रंक अरु राजान॥एक० ॥८॥

(२६)

राग आसाउरी—

कर्म से जोर चले नहीं कोई, होणहार सो होई क० ॥ टेर ॥

वीरजिनेश्वर नीच कुले जई, गर्भ लह्यो मद सोई।
आदिजिणिन्द वर्ष रहे भूखे, आहार मिल्यो नहीं कोई॥क०।१॥

रावण राम मार्यो एक पल में, सोननलक दी खोई ।
राम फिर्या वनवास विपत्ति में, टालणहार न कोई ॥क०। २ ॥

पाण्डव सह्या सबल दु:ख बन में, जाको पार न जोई ॥
तारा नार राय हरिश्चन्द्रे, अपने हाथ निकोई ॥ क० ॥ ३ ॥

श्रेणिक को सुत बन्धन डारे, चक्री डूबो जलमाई ।
छपन्न कोटि अधिपती जाको, बिन पानी मार्यो भाई॥क०॥४॥

छोड़ ससार की माया जग में, कर्म न बन्धे कोई ।
अमृत भणत आखिर आ नरको, शिवपन्थ मिलेगी सोई ॥क०॥५

(२७)

प्रभुजी बिना कैसे काज सरे०, ए राह—

भजन बिना भवजल कैसे तर, कैसे तेरे कहो कैसे० ॥ टेर ॥

मोह माया के फन्द मे राच्यो, काया अमर कहो कैसे करे ?
॥ भ० ॥ १ ॥

घोर निद्रा मे सुतो निशदिन, जाग्या विना कैसे काज सरे ?
॥ भ० ॥ २ ॥

कुटुम्ब कबीला के रग मे रमता, कर्म के भर्म को कैसे हर ?
॥ भ० ॥ ३ ॥

क्रोध कषाय में चेतन लाग्यो, जाग्यो पाप कहो कैसे टरे ?
॥ भ० ॥ ४ ॥

मान गुमान में मस्त हुई रह्या, जाको शिव मारग कैसे जरे ?
॥ भ० ॥ ५ ॥

अमृत छोड़े आखिर जग माया, वो दुर्गती में कैसे परे ?
॥ भ० ॥ ६ ॥

(२८)

भरवादे कटोरा केशर का, ए राह–

मत लेणा बुराई–भलाई करो ॥ टेर ॥

बुराई करत बहुत दुख पावे, नर्क निगोद में जय परो–
॥ म० ॥ १ ॥

भलाई की बातों से भीड़ भगतु है, लोक बुराई की विपता हरो–
॥ म० ॥ २ ॥

भलाई की बातों से भक्त तिरे हैं, मुक्ति पन्थ की राह वरो-
॥ म० ॥ ३ ॥

बुराई का सागर गहन भर्या है, भईया की नैया भइया बैठे करो
॥ म० ॥ ४ ॥

अमृतविजय मुनि इण परे बोले, छोड़ बुराइ को सन्त तिरो
॥ म० ॥ ५ ॥

(८९)

चन्दनबालानी–सज्झाय।

दोहा—

श्री गुरुने चरणे नमी, समरी सरसती मात।
सती चन्दनबाला तणी, भणु सज्झाय विख्यात ॥ १ ॥

ढाल १–पथीडा सदेशो रे केजो०, ए राह—

रायसिद्धारथ नन्दन जिन चोबीसमा,
विचरन्ता पृथ्वीतल उग्र–विहार जो।
शम दम सजम धरी ते मौनपणे रह्या,
धार्यो अभिग्रह अधिको मनह मझार जो ॥ राय० ॥ १ ॥

कुवरी होवे राजानी दासपणे रही,
पग मे बधन जडी होवे जजीर जो।
मस्तक मुडण केश सहु दूरे किया,
उडद बाकुला सूपह खूणे तीर जो ॥ राय० ॥ २ ॥

कीधो अट्ठम तप दो पहरा तिण समे।
रुदन करती आपे मुझने आहार जो।
तो मुझ कल्प करणो तप को पारणो,
अभिग्रह धारी विचरे सवर धार जो ॥ राय० ॥ ३ ॥

१२

लोक न जाणे अभिग्रह प्रभुरो आकरो,
लेवे नहीं प्रभु अशनादिक कोई आहार जो।
इम करतां केताइक वासर वही गया,
ऊणा पांच दिन छमासी चोविहार जो ॥राय० ४ ॥

दोहा—

चम्पा नयरी तिण समें, दधिवाहन राजान।
तेहनी राणी धारणी, वसुमती सुता वखान ॥ १ ॥
चन्दनबाला नाम पण, शीलगुणे संयुत।
कोशंबीपति तिण समे, संतानीक राजंत ॥ २ ॥
दधिवाहन ऊपर चढी, आव्यो कटक धरेह।
लूटी चम्पा नयरीने, लोक भागतां जेह ॥ ३ ॥
पकडी सेवक नासती, धारणी चन्दनबाल।
शील जतनरे कारणे, राणी मरी ततकाल ॥ ४ ॥
भीहतो सेवक बापड़ो, रखे मरे यही बाल।
विश्वासी आणी खरी, चहुटे नयर विशाल ॥ ५ ॥

ढाल २ राग सुमति विलास—

मिलिया सहु लोक तिवार, टोले टोला नर नार।
आवे वेश्याओ मनगमती, लेवा चन्दनबाला सुमति ॥१॥

मोल कहोने आ बाल कुँवारी, आपो अमने मन करो वारी ।
पूछे वलतु चन्दनबाला, आचार किस्यो घर वहाला ॥ २ ॥
भाखे वेश्या मुख इम वाणी, उत्तम नर साथे प्राणी ।
मनमान्या भोग लहीजे, शिणगार सजावट कीजे ॥ ३ ॥
सरस मीठा भोजन जमवा, मन–मानी स्वेच्छाएँ रमवा ॥
चन्दना मन रुचि नहीं वारुँ, काम नठारो छे ताहरुँ ॥ ४ ॥
ताहरे घर माहरे न रहवु, हुँतो पुरुष नहीं कोई सेवु ।
जाती रहे घर तोरे राजा, एहवा बोल न काढशो झाझा ॥ ५ ॥
बोले तब वेश्या खीजाणी, देवु दाम लज्या नहीं आणी ।
सत्यशील तणे परभावे, शासन भक्ति सुर आवे ॥ ६ ॥
नाक कान वेश्याना काटी, भडके वेश्याओं नाठी ।
धन्नाशाह मोल दईने, आयो चन्दना घरपे लईने ॥ ७ ॥
धन्नाघर मूला नारी, परिणामे कुमूला नठारी ।
देखी चन्दना चित म चमकी, खरी शोक हिया मे हमकी ॥८॥
पिउ पुत्री पुत्री करतो, घणो स्नेह इणि सग धरतो ।
रखे करतो आ निज नारी, कुमति कुमूला मन धारी ॥ ९ ॥
गया सेठ कोई परगामे, करे मूला अनुचित काम ।
चन्दनानो माथो मूडी, नहीं वात विचारी ऊडी ॥ १० ॥

पगलोह बेड़ी पहरावी, एक ओरा में बैठावी ।
जड़ी द्वार तालो झट ऊठी, जा पीयर आप अपूठी ॥ ११ ॥

तीन दिवस हुवा तिवार, आवे सेठ जुवे वरवार ।
सांकल संग तालो जड़ियो, देखो मनमें अति आखड़ियो ॥ १२॥

आड़ोशी पाडोसी पूछे, कहो कारण मुझ घर शुं छे ? ।
गइ मुझ घरणी कहां नारी?, काली नागिन बहु हत्यारी ॥१३॥

डरता कोई नाम न लेवे, जन मुखथी कोइ ना केवे ।
इणि अवसर बोली एक दाशी, कूंची घर नाला में हासी ॥१४॥

सेठ जोवे ताला उघाड़ी, चन्दनाने क्यांही छिपाड़ी ।
जोया सहु घर अरु पेटी, देखी ओरा में चन्दना बैठी ॥१५॥

बहु स्नेह करी बोलावी, भूख प्यासा में मूंजावी ।
कांई शुद्धि न लीधी ताहरी, याही भूल हुई वत्स माहरी ॥१६॥

दिवस तीन तणी तूं भूखी है, तोरी आतमा अतिही दुःखी है ।
लोहकार तेडण हुं जावुं, थांरे खावणने कांई लावुं ॥ १७ ॥

उड़दरा बाकला लाई, घाल्या सूपड़ खूणे तांई ।
बैठी तूं थोड़ी जीमजे, लई आवुं लोहकार हीवजे ॥ १८ ॥

दोहा—

तीन दिवसनुं तप थयुं, चिन्ते चन्दनबाल ।
जो कोई मुज भाग्यथी, संयमी आवे इण काल ॥ १ ॥

इण अवसर प्रभु विचरता, वीरजिणंद जयकार ।
घर घर फिरता गोचरी, लेवा शुद्ध ज आहार ॥ २ ॥

ढाल ३—सुणो चन्दाजी श्रीमंधर परमातम, ए राह—

प्रभु वीरजिणंद, उपकारी तपधारी मुझ घर आविया ।
हिये हरख अमन्द, उलसित पावन, अंग रग मन भाविया ॥टेर॥
धन्य दिवस आज माहरो छे, म्हारे आंगण अम्ब फल्यारो छे ।
कई भवनु दु ख हरनारो छे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
म्हारे आंगण अमृत वूठा छे प्रभुवीर जिनेश्वर तूठा छे ।
दइ आन फिर्या अपूठा छे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
ओग अभिग्रह सा मिलिया, आंसु आंखा मे नवि ढलिया ।
तेहथी प्रभु पाछा वलिया ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
त देखी चन्दना दुख पावे, आंखा मे आंसु झरी आवे ।
प्रभु अभिग्रह पूरो थावे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥
तव प्रभुनी पाछा वलिया, हाथा पाया ढलिया ।
पडिलाभ्या उडदना बाकुलिया ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥
देव कुसुम तिहां वरसावे, साढी बार क्रोड सोनु मावे ।
जय जय मुखथी सहु सुर गावे ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥
पछी प्रभु केवल पावे, लीधुं संयम चंदना मन लावे ।
संसार तरी मुक्ति पावे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥

एहना गुण भवि जे नर गावे, जसु कर्म कलंक दूरे जावे।
सुर नर मन वंछित फल पावे॥ प्रभु० ॥ ८ ॥

तपगच्छ भूपेन्द्रसूरि राजे, अब्द गुणी त्राणुं आजे।
भणे अमृतमुनि सती गुण छाजे ॥प्रभु०॥९॥

(३०)

नेमराजुल-सज्झाय।

राग भैरवी, ताल केरवा—

नेमि आवो, समझावो न पिया, कटे ना बैरन रतियाँ ॥ टेर ॥

चवरी में छोड़ी मोहे दया न लाई रे,
ये है जवानी मोरी हाय, तन विरह न माय।
झेल लहे राय, रहे नाय, करो सहाय ॥ नेमि० ॥ १ ॥

आप विना मोहे कछु न सुहावे रे, फीको लगे है सिनगार,
कहे राजुल नार, दिन चार, ये हे वार, भरतार ॥नेमि०॥२॥

पति विना रति रही अकेली रे, आप तज्या है संसार।
छोड़ो अध बीच नार, गिरनार, गये पार, चलुं लार ॥नेमि०॥३॥

अमृत शरण राजेन्द्रसूरि के रे, गुरुचरणों को धरुं ध्यान।
पायो निरमल ज्ञान, सुधा पान, कर आन, कही तान। नेमि०॥४॥

(३१)

आठ मद-सज्झाय।

राग भर्तरी—

मद आठो भवि वारजो, दुरगतिना देनारजी।
वीरप्रभुजी उपदिशे, भाखे सुधर्मा गणधारजी ॥ मद० ॥ १ ॥

जाती मद पहलो कीयो, कीधो हरिकेशी अहङ्कारजी ॥
ऊपना चडाल के कुले, भोगव्या दु ख अपारजी ॥मद०॥२॥

मद बीजो करी नाचियो, मरीचीन भवे जाणजी।
कोडाकोडी सागर भम्या, मद है दुखागी खाणजी ॥मद०॥३॥

दुख पायो बलमद थकी, वसुभूति जीव श्रेणिकनी।
नरकतणा दुखने सह्या, घणी मार पडी लागे पीकनी ॥मद०॥४॥

सनतकुमार चोथा चक्री, रूपनो कियो अभिमानजी।
सोले रोग थया शरीरमा, चोथो मद नरक निशानजी ॥मद०॥५॥

शुद्ध संयम मुनि पालता, तप मद कियो आपजी।
अन्तराय तपनो बाधियो, कुरगडु ऋषि बापजी ॥मद० ॥६॥

दशारण देशनो राजियो, दशार्णभद्र अभिमानजी।
देव इन्द्र की ऋद्धि लावीयो, समार तजी लह्यो ज्ञानजी ॥मद०॥७॥

स्थूलिभद्रे विद्यानो कीयो, मद सातमो विघ्नकारीजी ।
पूर्वोंना अर्थ मिल्या नहीं, मान से गुण सब हारीजी ॥मद०॥८॥

सुभूम राजा छखण्ड का, किया लोभमद अपारजी ।
सर्व सैन्या डूबी सायरमां, गया सातमी नरक मझारजी ॥मद०॥९॥

राज्य योवन तन धनतणो, मत करो भवि गर्वजी ।
अथिर सर्व है कारमो, विणसे क्षणमां सर्वजी ॥मद०॥ १० ॥

मद आठोने दमन करी, करो सुकृत कमाणजी ।
एथी सर्व सुख पामसो, कहे अमृतमुनि जाणजी ॥मद०॥११॥

(३२)

भक्तिसुधारस घोलनो०, ए राह—

आ संसार में प्राणिया रे, सुख चाहे मनमाय ।
सुख छे थोड़ा कालनो रे, पाछलथी पिस्ताय हो जीवड़ा ।
विषय सुख में राचीने रे,
मोह नींद में नाचीने रे, सुतो क्युं अब जाग ॥ टेर ॥१॥

पाप करी धन जोड़ियो रे, खासे सहु परिवार ।
पापतणुं दुःख तुं सही रे,
सगो कोय न लेशे लगार हो जीवड़ा ॥ वि० ॥ २ ॥

परनारीना प्रेममा, फिरतो फिरे निम रोज ।
लोक भडे राज दडसे रे,
क्यु भरे पापनु बोज हो जीवडा ॥ वि० ॥ ३ ॥

मनकी रावों मनमें रही रे, पूरी कदी नहीं होय ।
फोकट काज गमारीने रे,
मनुष्य भव हीरो खोय हो जीवडा ॥ वि० ॥ ४ ॥

सुभूम चक्री मातमो रे, छे खण्ड को भूपाल ।
अति लोभके वश म पडियो रे,
नरक म गयो ततकाल हो जीवडा ॥ वि० ॥ ५ ॥

मारु मारु करी लडी मरे रे, ताहरु न दीसे कोई ।
काया थासे कोयला रे,
सगा पासे ऊभा जोई हो जीवडा ॥ वि० ॥ ६ ॥

दुनिया छे आ मतलबनी रे, ज्ञान दृष्टि दे विचार ।
वार वार नवि मिले,
उत्तम कुल अवतार हो जीवडा ॥ वि० ॥ ७ ॥

कुड कपट माया जालने रे, दूर करो तुम भाई ।
सूरिराजेन्द्र भाखे इमो रे,
जिन धर्म करो सुखदाई हो जीवडा ॥ वि० ॥ ८ ॥

सरधा विना इण जीवने रे, भमतां न पावे ठोड़ा।
मुनि अमृत कहे धारजो रे,
समकित मोक्षनो मोड़ हो जीवड़ा ॥ वि० ॥ ९ ॥

---

(३२)

राग आशावरी–

चेतन आतम तत्व विचारी, पामो ज्युं भवपारी ॥ टेर ॥

आरज क्षेत्र उत्तम कुल आयो, ऊंच वंश अवतारी।
शुद्ध देव गुरु धर्म लहीने, आराधो नर नारी ॥ चे० ॥१॥

इन्द्र धनुष जिम जल परपोटो, संध्या रंग सहु यारी।
चंचल जिम दामनी को झबको, योवन तन धन सारी ॥चे०॥२॥

अंजलि जल ज्युं आयु घटतु है, पल पल जावत जारी।
धर्म विना सुख नांही जगत में, दूजो तारणहारी ॥ चे० ॥३॥

कर्म निकाचित पण क्षय जावे, जप तप संजम धारी।
निर्मल ज्ञान लहे अरु दरिशन, पामो भवजल पारी ॥ चे०॥४॥

पामी शुद्ध निरंजन पद को, जपलो वारंवारी।
सूरिविजयराजेन्द्र पसाये, अमृत कहे उपकारी ॥चे०॥५

(३४)

माननिषेध-सज्झाय

राग माढ—

मानीड़ा मत कीजो मान गुमान, थाने सदगुरु देवे छे ज्ञान ।।टेर।।

लाख चोराशी योनिमा रे, भमियो काल अनन्त ।
कवडी माटे निक गयो, थारी गिणती कोण गिणत? ।। मा० ।। १ ।।

गर्भावास मे आवीयो रे, मलमूत्र के ठाम ।
अन सेरी मे भूल्यो फिरे रे, नहीं ले भगवन्त को नाम।।म०।।२।।

चन्दन चरची अग रचायो, कीधो बहु शिणगार ।
बाजीगर का बादरा ज्यु, नाच नचावे नार ।। मा० ।। ३ ।।

माथे छत्र धरावता रे, गज चढ चलता वेग ।
जे नर मातग कुल निपेर, ज्यारी रचना लीजो देख ।।मा० ।।४।।

गर्वे भराणा बोलता रे, निरखता सुन्दर नार ।
पाने पड्या यमराजके र, थाको कोण बचावणहार ।। मा० ।। ५ ।।

सोनो रूपो घणो पहरता रे, मोत्या भर्या भण्डार ।
टुकडा साटे मुखडा माडे, कर्मो के अनुसार ।। मा० ।। ६ ।।

दान शील तप भावना भावो, नरभव सुधरे सहेल ।
हीरालाल हर्षे भावस्यु रे, पामो मुक्ति महेल ।। मा० ।। ७ ।।

(३५)

इस काया की रेल रेल से, अजब निराली है ॥ टेर ॥

पाप पुण्य की बना के नाली, अकल सड़क ले विच में डाली।
हाथ का चक्कर लगा जिधर, चाहे उधर घुमाली है ॥इस० ॥ १

दया धरम को पैया लगाकर, सत्यका लट्टा खूब चढ़ाकर।
ज्ञान कमानी खींच ध्यानकी, सांकल डाली है ॥ इस० ॥ २ ॥

लोहे की लाठ बनी अतिभारी, सांस धुआ है जिम में जारी ॥
दिलका अंजन लगा जहां पर, अगनी जाली है ॥ इस० ॥ ३ ॥

नाड़ी का घंटा हरदम हिलता, वक्त रेल का जिसमें मिलता ॥
हाथ का सिगल हिला, रेल झट आनेवाली है ॥ इस० ॥ ४ ॥

जाग मुसाफिर क्यों दुख सेवे?, प्रभु नाम को टिकट न लेवे ॥
कफकी घंटी बजी रेल, अब जानेवाली है ॥ इस० ॥ ५ ॥

तार खबर जब हिचकी आई, मोंत ने झंडी आन दिखाई ॥
भमर रेल गई छूट पड़ा, यह स्टेशन खाली है ॥ इस० ॥ ६ ॥

(३६)

हींडे झूले म्हारो जीव०, ए राह-

लारा लागो रे, यो पाप कर्म दुख देगा आगे रे ॥ ला० ॥टेर-

दौलत का झंडा लहराया, पैसा बिन मित्र ज कोइ नहीं
॥ हैं० ॥ १ ॥

जब हाकिम होद्दारी थे, दुनिया पर हुकमी जारी थे ।
उसी हुकम से बरखास्त हुए, जब दुनिया में मेरा कोई नहीं ।
॥ हैं० ॥ २ ॥

प्रबल पुन्याई भारी थी, चोतर्फ से लक्ष्मी आ रही थी ।
हलकी दशा जब आन पड़ी, तभी देनेवाला कोई नहीं ।
॥ हैं० ॥ ३ ॥

रामचन्द्र अयोध्या के राना, जिनके हाजर थे कई राना ।
राज छोड़ वनवास चले, उस वक्त में साथे कोई नहीं ।
॥ हैं० ॥ ४ ॥

हुवा पाचों ही पांडव बलवन्ता, जसु सेवे आलम गुणवन्ता ।
राजद्वार वनवास गये, तिण वेला साथी कोई नहीं ॥ हैं० ॥५॥

कृष्ण महा पद भागी थे, छप्पन कुल कोटी सागी थे ।
आखिर मरत मरे बिन पाणी, पिलानेवाला कोई नहीं ॥हैं०॥६॥

लंकापति महा अभिमानी, सोने की नगरी राजधानी ।
दश शिर रण में रुलवाय दिये, भैया रखवाला कोई नहीं–
॥ हैं० ॥ ७ ॥

दौलत खातिर करत सही, निरधन का जग में सगा नहीं ।
चाहे धर्मी हो परमार्थी हो, विन स्वार्थ जग में कोई नहीं–
॥ हैं० ॥ ८ ॥

समझो सहु शाणा सुखकारी, पैसा विन कोई की नहीं यारी ।
कहे अमृत लक्ष्मी सहु प्यारी, दुःखी मन का सहायक कोई नहीं
॥ हैं० ॥ ९ ॥

(३९)

श्रीकृष्णवासुदेव–सज्झाय ।

अजब महेलने अजब झरोखे०, ए राह––

नयरी द्वारिका नेमि–जिनेश्वर, विचरंता प्रभु आया ।
कृष्ण नरेसर सुणीरे वधाई, जीत निशाण घुराया हो प्रभुजी ॥
नहीं जाऊं नरक गति में, नहीं जाऊं नरक गति में हो प्रभुजी ॥टेर

अठारे सहस साधुने विधिसुं, वांद्या अधिके हरखे ।
नेमि जिनेसर पास रहीने, ऊभा मुखड़ा निरखे हो–
॥ प्र० । न० ॥ २ ॥

नेम कहे तुमे चार निवारी, त्रण तणा दुख रहिया ।
कृष्ण कहे हुं फरी फरी वन्दुं, हर्ष धरी मन गहिया हो–
॥ प्र० । न० ॥ ३ ॥

नेम कहे ए टाली न टलसी, सो वातें एक वात ।
कृष्ण कहे माहरा बाल ब्रह्मचारी, नेमिजिनेश्वर तात हो–
॥ प्र० न० ॥ ४ ॥

मोटा रायनी चाकरी करता, रांक सेवक बहु रुलसी,
सुरतरु सरिखो निष्फल होसी, तो किम विषवेल फलसी हो–
॥ प्र० न० ॥ ५ ॥

पेटे आयो ते जग बेटो, पूत कपूत केवायो ।
भलो भूडो पिण यादव कुलनो, तुम बन्धव केवायो हो–
॥ प्र० न० ॥ ६ ॥

छप्पन क्रोड यादवनो साहेब, कृष्णजी नरके जासे ।
नेमि जिनेश्वरकेरो बंधव, जगमें अपयश थासे हो–
॥ प्र० न० ॥ ७ ॥

शुद्ध समकितनी परीक्षा करीने, बोल्या केवलनाणी ।
नेमि जिनेश्वर दीधो दिलासो, खरो रुपैयो जाणी हो–
॥ प्र० न० ॥ ८ ॥

नेम कहे तुमे चिंता म करजो, तुम पदवी अम सरखी ।
आवती चोवीशी में होसो तीर्थंकर, इम सुणी मनमां हरखी हो–
॥ प्र० न० ॥ ९ ॥

१३

द्रव्य खेत्रादिक शक्ति प्रमाणे, पाले संजम मुनिराज ।
तेहने वांध्या मोक्ष शुद्धिफल, भाषे श्री जिनराज हो-
॥ प्र० न० ॥ १० ॥

यादव कुल उजवाल्यो नेम, समुद्रविजय कुल-दीवो ।
इन्द्र कहे शिवादेवी नंदन, क्रोड़ दीवाली जीवो हो-
॥ प्र० न० ॥ ११ ॥

(४१)

वीर-पुरुषों की सज्झाय ।

आजा रे दिलजानी गलेपे०, ए राह—

कई वीर पुरुष हो चुके, इस भारत भूमि में ।
सत्य धर्म का झंडा लहराया, इस भारत भूमी में ॥टेर॥

यदु गोत्र के बब्बर शहेर जो, गजसुकमालजी सच्चे ।
बलिदान हो गये धर्मपे, इस भारत भूमि म ॥ कई० ॥ १ ॥

सोमलने रक्खे शिरपर, खीरे जो खेर के ।
शिर तक भी ना हिलाया, इस भारत० ॥ कई० ॥ २ ॥

राणीने झूंपा दीना था, परदेशी भूप के ।
तो भी न चला धर्म से, इस भारत० ॥ कई० ॥ ३ ॥

एक अटल वीर उदाई था, पोता जो श्रेणिक का ।
जिण पौषध व्रत को धर लीना, इम भारत० ॥ कई० ॥ ४ ॥
उसको छुरी से मारा था, एक धूर्त साधु ने ।
तन मन से व्रत को ना छोड़ा, इम भारत० ॥ कई० ॥ ५ ॥
खदकादि साधु पाचसो, पीले जो घाणी में ।
स्याद्वाद को छोड़ा नाहीं, इम भारत० ॥ कई० ॥ ६ ॥
कुरकट के प्राण बचाने को, मेतारज मुनिवरने ।
निज तनको स्वाहा कर दीना, इम भारत० ॥ कई० ॥ ७ ॥
शालेकी खाल उतरवा दी, जो खदक मुनिवर की ।
नाके मन उसने ना घाले, इम भारत० ॥ कई० ॥ ८ ॥
भारत माता की कीर्ति को, रोशन की पुरुषोंने ।
उनको मोहन मुनि ध्याते है, इम भारत० ॥ कई० ॥ ९ ॥

(४७)

औपदेशिक-सज्झाय ।

अर्जी सामलोने सिरकार०, ए राह—

जीवने मामतणी सगाई, धर्म पछिंच न गखे भाई ॥ टेर ॥
पिताज केरे पुत्र हमारो, माता मगल गाइ ।
बहेनज केरे भाई हमारो, मीठ पत्वा मग जाई रे ॥ जी० ॥ १ ॥

लीपियो गूंपियो आंगणे ताहरी, भुंई पथारी थाई ।
अलगा रहेसो आभडसोमां, लोक करे चतुराई ॥ जी० ॥ २ ॥

काका बाबा आवीने ऊभा, भेला थया छे भाई ।
काढ़ो काढ़ो सब कोई केवे, घड़िय न वेला थाई रे॥जी०॥३॥

वांदवृंदने बाहेर काढ्या, चार जणा लइ जाई ।
काष्ट अग्निमें जाय जलायो, जल बल ने राख थाई रे।।जी०।।४॥

घरकी नारी घड़िय न छोड़ती, अन्ते अलगी थाई ।
भोजो भगत कहे मुआं पछी तो, तुरत बीजा रे जाई।।जी०।।५॥

सदुपदेशी-सज्झाय ।

हिडा की राह—

शुद्ध देव गुरु सुमरण साधो, मनुज जमारो पायो रे ।
पापी पंथ में भवि मत पड़ज्यो,अवसर उत्तम आयो रे॥१॥

चतुरां सुणज्यो रे, चतुरां सुणज्यो मन थिर करज्यो,
सद्गुरु सरधा धरज्यो रे, च० ॥ टेर ॥

करमां रे वश उलटो बोले, धर्मना मर्म न जाणे रे ।
कुगुरु पर परा कुआ मांही, कुमति कपटी ताणे रे ।
॥ च० ॥ २ ॥

अतिमान ने रीस घणेरी, मनमे परणति खोटी रे।
हित उपदेश की वात न जाणे, जासी कुगति मोटी रे।
॥ च० ॥ ३ ॥

लोभे पेठो भरमे पड़ियो, निज सम जाणे न कोई रे।
कुपरिणामे कुगुरु सगे, अते थासी भोई रे।
॥ च० ॥ ४ ॥

सिरामण सुण अवली लेवे, राचे मिथ्या वाते रे।
केवली वचन परतीत न राखे, मरसी किलविष घाते रे।
॥ च० ॥ ५ ॥

रात दिवस रहे हिंसा करतो, पापे पिंड ते भरतो रे।
मारो थारो करतो प्राणी, चउगति माहे फिरतो रे।
॥ च० ॥ ६ ॥

काल अनादि वादे रीझ्यो, कुगुरु सहेली लारे रे।
गच्छतणी टाटी करी आड़ी, भवि पशु प्राणीने मारे रे।
॥ च० ॥ ७ ॥

आश्रव सिवन तणा अधिकारी, दृष्टि विषय मे राखी रे।
हिंसा मारग पुष्टि करके, भोलाने दिये फासी रे।
॥ च० ॥ ८ ॥

माता पिता अरु हाट हवेली, घरणी घर परिवारे रे।

स्वारथ सहुने लागे व्हालो, दुःख पड़ियां नहिं लारे रे।
॥ च० ॥ ९ ॥

जोवनियांरी मोजाँ जाणो, चार दिवसनी प्यारी रे।
आयु घटे तन नित छीजे, अंजलि-जल जिम हारी रे।
॥ च० ॥ १० ॥

दुनिया दौलत सहुने मरखी, लागे मनमें मीठी रे।
फल किंपाक तणा छे कडुआ, खासी जासी फीटी रे।
॥ च० ॥ ११ ॥

पूरव पुन्य पसाये प्राणी, पाम्या इण भव लीला रे।
सुकृत करणी जो नवि करसी, यम धरसी सीला रे।
॥ च० ॥ १२ ॥

भोगादिकना विषय छे विरुआ, मन जाणे नवि छूटे रे।
सुर नर केई भव में भमतां, काल गमायो केई पूठे रे।
॥ च० ॥ १३ ॥

तिण कारण ए सीख सुणीने, सद्गुरु संगत करणी रे।
कपट कतरणी खोटी मनरी, हियड़े नहीं धरणी रे।
॥ च० ॥ १४ ॥

ममता मांहे डूबा मानव, करणी खोटी करता रे।
कारण कारजने नहीं जाणे, मत गच्छान्तर धरता रे।
॥ च० ॥ १५ ॥

जिनमारग हे केवलि भाख्यो, आतम अरथी जाणे रे।
आणा सूरिराजेन्द्रनी माने, ते जिनमार्ग पिछाणे रे।
॥ च० ॥ १६ ॥

अनित्योपदेशक-सज्झाय।

राग-हींडा की—

चोरासीना फेरा फरतो, दुलहो नरभव पायो रे।
मोह माया मद जाल मे फसियो, फोगट जन्म गमायो रे॥ १ ॥
भविजन भूले मा, भविजन भूले मा, थे चिंतामणि सम नरभव-
पायो रे ॥ भ० ॥ टेर ॥
गरभावासनो दुखडो मोटो, जन्म समय तु भूल्यो रे।
वीरज रुधिरनो आहार करीने, ऊंधे मस्तक झूल्यो रे-
॥ भ० ॥ २ ॥
जन्म लियो जब मायाने वलगो, मींच मीटडो धायो रे।
बाधी मूठे आयो पापी, हाथ पसारी जायो रे-
॥ भ० ॥ ३ ॥
चार वरस ते बालपणा मे, खेलत खेल गमायो रे।
सोले शान न आवी तुजने, जोबन जोर मचायो रे-
॥ भ० ॥ ४ ॥
वीस पचवीस वरस मगरुरी, नारी रस ललचायो रे।

षटरस भोजन आहार करीने, सिणगारे गलचायो रे-
॥ भ० ॥ ५ ॥

तीस तरुणी धननो लोभी, चालीस चतुर कहायो रे।
पचासे पाको साठे थाको, सित्तरे शून्य सवायो रे-
॥ भ० ॥ ६ ॥

अस्सी अड़ीयो नेऊ नड़िया, रोगादिक दुःख चड़िया रे।
सो सुकृत करिया विन पापी, नरक निगोदे पड़िया रे-
॥ भ० ॥ ७ ॥

धन जोवन मद में तुं मातो, जातां काल न जोवे रे।
नारी निरुपम विषय लालच करी, फोगट जन्म विगोवे रे-
॥ भ० ॥ ८ ॥

माल मुलक सब राज खजाना, जातां वार न लागे रे।
मात पितादिक कुटुंब कबीला, अंत अवस्था त्यागे रे-
॥ भ० ॥ ९ ॥

आरंभ पाप करी तुं बहुलो, कवड़ी कवड़ी धन मेले रे।
सगा वाहला थई खाई जाशे, करी नागो लकड़ा ठेले रे-
॥ भ० ॥ १० ॥

स्वारथ कारण सहु सगा छे, विन स्वारथ करे ठागा रे।
पुन्य कारण तने पाछो ठेली, पाप करावण आगा रे-
॥ भ० ॥ ११ ॥

ज्या लगी देहडी दीपक दीसे, त्या लगी सगा सबधी रे।
देहडी दीपक लोप हुआ पछी, काया दुरजन गधी रे–
॥ म० ॥ १२ ॥

निज चपु पण ताहरो नहीं छे, तो कुण छे सुखकारी रे।
देहडी हसो उडी गया पछी, कुण रहारी कुण म्हारी रे–
॥ म० ॥ १३ ॥

शत्रु मित्र ते कुण छे जगमा, कुण छे केनो कोई रे।
अधरम–शत्रु धर्म–मित्र छे साचो, साचो ज्ञान सगाई रे–
॥ म० ॥ १४ ॥

झूठी काया झूठी माया, झूठो छे जग बको रे।
आखिर सहुने छोडी जावे, कुण राजा कुण रको रे–
॥ म० ॥ १५ ॥

आ ससार समुद्रने तरवा, जिण भगति छे नावा रे।
द्रव्य भाव जिन चरणनी सेवा, कर मुगति सुख पावा रे–
॥ म० ॥ १६ ॥

सर्व उपदेशनो सार ज एह छे, निज आतम उजवालो रे।
शील सतोष गगाजल निरमल, रत्नचन्द्र चरण पखालो रे–
॥ म० ॥ १७ ॥

श्रीगुरुगुण-गुंहली-संग्रहः ।

श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी की गुंहलियाँ।

वीर कहे रे गौतम सुणो०, ए राह—

वन्दो सूरिराजेन्द्रने, भावे भवि चित लाई रे।
प्रगट्या पंचम काल में, सुरमणि सुखदाई रे ॥ व० ॥ १ ॥

तात ऋषभदास जाणिये, माता केशरबाई रे।
भूमि भरतपुरे भला, जनम्या ओशवंश मांई रे ॥ व० ॥ २ ॥

रागी त्यागी संसारना, संजम रंग लगाई रे।
सूरिप्रमोद के संग में, विद्या पूरण पाई रे ॥ व० ॥ ३ ॥

अब्द पचीश जावरे, पदवी उत्कृष्ट पाई रे।
योग-पन्थ साधन भणी, करवा सुकृत कमाई रे ॥ व० ॥ ४ ॥

आणा श्री अरिहन्तनी, चाल्या शुद्ध आचारी रे।
सतरभेद संयम सदा, खप करता निरधारो रे ॥ व० ॥ ५ ॥

बाला ब्रह्मचारी थया, षट्कायक प्रतिपालो रे।
अंगे परिषह आकरा, जीत्या जग उजवालो रे ॥ व० ॥ ६ ॥

देता समकित दानने, श्रावक सदुपदेशो रे।
धर्ममार्ग जिण थिर किया, काटे सकल कलेशो रे ॥व०॥७॥
ओच्छव मोच्छव अति घणा, करता भवि उपकारो रे।
जिनशासन प्रभावना, अनेक देश मझारो रे ॥ व० ॥ ८ ॥
राजगढे रलियामणा, प्रेमठ स्वर्ग मझारी रे ॥
तसु शिष्य अमृत नितप्रति, चतुर वन्दो नर नारी रे ॥व०॥९॥

(२)

पन्थीड़ा सदेशो०, ए राह-

वन्दो गुरु राजेन्द्रसूरीश्वर माहेवा,
गुण छत्तीश विराजे जेहने अंग जो ॥
सारण-वारण-चोयण-पडिचोयण थकी,
देता शिक्षा शिष्योने मरांग जो ॥व० ॥ १ ॥
पंचाचार विचार निरतीपणे पालता,
टालता दोष दो चालीश लेता आहार जो।
धारी तप करता तिथि पंचे आदरी,
मानगुणे करी भारतीना भंडार जो ॥व०॥ २ ॥
उपगारी नर नारी हितकारी हुआ,
रचिया आगम ज्योतिष ग्रंथ अनेक जो।

उजमणादि ओच्छव महोच्छव अतिघणा,
अंजनशलाका प्रतिष्ठा सुविशेक जो ॥व०॥३॥

प्रबल प्रतापी पूरण पंचम काल में,
इन्दु सम उपकारी दिन शिणगार जो।
न्यायी नन्दन दशरथ दाख्या दीपता,
जितेन्द्रि जयकारी जगदाधार जो ॥व०॥४॥

सोहम तपगण नायक शोभा सुन्दरु,
सूरिवर तप में तेजपणे आदित जो।
उपकारी करुणा अमृतपे कीजिये,
दीजे दायक लायक शिवपद रीत जो ॥व०॥५॥

(३)

आज हंजारी ढोलो प्राहणो०, ए राह—

आज उमाहो मांने अतिघणो,आज वहुत आनन्दसखियां मोरी हे॥
गुणवन्त गुरुजी सांभल्या, आवंता आणंद ॥ स० ॥ १ ॥

वन्दो सूरिराजेन्द्रजी, उत्कृष्टा अणगार ॥ स० ॥
भूतल विचरंता भले, नितप्रत्ये उग्र विहार ॥स०॥वन्दो०॥२॥

छतीस गुणें करी शोभता, पंच महाव्रत धार ॥ स० ॥
मधुर धुनि दई देशना, करता भवि उपकार॥स०॥वन्दो॥ ३ ॥

षट्कायक प्रतिपालता, धरता ध्यान उदार ॥ स० ॥
आण सदा जिनराजनी, पालता खाडानी धार ॥स०॥ व०॥४॥
शासन श्री जिनराजनो, दीपावी चिहुं देश ॥ स० ॥
बाह्य अभ्यतर तप तपे, टालता सकल क्लेश ॥स०॥व०॥५॥
कान्ति समुज्ज्वल दीपती, निर्मल तेज अनन्त ॥ स० ॥
साचो सुवरण सोलमो, ज्ञानी गुणे गुणवन्त ॥स०॥वन्दो०॥६॥
आणा अगे ताहरी, दीजीये दरिसण देव ॥ स० ॥
करुणासागर कीजीये, अमृतने नितमेव ॥म०॥वन्दो०॥७॥

(४)

गोरल–ईश्वरजी केवे तो हमसे बोलनाजी०, ए राह–

चालो चालोनी ए सइया गुरुने वादशाजी ॥
आपे राजेन्द्रसूरि गुरुने वादशाजी ॥ टेर ॥

एतो भरतपुरी माही जनमिया जी, एतो ऋषभदास घर आया।
एतो केशर कूंखे जाया, इनको कुटुम्ब देख हरखाया ॥
एहवी आनन्द वधाई आपा गावशाजी ॥ चा० ॥ १ ॥

छोटीसी ऊमरम संयम आदर्यो जी, एतो दोष बियालीस टाले। स
एतो पचमहाव्रत पाले, एतो जिन आणा म चाले ॥
एवा छ कायाना पालक आपे वादशा जी ॥ चा० ॥२॥

गुरु मधुर धुनी देवे देशना जी, एतो अमृत रसनी धारा।
तिस्कों श्रवण करे संघ सारा, जिस्से होवे भव निस्तारा।
एहवा दयालु गुरुने आपे वांदशां जी ॥ चा० ॥ ३ ॥

एतो छत्तीश गुणं करी शोभता जी, एतो सोहम गण शिरताज।
एतो आचारज महाराज, है भवजल तारण जहाज।
एहवा प्रतापी गुरुने आपां वांदशां जी ॥ चा० ॥ ४ ॥

एतो गीतारथ गच्छना आधार छे जी, एतो ज्ञान गुणें करी भरिया।
इनसे घणा जीव उद्धरिया, एतो भवसागर से तरिया।
एहवा उपकारी गुरुने आपां वांदशां जी ॥ चा० ॥५॥

एहवा पंचम काले सुगुरु मिले भाग्यसुं जी,
ज्यांरी महिमा अपरंपारी, ज्यांरी तपस्धारी–
बलिहारी, ज्यांरा गुण गावे नर नारी।
एहवा वैरागी गुरुने आपां वांदशां जी ॥ चा० ॥ ६ ॥

नूतन कोप बणायो सबसे बड़ो जी, जिसमें सब शास्त्रों का सार।
कीनो जैनागम उद्धार, एहनी विद्यानो नहीं पार।
एहवा ज्ञानी गुरुने आपां वांदशां जी ॥ चा० ॥ ७ ॥

उगणीसें चौराशी चातुरमासमें जी, अमृतमुनिनें गुंहली बनाया।
गुरु गुण सबके मनमें भाया, सारा गाई गाई हरखाया।
एहवा राजगढ़ मांहे विराज्या ज्यांने वांदशां जी ॥ चा० ॥ ८ ॥

(५)

श्रीमद्विजयधनचन्द्रसूरिजी की गुहलियाँ।

माहरे पास जिणदजी से प्रीतडली तन मन से ला०, ए राह–

पचाचार विशुद्धा पाले, जिन आणा शिर धारी रे ।
शान्ति गुणे करी शम दम भरिया, चार कषाय निवारी रे ॥
माने दरिशण दीनो रे, गुणवन्ता छो ज्ञानी गुरुजी दरि०॥टेर॥
चउ शिक्षा सपत नित्य चारु, जारु विषय विकारी रे ॥
सतर भेद सयम रखवाली, बाला ब्रह्मचारी रे ॥ मा० ॥ २ ॥
त्यागी कष्ट ससारकी माया, काया झूठी यारी रे ।
द्विविध धर्म उपदेश करी, तारे हैं नर नारी रे॥ मा० ॥ ३ ॥
पचम काले पूर्ण प्रतापी, कल्पतरु सम दीपे रे ।
षट्काय के रखवाल गुरुजी, परिग्रह सबला जीपे रे ॥मा०४॥
सूरि विजयराजेन्द्र पटोधर, धनचन्द्रसूरि अवतारी रे ।
गुण छत्तीश पूरण यशधारी, वन्दे नर नारी रे ॥ मा० ॥५ ॥
जाणी सुखदायक तुझ मुद्रा, करुणा मोपे कीजो रे ।
अमृतशिष्य चतुर नित अरजी, मुजरे लीनो रे ॥ मा ॥ ६ ॥

---

(६)

राग–इन्द्रसभा दादरा—

गणधार सूरिराज आज विनति करुं।
सुधार मेरा काज आज ज्ञानको वरुं ॥ग०॥ १ ॥
कलिकाल कल्प माल भाल वाल हुँ चरन।
टुक देख निजर पेख लेख एक हुं करन॥ग०॥ २ ॥
त्याग रोग भोग योग ध्यान में मगन।
तत्पर तन्न मन धन लगी मो लगन ॥ ग०॥ ४ ॥
दुष्ट कर्म दूर चूर नूर चन्द्रज्युं।
प्रकाश भानु लिप्त गात्र दीप्ति इन्द्रज्युं ॥ ग०॥४॥
अपभ्रष्ट रिष्ट कलिष्ट क्रोध मोह को दम्यो,
स्याद्वाद धर्म भर्म कथित मर्म को गम्यो ॥ग०॥५॥
शुभ श्रेष्ट ज्येष्ट मिष्ट प्रेम प्रभुको भज्यो।
समृद्धि ब्रुद्धि रिद्धि सिद्धि भारती सज्यो ॥ग०॥६॥
सूरिराजेन्द्र पाट थाट वाट तो वहे।
धनचन्द्रसूरि इन्द वन्द हर्षतो महे ॥ ग० ॥ ७ ॥
कुकर्म जोर सोर दोर तोर से हरो।
संपूर्ण पूर्ण कुंभ अमृत ज्ञानसे भरो ॥ग०॥ ८ ॥

(७)

सुणी अलवेली ए वाणी०, ए राह-

वन्दो सोहम तप गणधार, भजि धनचन्द्र सूरि सुखकार ॥टेर॥
जनम किसनगढ भूमि ज्यारो, रिद्धिकरणजी तात ।
अचला जननी कुक्खे जाया, ओशवश विख्यात ॥वन्दो० ॥ १ ॥
सयम धारी भार महाव्रत, पालत पचाचार ।
पृथ्वीतल पावन विचरता, नित्यप्रते उग्र विहार ॥वन्दो० ॥२॥
द्वादश तप के धारक योगी, कारक मनशुध ध्यान ।
वारक कुमता कुटिला नारी, मारक मोह अज्ञान ॥ वन्दो ॥ ३ ॥
सन्त महागुणी सुन्दर कीर्ति, प्रसरी चिहु देश प्रभाव ॥
पद छत्रीश गुण शोभित निज अगे, तारण भवोदधि नाव॥व०॥४॥
कर्ता सुकर्म मर्म करी दूरे, चूरे सहु सन्ताप ।
मुनि अमृत चरणा नित चाहवे, कलिमल शनु काप ॥व०॥५॥

(८)

राग-भैरवी-बसे मोरे नयननमें०, ए राह-

सद्गुरु दर्श लह्योरी-हमारे माई सद्गुरु दर्श लह्योरी ॥ टेर ॥
रोम रोम आनन्द भयो मेरे, हर्षित प्रेम भयोरी ॥ हमारे० ॥१॥
कल्पतरु कलिकाल प्रभाकर, निरखित नयन हस्योरी ॥हमारे० २॥

१४

चन्द्र वदन अनुपम तनु कान्ति, झगमग ज्योति जग्योरी॥हमारे० ३॥
लब्धिनिधान प्रधान गुणाकर, अमृत पाय लग्योरी ॥हमारे०४॥

(९)

श्रीभूपेन्द्रसूरिजी की गुंहली ।

निन्दलड़ी वेरण हो रही०, ए राह—

वारि आज भले दिन ऊगियो, वर प्रगटी हो जिम निरमल गंग।
भाव अतुल करी भेटिया, शुद्ध संजम हो चढ़ते नित रंग—
॥ आ० ॥ १ ॥

महिमा निधि महियल करे, करुणा रस हो निज उग्र विहार ।
भवि मधुकर जिम मालती, नित लेवे हो निर्दोषी आहार
॥ आ० ॥ २ ॥

खान्ति अज्जव मद्दवा, जीत्या अंगे हो सघली उपमान ।
उपशम असि धारे करी, मायाँ मोहने हो वली क्रोध यवान—
॥ आ० ॥ ३ ॥

शील श्रृंगार अंगे सजी, तन भूषण हो तप जप अरु ज्ञान ।
भावे शुद्ध मन भावना, धरता नित हो शुक्ल धर्म ज ध्यान—
॥ आ० ॥ ४ ॥

अनुभव योगी ओपता, भोगी आतम हो गण धर्मधिराज ।

सूरिधनचन्द्र पटोधरु, भावे भेटया हो सूरिभूपेन्द्र आज–
॥ आ० ॥ ५ ॥

दई मधुर धुनि देशना, समजावे हो आगमना सार।
मुनि अमृत इणिपरे भणे, नित ऊठी हो वन्दो नरनार–
॥ आ० ॥ ६ ॥

(१०)

उपाध्याय श्रीमोहनविजयजी की गहुली

मत बांधो गठरिया, ए राह–

मुनिमोहन तुम्हारी यादी लगी, यादी लगी गुरु यादी० टेर
मधुरी मधुरी लगे तोरी नयना, नयना से यादी की भावठ भगी–
॥ मु० ॥ १ ॥

मनोहर सूरति बसी मन मोर, गो सूरती तुम्हारी से लगना लगी–
॥ मु० ॥ २ ॥

आप थे गुरु मेरा परम दयाला, तोरे दर्शन खातर अखिया तगी–
॥ मु० ॥ ३ ॥

सुन्दर सु गावे मोहन तुम्हारा, अमृतमुनि गुणों से मोरी प्यामा
भगी ॥ मु० ॥ ४ ॥

(११)

राग-पीलु ठुमरी.

भवोदधि बीच खड़ी मोरी नइया, पार उतारण तूं ही गुरु मेरा-टेर
वारी अथाग तृष्णा अधिकेरी, चक्रपतित लह्यो शरण में तेरा
॥ भ० ॥ १ ॥

अपथिन आप दिखाकर स्वामी, पूर्ण त्रिपद हर भव का फेरा
॥ भ० ॥ २ ॥

सामर्थ्य और नहीं इण कलियुग, सच्चे गुरु मनमोहन मेरा
॥ भ० ॥ ३ ॥

चिहुँ दिशि निर्मल प्रसरित द्युति, भास्कर ज्यां लग भूमि रहेरा
॥ भ० ॥ ४ ॥

सुधा चरण करत नित विनति, तुम हो दयानिधि संपत वरेरा
॥ भ० ॥ ५ ॥

(१२)

श्री विजययतीन्द्रसूरीश्वर-गुंहली

राग लावणी—

सूरिविजय-यतीन्द्र महाराज अरजी सुण मेरी,
दीजे मोय दरिशण आप, शरण हुं मैं तेरी ॥ टेर ॥

दरिशण की लगी मोय चाह-अति ही मोरे दिल में ।
तड़फे जिम जल बिन मीन, निन्द नहीं पल में ॥
कर करुणा नाथ कृपाल, बाल को जाणी ।
चित चाह हितकारी नित्य मित्त गुणखाणी ॥
आ अरजी उर धार ज्ञान गुण लहेरी ॥ दीजे० ॥ १ ॥

पालत पचाचार महाव्रत प्यारे,
तज काम क्रोध अरु लोभ को मारे ॥
जीतें परिषह बावीस विषय तजनारा ।
नित पाले जिनवर आण शीश धरनारा ॥
दई मधुर धुनि उपदेश, भविक हितकेरी ॥ दीजे० ॥ २ ॥

धरता नित निर्मल ध्यान, ज्ञान उपदेशी ।
करी लेश्या शुद्ध परिणाम कुमत का द्वेषी ॥
ग्रही सुमता मन शुद्ध भाव चालना तोरी ।
लही योग नालिका वाट हाथ मे दोरी ॥
पहुँचा पद पाठक आप हुई नहीं देरी ॥ दीजे० ॥ ३ ॥

किया सूत्र तत्त्व भंडार वात अनोखी ।
भावदया करुणा धार अरज सुण मोकी ॥
मै आयो तुम्हारे पास दास ऊधरजो ।
करु चरण तुम्हारी सेव, आपदा हरजो ॥
चतुर भणे नर नार, भावना भरी ॥ दीजे० ॥ ४ ॥

(१३)

राग—गरबी में

चालो हे साहेली हिलमिल गुरु गुण गावां ।
सुख संपत घर पावा हे लोल ।
विध विध जाति के पुष्प मंगावो, भर भर थाल वधावा
हे लोल ॥ चा० ॥ १ ॥

पंचम काले शुद्ध मारग चाले, ज्ञानी गुरु गुणवन्ता हे लोल ।
शील संतोषी वाला कुमति निगला, ज्ञानी मतवाला जग
सन्ता हे लोल ॥ चा० ॥ २ ॥

परम वैरागी त्यागी लवना लागी, जग उपकारी जयकारा हे लोल ।
गुण पच्चीस अंग रमता आतम रंगे, चंगे ब्रह्मव्रत धारा
हे लोल ॥ चा० ॥ ३ ॥

शीयल सोभागी वाला शमदम गुणरागी, तजिया विषय-
विकारा हे लोल ।
जगत उदासी भाषी वाणी सुधामय, भविजनता के निस्तारा
हे लोल ॥ चा० ॥ ४ ॥

सूरिपद धारी सुखकारी, यतीन्द्र विश्व विख्याता रे लोल ।
धर्म धुरंधर है जग ध्यानी, अमृत शिवसुख दाता हे लोल
॥ चा० ॥ ५ ॥

(१४)

अष्टकम्–सवैया–तेवीसा ।

सारदमात आधो सुरमात, वचन विख्यात दीजे वरदाई ।
ध्याउ गुरुदेव करु नित सेव, लहु सुखमय अखण्ड भलाई ॥
ज्ञानी गुणधीर हरे मम पीर, धरी जहु धीर नन्द्र सदाई ।
' सुन्दर ' प्रवीन ध्यानी लयलीन, तारे के दीन दुखी–
जग माई ॥ १ ॥

धाम धवलपुर खण्ड बुदेल, वसे तिहा श्रेष्टि सुगुन उजलाला ।
ताम गृहे सुगुणा शीलकान्ता के, चम्पादे कूख में रत्न निशाला ॥
गर्भपणे उपन्या इत आयके, पुण्य प्रभाव बधे गुणमाला ।
मास नये जनम्या सुत जा दिन, नाचत गावत भामिनी
बाला ॥ २ ॥

भ्रात दलीचन्द किशोरीलाल है, रम्भा भगिनी है सदा सुहाई ।
सवत चाली गुणीशय विक्रम, जन्म भयो सम रतन सुभाई ॥
बालपने शुभनन्दन पालित, अति उत्साह वध्यो दिन जाई ।
पाठित प्रेम लिया परिपूरण, रग वैराग रचे घट माई ॥ ३ ॥

जोवन आयु सदा वोहि चंचल, सध्या का रग बादल की छाया ।
मात पिता सुत भ्रात महोरग, फोगट फन्द में युही फसाया ॥

स्वार्थ जहां लग काज सरे सहु, करत आजीजी काम कमाया।
रेण तणा सुपनांतर जानत, एह संसार असार की माया॥ ४॥
अब्द गुणीसर चौपन मालव, सूरिराजेन्द्र की वाणी सुहाई।
उत्सव आनन्द हर्ष वध्यो मन, पुरि खाचरोद में दिक्ख दिलाई॥
पाठित सूरि राजेन्द्र के पास में, व्याकरण कोष काव्य पढ़ाई।
संवत पांच पचास आहोर में, योग किया वड़ी दिक्खने
पाई॥ ५॥

धार महाव्रत भार वहे नित, आण अखण्ड जिनेश्वर प्यारी।
नागर क्षमा के आगर हो शुद्ध, पन्थ निरंजन के ब्रह्मचारी॥
ज्ञानी घने दधि चोल समुज्ज्वल, निर्मल कीर्ति दिशो दिशि जारी।
पंचमकाल जितेन्द्रि प्रभाव, मुनियतीन्द्र जाउं बलिहारी॥ ६॥
ग्रन्थ कई अवलोकनतें करी, ग्रन्थ चालीश रचे सुखकारी।
कोष गुरु राजेन्द्र की आण से, संशोधक छपवा कर त्यारी॥
प्राकृत मागधी भाषा रचे कई, स्तोत्र स्तुति स्तवनादिक सारी।
पूजन भक्तिके गायन से प्रभु, नृत्य करे नित्य ही नर नारी॥७
शिष्य किये कई दिक्ख दिला कर, विद्या सागर सुप्रेम अपारी।
उत्सव हर्ष अट्टाइ सुचैत्य में, बिम्ब प्रतिष्ठित द्युति वधारी॥
मालव देश मरुधर गुर्जर, चौमास आनन्द रंग सुसारी।
अब्द अमी गुण मालव जावरा, पाठकपद पे आप विहारी॥८॥

चन्द्रवदन अनुपम शोभित, तेज दिनकर तप के धारी।
छोड गये गुरु मालव म कछु, मरुधर नाट जुवे नर नारी ॥
दायक ज्ञानी दया करुणाकर, कृपानिधि आप नडे निहारी।
चाह लगी मुझ प्यास जो अमृत, आश पूरो गुरु आप हमारी ॥९

(१५)

मुनिचतुरविजयस्वर्गारोहण-गुहली।

हा रे वाला ऊची नीचो सरवर पाल, जमाई धोवे धोतीयामी
मारा राज०, ए राह—

हाए महिया चतुरमुनिजीरा गुण गासा आपा भावसेनी
मारा राज ॥ टेर ॥

नहि मिले ऐसे मुनिराज, विनय भक्ति गुण घणानी मारा राज ॥१

हांए सहिया धन्य रानीबाइ मात, क्षमा रत्न लावियानी मारा राज।
हाए महिया तात चन्दानी रु धरम, उत्तम पुत्र आवियाजी
मारा राज ॥ २ ॥

हाए महिया उत्तम वश राठोड क, कुल दीपावियोजी मारा राज
हांए महिया मरुधर देशक माय, गाम चादणो सोभावियोनी
मारा राज ॥ ३ ॥

हाए महिया सूरिराजेन्द्रना शिष्य, अमृतमुनिनी आवियाजी
मारा राज।

हांए संहियां गुरुमुख सुणी मीठी वाणी, धर्म मनमें भावियाजी
मारा राज ॥ ४ ॥

हांए संहियां जाणी अथिर संसार के, गुरु साथे चालियाजी
मारा राज ।

हांए संहियां ज्ञान ध्यानमें ले लीन, वैराग मन वालियाजी
मारा राज ॥ ५ ॥

हांए संहियां ओगुणीसे एंसी साल, महा सुदि पांचम दिनेजी
मारा राज ।

हांए संहियां अमृतमुनिजी के पास, चारित्र लीधो भाव घनेजी
मारा राज ॥ ६ ॥

हांए संहियां कुकसी शहेर मझार, दीक्षा उत्सव खूब कियाजी
मारा राज ।

हांए संहियां चतुरविजयजी नाम, संघमें जाहिर कियाजी
मारा राज ॥ ७ ॥

हांए संहियां सोल वर्ष गुरु साथ, संजम पाली निरमलोजी
मारा राज ।

हांए संहियां छकायना प्रतिपालक, क्षमागुण में भलोजी
मारा राज ॥ ८ ॥

हाए सहिया भविजनने प्रतिबोध, सुद्ध धर्म देखावताजी मारा राज
हाए सहिया काची कायानो सरूप, देखी संतोष धारताजी
मारा राज ॥ ९ ॥
हाए सहिया ओगणींसे पचाणु वर्ष, आहोर नगर आवियाजी
मारा राज ।
हाए सहिया आषाढ सुद सातम सोमवार, चतुरमुनि परलोक
गयाजी मारा राज ॥ १० ॥
हाए सहिया कालकी गति कुटिल, किसीका जोर नहीं चलेजी
मारा राज ।
हाए सहिया धर्म ऊपर राखो प्रेम, अमृत कहे साथे वो चलेजी
मारा राज ॥ ११ ॥

मुनिअमृतगुणगान की गुँहलियाँ ।

(१)

प्रभुजी मोरी नईया पार लगा दे०, ए राह—

मनम के धारी मोरी मानो विनतिया ॥ टर ॥
क्षमा के सागर गुणनिधि आगर, त्यागी संसार के ॥मा० १॥
जीव जितेन्द्रिय योग के ध्यानी, त्यागी विकार के ॥मा० २ ॥
भवपारावार के हो तुम तारक, भक्त उद्धार के ॥मा० ३ ॥

संवर सुमता के रंग में भीना, ज्ञान प्रचारके ॥मां० ४ ॥

गायनसुधारस अमृत मुनि, आतम सुधारके ॥मा० ५ ॥

शिष्य सुन्दर लघु हेम पयंपे, गुण प्रभाकारके ॥मा० ६ ॥

(२)

राग केरवो—

पन्थिडा संदेशो कहिजो म्हारा नायने०, ए राह—

आज शुभोदय ऊग्यो महारे अंगणे,
वूठा अमिरस आनन्द मंगल मेह जो ।
महाव्रत धारी निर्ग्रंथ पन्थ निहालते,
उपनो अंगे रंगे अधिक सनेह जो ॥ १ ॥
भाव धरी मुनि अमृत रंगे भेटिया,
संगे रह्या मुनि युग समता अणगार जो ।
कुमता त्यागी परम वैरागी संजमी,
धरता निश्चल ध्यान ज्ञान भण्डार जो ॥ भाव० ॥ २ ॥
चतुर विचक्षण ललितविजय विनयी वडा,
गुरूभक्ति गुणवन्त करे शुद्ध सेव जो ।
चाले शमदम क्षान्ति गुणे करी सोहता,
धारी आण अखण्डित शिर नितमेव जो ॥भाव०॥३॥

गायन शान्ति सुधारस अमृत सम गिणो,
मधुर भाषे भविक प्रति उपदेश जो ।
जीत्या अंगे योध परिषह जोर से,
काम क्रोध माया नहीं मनमें लेश जो ॥भाव० ॥४॥

भाग्य खुले भवि डूडशी भावुक भक्त के,
अन्द चौराणु सोह जेह चौमास जो ।
वीरवाणी गुणखाणी मुनि वरसावता,
हर्षित जनता आतम अति उल्लास जो ॥भाव०॥५॥

सघ स्वधर्मी भक्ति विध विध साचवी,
करता नगर भावपूजन बहु प्यार जो ।
क्षेत्र फरसना मुनि शुद्ध करी उद्यागता,
श्रावक श्राविका उत्सुक भद्रक भावजो ॥भाव०॥६॥

पारस जिम परसे लोह कञ्चनपणुं,
पामे करता परिचय पूरण प्रेम जो ।
तिम गुरुहित उपदेशी श्रावक जे थया,
श्राद्ध करे नित चोरे पूरण नेम जो ॥ भाव० ॥ ७ ॥

सुन्दर चित चावे तुम संगत सादरे,
आदरे इणविध मंगल गुण नित गाय जो ॥भाव०॥८॥

(३)

राग केरवो—

चालो गुरु वन्दन को, ज्यांरी महिमा सुयश अपार
॥ चा० ॥ टेर ॥

संयम धरवर सुमता साहेली, कुमता से नहीं करे प्यार
॥ चा० ॥ १ ॥

विश्वविख्यात जगत हितकारी, पालत पंचाचार
॥ चा० ॥ २ ॥

आश्रव रोध विरोधी कषाय के, मोह ममता तजनार
॥ चा० ॥ ३ ॥

कोमल वैन सुभाषित कोकिल, पान भविक करनार
॥ चा० ॥ ४ ॥

मान मायाका परम विद्वेषी, लेश्या शुद्ध विचार
॥ चा० ॥ ५ ॥

नयर आकोली चौमास विराजे, अमृतमुनि अणगार
॥ चा० ॥ ६ ॥

शिष्य चतुर मुनि आप सगाते, वन्दे नित नर नार ॥ चा० ॥ ७ ॥

जैन जैनेतर आव्रत दर्शन, रगे हर्ष अपार ॥ चा० ॥ ८ ॥

सुन्दर कहत सुनो भवि प्यारे, नमता जय जयकार ॥ चा० ॥ ९ ॥

(४)

महारी विनतडी अवधारो स्वामी श्रीमधरा०, ए राह–

पृथ्वीतल पावन निचरन्ता, अत्युत्तम अणगार ।
निर्भय नाम सुण्यो निष्कपटी, निर्ममता के शिरदार ॥ १ ॥
सुणी सेवकनी अरदास गुरुनी, दरिशण दो महाराज ॥ टेर ॥
सुरमणि सम गुण उदधि भरिया, वरिया ज्ञान विशेष ।
तृष्णा दुरित निकन्दन तूही, टाले सकल क्लेश ॥ सु० ॥२॥
कर्म निकन्दन तप के धारी, जीत्या वेद कषाय ।
मत्सर अष्ट किया मद दूरे, सत्तर सहु सुखदाय ॥ सु० ॥ ३ ॥
उत्पत्ति शिवपन्थ साधन अगे, योगारम्भ सहाय ।
त्यागे दोष दोष सग लेके, ध्यावे त्रिभुवन राय ॥ सु० ॥४॥
जगदानन्द भक्तके पियर, जन वल्लभ जग भाय ।
जगदानी ध्यानी तुझ मुद्रा, दीठा आवे दाय ॥ सु० ॥ ५ ॥

चातक जिम घन चाहत निशदिन, पूरण प्रेम प्रभाव ।
आनन्द अन्तर उर तुझ दरिशन, मुझ मन लगी उछाव ॥सु०॥६॥

कुसुद इन्दु अन्तर जिम प्रीति, पय जिम नीर प्रवेश ।
तिम तुझ प्रेम लगी निज दोरी, अन्तर प्रीति हमेश ॥सु०॥७॥

दायक नाण पदारथ दीजे, हर्षित प्रेम अंकूर ।
सुन्दर अमृत सेती नासे, विघटित वेदन दूर ॥ सु० ॥ ८ ॥

(५)

झट जावो चन्दन हार लावो०, ए राह—

भवि आवो अमृत गुण गावो, अतुल सुख पावाने ।
लीजे लहावो मुनीश्वर ध्यावो, मधुर फल खावाने ॥ टेर ॥

अनुपम अमृत मूरती, दर्शित हर्ष हमेश ।
पूर्ण प्रेम अमृत भर्यो, चाखो भवि सुविशेपरे ॥ म०भ०॥१॥

अमृत सम औषधि नहीं, जगमें जोतां जरूर ।
कर्म रोग कटते सहु, विषम होवे विप दूर रे ॥ म०भ० ॥ २ ॥

भाग्य प्रवल पुन्ये लह्यो, वृन्द अमृत एक वार ।
ज्युं लोह पारस प्रसंग सें, कंचन करे तिणवार रे ॥म० भ०॥३

आज आकोली नयर में, शुभ दिन ऊगो भाण ।
'मिल्या अमृत मुनिवरू, दीठुं दरिशण गुणखाण रे ॥म० भ०॥४॥

उपगारी जगमें अति, सूरि धर्मचन्द्र महाराज ।
ज्ञान दान दायक तूही, सारे वंछित काज रे॥ म. भ० ॥ ५ ॥
सुन्दर समरण ध्यान में, पामी तास पसाय ।
वार वार करु विनति, लागी लुली लुली पाय रे ॥ म०भ० । ६॥

(६)

आज निहेजो रे दीसे नाहलो०, ए राह–

आज सहेली सुरग वधामणा, दीठा मुनिवर नेन ।
अमूलक ओघो रे दीसे दीपतो, भाषे मधुरी रे वेन ॥आ०॥१॥
पाये अलवाणा रे परिषह जीतता, करता आश्रव त्याग ।
षटकायानी रे टाले विराधना, सुमता रस एक लाग ॥आ०॥२॥
कुमता टाली रे सुमता सगमें, धरता निर्मल ध्यान ।
शुद्ध उपदेशी दाखे धर्मने, आगम सूत्र वखाण ॥ आ० ॥ २ ॥
पर उपगारी जग मे केवडो, महके सुगन्ध अपार ।
आगम वयणे सूत्र सिद्धांतना, करता अर्थ विचार ॥आ०॥४॥
सद्गुरु भक्ति सेवा साचवे, अमृत नित उदार
करुणा रसभर चतुर गुणे निलो, भगवीश गुण भंडार ॥आ०॥५॥
नयर आकोली चातुरमासमे, सवंत त्राणुये मार ।
आदि जिणिंदजी सेवा साचवी, सुन्दर नित नर नार ॥आ०६॥

१५

(७)

शकर मोही रह्यो पाडा मे०, ए राह–

निरख्या नयनानन्दन कारी, मुनिवर अमृतविजय महाराज ॥
तोरे चरण कमल बलिहारी, मुनिवर अमृतविजय० ॥ टेर ॥
ईक्षण आतुर निरखित नीकी, मुद्रा अति मनुहार ।
चन्द्र पूनम ज्युं मुखडु सोहे, मोहे सकल नर नार ॥आ०॥१॥
पालत पंचाचार विशुद्धा, खट्काय रक्षणहार ।
महाव्रत धार मार कुमता को, सुमतामें चलणार ॥ नि०॥२॥
सतरभेद संयम के धोरी, जिन आणा स्वीकार ।
सगवीश गुण शुभ शोभित अंगे, रंगे अति रमणार ॥ नि०॥ ३ ॥
शील समूह भूषण तनु अंगे, नव वाडों निरधार ।
शिवपन्थ साधन उत्पत्ति सागे, करता उग्र विहार ॥नि० ॥४॥
भव्य सुबोधक कषाय क रोधक, शोधन शुभमति धार ।
अमृत मय उपदेश दई करे, जगजीवन के उपगार ॥ नि०॥५॥
शिष्य चतुरमुनि करे नित सेवा, लेवा लीला पार ।
देवा ज्ञान अमूलक दीजे, भारती ज्युं भंडार ॥ नि० ॥ ६ ॥
पुण्यदशा प्रगटी जनयोगे, नयर आकोली मझार ।
त्राणुं अब्द वासर निज वासे, नित वन्दत नर नार ॥नि०॥७॥

सूरिराजेन्द्र मोहन पाठक, अमृत के आधार।
नभ तृतीया उज्ज्वल दिन सुन्दर, वन्दे वार वार॥ नि० ॥८॥

(८)

श्रावक ऋषभचन्द्र कृत गुहलियाँ।

देखो ए मोटी सखीया मनोहर०, ए राह–

वन्दो रे अमृत मुनि सुखकारी, भवि हितकारी।
मनडाने मारी आतमवश करी ॥ मुनिवर वन्दो रे॥ १ ॥

वन्दो रे जिन आणा धारी, मिथ्यात्व निवारी।
पर उपगारी भवि जीवोतणा ॥ मुनिवर० ॥ २ ॥

वन्दो रे मुनि उग्र विहारी, पाप निवारी।
इर्या समारी चाले देखने ॥ मुनिवर० ॥ ३ ॥

वन्दो रे वीर वचन धारी, सूत्रागम धारी।
भव निस्तारी केई तर्या ॥ मुनिवर० ॥ ४ ॥

वन्दो रे पच महाव्रत धारी, ज्यारी महिमा भारी।
घणा जीवाने तारी दई उपदेशने ॥ मुनिवर० ॥ ५॥

वन्दो रे राजेन्द्रसूरि अवतारी, पच महाव्रत धारी।
गुणारा भंडारी, दूषण टाली लेवे आहार ने ॥ मुनि० ६॥

वन्दो रे अमृत मुनि अणगारी, नमो नर नारी।
आनन्दकारी गुंहली गाव ने ॥ मुनिवर० ॥ ७ ॥

वन्दो रे रखवचन्द सेवा कारी, कर जोड़े वारी,
वन्दना हमारी नित्य होय ने ॥ मुनिवर० ॥ ८ ॥

(९)

सखी री योग युगती हिवे जागी रे०, ए राह-

मुनिवर अमृतना गुण गावुं रे, में तो निशदिन भावना भावुं ॥ मु०

तोरे मुखड़ारी मीठी वाणी रे, महारे दिलड़ा में साची जाणी रे।
प्रतिबोध रह्या भवि प्राणी ॥ मु० ॥ १ ॥

देश मरुधर मनोहर जाणो रे, क्षत्रीवंश में जनम वखाणो रे।
धन्य गांव को नाम सरांणो ॥ मु० ॥ २ ॥

थांरा अचलसिंहजी तात रे, समेल जांमत दोनुं भ्रात रे।
थांरी किसनादे बाई मात ॥ मु० ॥ ३ ॥

बालपणामें दया पाली रे, धरी वैरागे मन वाली रे।
मोह माया कुटुम्ब की टाली ॥ मु० ॥ ४ ॥

ओगुणी गुणसठ वर्षे रे, सुदि अषाढ़ पंचमी दिवसे रे।
लियो चारित्र मन बहु हर्षे ॥ मु० ॥ ५ ॥

लघु शिष्य चतुरमुनि सारा रे, महु सबने लागे छे प्यारा रे।
गुरु भक्ति विनय करनारा ॥ मु० ॥ ६ ॥

लघु दीक्षा मोहन हाथे रे, वड़ी दीक्षा राजेन्द्रनी साथे रे।
शुद्ध सयम रग रमावे ॥ मु० ॥ ७ ॥

शुद्ध महाव्रत पच ही पाले रे, चाले इर्या समिति सभाले रे।
गुरु गच्छ मर्यादा हाले ॥ मु० ॥ ८ ॥

उगणीसे व्याशी आवे रे, राजपुर सघ विनति भावे रे।
चोमासे आनन्द वरसावे ॥ मु० ॥ ९ ॥

गुरु राजेन्द्रसूरिजी राया रे, मुनि अमृतना वन्दू पाया रे।
एम रिषभचन्द्र गुण गाया ॥ मु० ॥ १० ॥

(१०)

कहो रसियाजी थाने किण विलमाया०, ए राह–

अमृत मुनिजी का दरिशण पाया,
दरिसन से सब अति हुलसाया
धन्य उदय हुआ भाग हमारा,
पुण्य योगे पाया गुरु प्यारा ॥ कां० ॥ १ ॥
काई रे अरज करूं मुनिवरजी ॥ टेर ॥

नानी मोटी मिल अमृत गावे,
सुणी सुणी मारो हीयड़ो हरखे ।
नित्य उठी गुरु ना दरिशन चाहुं,
तो मनोरथ सदा सुख पाउं ॥ कां० ॥ २ ॥

जनमभूमि छे मारा सवांनी,
[illegible] देखी गोरी माय [illegible] ॥
मुखमुद्रा अति सुन्दर सोहे,
देखता सुरनरां आनन्द मोहे ॥ कां० ॥ ३ ॥

उगणीसो [illegible] आया,
[illegible] नगर चोमासो ठाया ॥
हरिचन्द्रनी आज्ञा धारी,
चाले अमृत मुनिजी सारी ॥ कां० ॥ ४ ॥

[illegible]चन्द कहे गुरु गुण गाउं,
नित प्रति गुरु तोरी सेवा में चाहूं ॥
दास जाणीने दरिशण दीजो,
सेवकनी या अरजी लीजो ॥ कां० ॥ ५ ॥

(२६)

राग मांड—

गुरू अमृत तारी, मूर्ति प्यारी, छे मनुहारी—देख्यां दिल हर्षाय ॥

सेवक मन सारी, लागे प्यारी, जाऊ वलिहारी, आनन्द–
अधिको थाय ॥ टेर ॥

बहुत दिनो से दर्शन की थी, आश मुझे महाराज ।
पुन्ययोगे गुरू आप पधारे, फलिया मनोरथ आज जी–
॥ गुरू० ॥ १ ॥

दोप नियालीश दूर करी मुनि, लेनो सूजतो आहार ।
पच महाव्रत शुद्धा पालो, सजम सतर प्रकार जी–
॥ गुरू० ॥ २ ॥

जन्मभूमि है गाम सराणे, किमना देनी है मात ।
भाई बडे समेलसिंघजी, अचलसिंहजी तात जी–
॥ गुरू० ॥ ३ ॥

लघु वयमें गुरु दीक्षा लीनी, निज आतम के काज ।
चरण तुम्हारी सेवा चाहु, दीजीये गरीबनिवाज जी
॥ गुरू० ॥ ४ ॥

देशना आपकी छे मुनि प्यारी, सुणता हर्ष अपार ।
राजेन्द्र गुरू की आणमें चाले, अमृत मुनि अणगार जी–
॥ गुरू० ॥ ५ ॥

सवत गुणी साल पिच्यासी, गुहली करी तईयार ।

नयर कड़ोद में श्रावण मासे, बीज भृगु शुभ वार जी-
॥ गुरू० ॥ ६ ॥

रिषभचन्द चरणां को चाकर, अरज करे कर जोड़ ।
दास जाणी मोय महेर करो गुरु, दीजीये शिव सुख ठोड़ जी-
॥ गुरू० ॥ ७ ॥

(२६)

वणजारा की राह-

सुणो साधर्मी भाई, गुरु अमृत मुनि सुखदाई ॥ टेर ॥

लघुवय दीक्षा धारी, कुमता त्यागी नारी जी ।
जाकी जग में कीर्ति सवाई ॥ गुरु अमृत० ॥ १ ॥

मुनिराज पाटपे सोहे, नर नारी मन मोहे जी ।
दिल आनन्द अति हर्षाई ॥ गुरु अमृत० ॥ २ ॥

धन्य चतुरमुनि मन वसिया, एतो शिवसुखना है रसिया जी ।
है विद्या अभ्यासिक चाई ॥ गुरु अमृत० ॥ ३ ॥

सहु जन तुझ दरिशण आवे, मनवंछित फल पावे जी ।
सहु पाप दूर भग जाई ॥ गुरु अमृत० ॥ ४ ॥

गुरु छो गुण के भण्डारी, सहु जीवन के उपकारी जी ।
मैं शरण तुम्हारी पाई ॥ गुरु अमृत० ॥ ५ ॥

गुरु वाणी अमृत वरपे, सुणी सहु मन हरपे जी ।
धारा नयर चौमासो ठाई ॥ गुरु अमृत० ॥ ६ ॥
साल उगणी छ्यासी ध्याउ, भवि रिषभचन्द्र गुण गाउ जी ।
मुझे समकित दान दिलाई ॥ गुरु अमृत० ॥ ७ ॥

(२७)

म्हारे वहाला ऊंचो नीची सरवरियारी पाल०, ए-राह-

हाए-सैया सद्गुरु देवे उपदेश,सुणोने भवि भावसु जी मारा राज।
हाए-सैया आनन्द वधाई आज, ज्ञानी गुण गावसु जी-मा ॥१॥
हा०-सूरिराजेन्द्रना शिष्य, अमृतमुनि आवीया जी-मा० ।
हा०-साथे चतुरमुनि शिष्य, भविक मन भावियाजी मा० ॥२॥
हा०-मीठी अमिय समान, सुणता सुख उपजे जी-मा० ।
हा०-काटे कलिमल दूर,सवी सुख साजे जी ॥ मा० ॥ ३ ॥
हा०-पाले पचाचार, महाव्रत शुद्ध भावसु जी-मा० ।
हा०-क्षमा गुणे रहा धीर, वन्दणने जावसु जी ॥मा० ॥४॥
हा०-वन्दतां पातिक जाय, अनादि केइ कालना जी-मा० ।।
हा०-गुरु विन ज्ञान न होय, उपकारी महाबालनाजी॥मा० ५।
हा०-कुक्षी नयर मझार, गुणी से नेऊ वरस म जी-मा०।
हा०-रिषभचन्द गुण गाय, सुयश घणा हर्ष मे जी ।मा०॥६।

(२८)

मेरे मौला बोलालो मदिने मुझे०, ए राह–

मेरे गुरुजी आ विनती सुनाता तुझे ॥
अपने चरणोंका दास बनालो मुझे ॥ टेर ॥

अर्ज यही है दासकी, गुरुराज चित्तमें धारियो ।
कृपाकरी इस दास पर, भव सायरथी तारियो ॥
जिन धर्मका मर्म बतादो मुझे ॥ मेरे गुरु० ॥ १ ॥

आशा मुझे यही लग रही, गुरुराजकी सेवा करुं ।
आप की कृपासे मैं, संसारसागर से तरुं ॥
सीधा मुक्तिका मार्ग बतादो मुझे ॥ मेरे गुरुजी० ॥२॥

लक्ष चौराशी योनि में, ये जीव तो रुलता फिरा ।
तुम विना गुरूराज आज, पहेली नांही तिरा ॥
डूबी जावे है नाव तिरादो मुझे ॥ मेरे गुरुजी० ॥ ३

रिषबचन्द की विनती, राजेन्द्रसूरिजी आप से ।
सहु विघ्न मेरा दूर हो, अमृतमुनि परतापसे ॥
शुभ पन्थकी राह बतादो मुझे ॥ मेरे गुरुजी ॥ ४॥

(२९)

मजा देते हैं क्या यार०, ए राह—

गुरु अमृतविजय महाराज, पाप सब दूर हटानेवाले ॥ टेर ॥

जाणी ससार असार, छोडा सकल परिवार ।
लिया पच महाव्रत धार, मार्ग शुद्ध बतानेवाले ॥ गुरु० ॥ १ ॥

बैठे सभा मझार, उपदेश देवे अणगार ।
भविजनके हितकार, जिनवाणी सुनानेवाले ॥ गुरु० ॥ २ ॥

चलते क्रिया शुद्ध, करे अष्ट रिपु से युद्ध ।
राखी गुरु आण मे बुद्ध, राजेन्द्र शीस कहानेवाले ॥गुरु०॥ ३ ॥

छोडे कुमता जाल, गले सुमति शैली डाल ।
जपते जिनवर की जपमाल, भविजन दिल लोभानेवाले ॥गुरु०॥४॥

उगणी पिच्यासी वर्षे, श्रावण मास मल हर्षे ।
सुदि पक्ष पचम दरशे, मथुरालाल गुण गानेवाले गुरु० ॥ ५ ॥

(३०)

लावणी बहेर—

श्री अमृतविजयजी मुनि बालब्रह्मचारी,
महाराज तुम्हारा गुण मैं गाउ जी,
जोडी दोनो हाथ चरण मे शीश नमाउ जी ॥ टेर ॥

गुरु विहार करता कडोद नयर पधार,
महाराज सभी श्रावक हरपाया जी,
धन्य हमारे भाग गुरु चोमासा ठाया जी ॥

इस खेडाका उद्धार किया मुनिवरने,
महाराज ऊनोंकी वाणी मीठी जी,
मूर्ति मनोहर गुरुराजकी प्रत्यक्ष दीठीजी ॥

चोक—घर घर करते गोचरी, मुनि लेते शुद्ध आहारजी ।
देते सत्य उपदेश सुनते, सभी नर नार जी ॥
दोप त्रियालीस टालते, पंच महाव्रत धार जी ।
सतर प्रकारे संजम साधे, करते उग्र विहार जी ॥

मिलाप—व्याख्यान में अर्थदीपिका फरमाते ।
महाराज कहाँतक करुं बयाना जी ॥
विक्रमचरित्र रसिक गुरुराज सुनाया जी ।
लघु वयमें आप दीक्षा लीधी ॥
महाराज कर्म को दूर हटाया जी ।
धर्म पर कटिबद्ध होकर के लय लगाया जी ॥
क्षत्रिय वंश में जनम लिया गुरुराजे ।
महाराज वैराग का रंग लगाया जी ॥
छोड़ा सब परिवार गुरु संजम चित लाया जी—
॥ श्री अ० ॥ २ ॥

चोक—जन्मभूमि गाम सरांणे, किसना देवी माता जी ।

धन्य जननी जनमिया, प्रगटे पुन्य प्रतापा जी ॥
आना गुरु राजेन्द्र की, शिर पर सदा धार जी ।
धन्य माता आपकी जाके, कूखे लिया अवतार जी ॥

मिलाप–अचलसिंघजी पिता बड़े पुण्यशाली–
महाराज सेमलसिंघ भ्रात कहाया जी ।
तिन घर प्रगटे आप आपका पुण्य सवाया जी ॥

उगणीसे पिच्यामी साल मन भाया,
महाराज सभा के बीच सुनाया जी ।
कहा तक करु अरदाश, गुरु का पार न पायाजी ॥

विजयचन्द्र विनय करे कर जोड़ी ।
महाराज आपकी सेवा चाहुजी ।
जोड़ी दोनों हाथ चरण मे शीश नमाउं जी–
॥ श्री अमृत० ॥ ३ ॥



विषयानुक्रमणिका ।

(चैत्यवन्दन-संग्रह)

(श्रीजिनेन्द्रस्तुति-संग्रह)

(स्तवन–संग्रह)

(सज्झाय–सग्रह)

(श्रीगुरुगुण-गुंहली-संग्रहः)



सहायक सद्गृहस्थों की शुभ नामावलि

५१) शा० जमाजी ताराचंदजी कस्तुरजी	भैंसवाड़ा
३१) शा० मालचंद केसरीमल छगमाजी	बागरा
२५) शा० पूनमचंद धमनाजी	"
२५) शा० हीराचंद शिवराज जेताजी	"
२०) शा० देवीचंद राजाजी पलीवाली	"
१०) शा० पूनमचंद लखमीचंद पेमाजी	"
११) शा० अमृतमल चेनाजी अमरसिंगजी	"
११) शा० हीमतमल चेनाजी	"
११) शा० पेसाजी हिन्दुजी	"
११) शा० नथमल जयाजी	"
११) शा० वरदीचंद लखमाजी	"
११) शा० हीराचंद धमनाजी	"
११) शा० ताराचंद अमेरचंद मरूपाजी	"
११) शा० नथमल भाणाजी	"
११) शा० नथमल मालीजी धीठाजी	"
११) शा० मावलचंद जुहारमलजी	"
११) शा० पदमाजी मदाजी	"
११) शा० गेनाजी पमाजी	"
७) शा० अमृतमल कस्तुरजी	"
६) शा० मंगलाल सूराजी	"
५) शा० भीमाजी अमीचंदजी	"
६) शा० मिश्रमल पूनमाजी	"
०) शा० अचलाजी रुगनाथ माताजी	"
६) शा० गुमानी जेठाजी	"
४१) मारनिम-श्रीसंघ	"